मंजरी 7

मंजरी
7

पाठ 1

जागो जीवन के प्रभात

(प्रस्तुत कविता एक जागरण गीत है। इसमें अज्ञान और अन्धकार को मिटाकर कार्य करने की प्रेरणा दी गयी है।)

अब जागो जीवन के प्रभात!

वसुधा पर ओस बने बिखरे

हिमकन आँसू जो क्षोभ-भरे

उषा बटोरती अरुण गात।

अब जागो जीवन के प्रभात !

तम-नयनों की ताराएँ सब

मुँद रही किरण दल में हैं अब

चल रहा सुखद यह मलय-वात

अब जागो जीवन के प्रभात!

रजनी की लाज समेटो तो

कलरव से उठ कर भेंटो तो,

अरुणांचल में चल रही बात

अब जागो जीवन के प्रभात !

- जयशंकर प्रसाद

हिन्दी छायावादी युग के प्रमुख साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी सन् 1889 ई0 को वाराणसी में हुआ था। प्रसाद जी की स्कूली शिक्षा कक्षा 8 तक ही हुई थी, परन्तु घर पर रहकर इन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत आदि भाषाओं का अध्ययन किया। पन्द्रह वर्ष की अवस्था से ही इन्होंने काव्य-रचना आरम्भ कर दी थी। प्रसाद जी श्रेष्ठ कवि, कहानीकार, उपन्यासकार और नाटककार थे। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं: 'लहर', 'झरना', 'आँसू', 'प्रेम पथिक', 'कानन-कुसुम', 'कामायनी' (महाकाव्य)। इनका निधन 14 जनवरी सन् 1937 ई0 को हो गया।

शब्दार्थ

प्रभात = सवेरा (चेतना और जागरण के लिए कविता में प्रयुक्त है)। वसुधा = पृथ्वी। हिमकन = बर्फ के कण, ओस। क्षोभ = दु:ख। अरुण गात = लालिमायुक्त शरीर। तम-

नयनों की ताराएं = अन्धकार के नेत्र रूपी तारे। किरण-दल = किरणों का समूह। मलय-वात = शीतल, मन्द एवं सुगन्धित हवा। रजनी = रात। कलरव = पक्षियों का चहचहाना (कविता में इसे जागरण के अर्थ में लिया गया है)। अरुणांचल = पूर्वदिशा। चल रही बात = चर्चा हो रही है।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

(i) सुबह सूर्योदय से थोड़ा पहले अपने घर के बाहर अथवा छत पर खड़े होकर पूर्व दिशा के एक-एक दृश्य को बारीकी से देखिए और -

(क) देखे गये दृश्यों के बारे में अपनी पुस्तिका में लिखिए।

(ख) देखे गये दृश्यों का चित्र बनाइए।

(ii) प्रातः काल वर्णन संबंधी कम से कम दो कविताओं का संकलन कीजिए।

विचार और कल्पना

1. यह कविता उस समय लिखी गई थी जब देश आजादी की लड़ाई लड़ रहा था। हम गुलामी के अंधकार से आजादी के सुनहरे सवेरे की ओर बढ़ रहे थे। बताइए, उस समय देश की स्थिति क्या रही होगी ?

2. प्रातः काल पशुपालक अपने पशुओं को चारा खिलाते हैं। इसी तरह निम्नांकित के द्वारा प्रातः काल किये जाने वाले कार्यों के विषय में लिखिए-

(क) विद्यार्थी

(ख) माँ

(ग) दुकानदार

(घ) पक्षी

(ङ) आप

कविता से

1. कविता में जीवन का जो सन्देश छिपा हुआ है, दिये गये विकल्पों में से उसे छाँटिए-

(क) सूर्योदय के लिए।

(ख) जीवन में नयी आशा का संचार करने के लिए।

(ग) मलय-वात का आनन्द लेने के लिए।

2. कवि ने प्रातः काल पृथ्वी पर फैले ओस कणों को क्या कहा है ?

3. उषा द्वारा ओस बटोरने का क्या आशय है ?

4. भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) चल रहा सुखद यह मलय-वात।

(ख) कलरव से उठकर भेंटो तो।

5. 'रजनी की लाज' को स्पष्ट करने के लिए नीचे चार अर्थ दिये गये हैं, इनमें से सही अर्थ छाँटकर लिखिए-

(क) अन्धकार (ख) शर्म

(ग) दुःख (घ) आलस्य

भाषा की बात

कविता की दो पंक्तियों को पढ़िए-

(क) चल रहा सुखद यह मलय-वात

(ख) अरुणांचल में चल रही बात

उपर्युक्त पंक्तियों में आए शब्द 'वात' और 'बात' का अर्थ वाक्य प्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए।

अर्थ वाक्य प्रयोग

वात ....

बात ....

(ग) अरुण+अंचल के योग से 'अरुणांचल' शब्द बना है। इसी तरह नीचे लिखे गये शब्दों में 'अंचल' शब्द जोड़कर लिखिए-

हिम, उत्तर, पूर्व, सोन, कोयला, नीला।

पढ़ने के लिए

देश हमें देता है सब कुछ,

हम भी तो कुछ देना सीखें,

सूरज हमें रोशनी देता,

हवा नया जीवन देती है

भूख मिटाने को हम सबको,

धरती पर होती खेती है।

औरों का भी हित हो जिसमें

हम ऐसा कुछ करना सीखें।

पथिकों को जलती दोपहर में

पेड़ सदा देते हैं छाया

खुशबू भरे फूल देते हैं

हमको नव फूलों की माला

त्यागी तरुओं के जीवन से

हम भी तो कुछ जीना सीखें।

जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ाएँ

जो चुप हैं उनको वाणी दें

जो पिछड़ा है उसे बढ़ाएँ

प्यासी मिट्टी को पानी दें।

हम मेहनत के दीप जलाकर

नया उजाला करना सीखें।

-गोपालकृष्ण कौल

शिक्षण संकेत

ऊपर लिखी गई कविता का छात्रों से वाचन कराएँ।

इसे भी जानें-

‘जय जवान जय किसान’ का नारा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने दिया था।

पाठ 2

4NUF78

राजधर्म

(महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व शाक्य गणराज्य में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। जातक कथाओं में बोधिसत्त्व के नाम से विभिन्न रूपों में उनके पूर्व जन्मों का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत पाठ 'राजधर्म' में ऐसी ही एक जातक कथा दी जा रही है। इस कथा में बताया गया है कि किसी राज्य का राजा जैसा आचरण करता है उसका प्रभाव उस राज्य की प्रजा के साथ सम्पूर्ण पर्यावरण पर भी पड़ता है।)

ब्रह्मदत्त विवेकशील राजा था। वह सत्यासत्य, उचित-अनुचित का सदा ध्यान रखता था। वह ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ता था, जो उसके दोषों को बता सके। प्रशंसा करने वाले तो सभी थे, दोष बताने वाला कोई नहीं मिलता था। अन्तःपुर, राजदरबार, नगर, नगर के बाहर सभी जगह लोग राजा के गुणों का बखान करते थे, पर उसके अवगुण बताने वाला कोई नहीं था।

राजा ने सोचा कि जनपद में कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय, जो उसके दोष बता सके। अतः वेश बदलकर वह पूरे जनपद में घूमा, पर वहाँ भी उसे अपना गुण ही सुनने को मिला, दोष नहीं, फिर वह घूमता हुआ हिमालय प्रदेश पहुँचा। घने जंगलों और दुर्गम पर्वतों को पार करता हुआ वह सुरम्य हिमालय प्रदेश में स्थित बोधिसत्त्व के आश्रम पर जा पहुँचा। उसने उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। बोधिसत्त्व ने राजा का कुशल क्षेम पूछा, फिर आश्रम में राजा एक ओर चुपचाप बैठ गया।

बोधिसत्त्व जंगल से पके गोदे लाकर खाते थे। वे गोदे शक्तिवर्धक और शक्कर के समान मीठे थे। उन्हांेने राजा को सम्बोधित कर कहा, ”महापुण्य, ये गोदे खाकर पानी पीओ।“ राजा ने गोदे खाये और पानी पिया। उसे गोदे बड़े मधुर और स्वादिष्ट लगे। उसने बोधिसत्त्व से पूछा, ”भन्ते क्या बात है, ये गोदे बड़े मीठे और स्वादिष्ट हैं !“

”महापुण्य, राजा निश्चय ही धर्मानुसार और न्यायपूर्वक राज करता है, उसी से ये इतने मीठे हैं। राजा के अधार्मिक और अन्यायी होने पर तेल, मधु, शक्कर आदि तथा जंगल के फल-फूल सभी कड़वे और स्वादहीन हो जाते हैं। केवल यही नहीं सारा राष्ट्र ओजरहित हो जाता है, दूषित हो जाता है। राजा के धार्मिक और न्यायप्रिय होने पर सभी वस्तुएँ मधुर और शक्तिवर्धक होती हैं और सारा राष्ट्र शक्तिशाली तथा ओजस्वी बना रहता है।“

”भन्ते, ऐसा होता होगा“, यह कह कर राजा अपना परिचय दिये बिना ही बोधिसत्त्व को प्रणाम कर अपनी राजधानी लौट आया। उसने सोचा, तपस्वी बोधिसत्त्व के कथन की परीक्षा करूँगा। अधर्म और अन्याय से राज करूँगा, देखँूगा कि बोधिसत्त्व की बात में कितनी सच्चाई है। राजा ने ऐसा ही किया। कुछ समय बीत जाने पर वह फिर बोधिसत्त्व के आश्रम में पहुँचा और उन्हें प्रणाम कर एक ओर बैठ गया।

बोधिसत्त्व ने फिर पके गोदे दिये। राजा को वे गोदे बड़े कड़वे लगे। राजा ने गोदे थूक दिये और कहा, "भन्ते, ये बड़े कड़वे हैं।"

"महापुण्य, राजा अवश्य अधार्मिक और अन्यायी होगा। राजा के अधार्मिक और अन्यायी होने पर जंगल के फल-फूल तथा सभी वस्तुएँ नीरस और कड़वी हो जाती हैं, स्वादरहित हो जाती हैं, यही नहीं सारा राष्ट्र ओजरहित हो जाता है।"

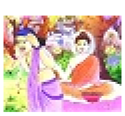

राजा के और जिज्ञासा करने पर बोधिसत्त्व ने कहा, "गायों के नदी तैरते समय बैल (नेता) यदि टेढ़ा जाता है तो नेता के टेढ़े जाने के कारण सभी गायें टेढ़ी जाती हैं और मार्ग से भटक जाती हैं। इसी प्रकार मनुष्यों में भी जो श्रेष्ठ होता है, वह नेता माना जाता है। यदि वह टेढ़े मार्ग से जाता है, अधर्म करता है तो सारी प्रजा कुमार्ग पर चलती है और अधर्म करने लगती है। राजा ही नेता होता है। राजा के धर्म विमुख होने पर सारा राज्य दुःख को प्राप्त होता है। गायों के नदी पार करते समय यदि बैल (नेता) सीधा जाता है तो नेता के सीधा जाने के कारण सभी गाय सीधी जाती हैं और नदी पार कर जाती हैं। इसी प्रकार मनुष्यों में जो श्रेष्ठ माना जाता है, वही नेता माना जाता है। यदि वह धर्म का अनुसरण करता है, तो शेष प्रजा भी धर्म का मार्ग अपनाती है। राजा के धार्मिक होने पर सारा राष्ट्र सुख को प्राप्त करता है।"

बोधिसत्त्व से यह शिक्षा प्राप्त कर राजा ने अपना राजा होना प्रकट किया और विनयपूर्वक बोला, ”भन्ते, मैंने ही पहले गोदों को मीठा कर फिर कड़वा किया। अब फिर उन्हें मीठा करूँगा और कभी उन्हें कड़वा नहीं होने दूँगा। यही मेरा संकल्प और व्रत है।“

बोधिसत्त्व को प्रणाम कर वह राजधानी लौट आया। वह धर्म और न्यायपूर्वक राज्य करने लगा। उसका राज्य फिर धन-धान्य से भर गया।

- जातक कथा से

शब्दार्थ

विवेकशील = विचारवान। अन्तःपुर = रनिवास। दुर्गम = जहाँ पहुँचना कठिन हो। सुरम्य = रमणीक। भन्ते = बौद्ध धर्म में मान्य पालि भाषा का आदर सूचक शब्द। ओज = कान्ति। जिज्ञासा = जानने की इच्छा। अनुसरण = पीछे चलना। संकल्प = दृढ़ निश्चय।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अपने आस-पास क्षेत्र में पाये जाने वाले बरगद, पीपल, पाकड़ या अन्य वृक्षों को निकट से देखिए और उन पर बैठे पक्षियों के क्रियाकलापों को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

2. बरगद के वृक्ष का चित्र बनाइए।

3. इस पाठ के आधार पर आप भी दो सवाल बनाइए।

4. लिखिए- इस कहानी को पढ़ने के बाद आप क्या करेंगे ? क्या नहीं करेंगे ?

विचार और कल्पना

1. इस पाठ में एक अच्छे राजा के आवश्यक गुण बताये गये हैं। आपके विचार में किसी राजा/ श्रेष्ठ व्यक्ति/नेता में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? उन्हें लिखिए।

2. जब राजा ने अन्याय और अधर्म के साथ राज्य किया होगा, तब उसकी प्रजा को क्या-क्या कष्ट भोगने पड़े होंगे ?

3. बोधिसत्व जंगल के पके गोदे खाते थे जो शक्कर के समान मीठे थे। आप अपने द्वारा खाए हुए उन फलों के नाम लिखिए जो एक बीज वाले हों, अनेक बीज वाले हों।

कहानी से

1. ब्रह्मदत्त नामक राजा क्यों प्रसिद्ध था?

2. राजा ब्रह्मदत्त वेश बदलकर क्यों घूमता था?

3. बोधिसत्त्व ने राजा को गोदों के मीठे और स्वादिष्ट होने का क्या कारण बताया?

4. राजा ने अधर्म और अन्याय से राज्य करना क्यों शुरू किया?

5. ‘राजा के धर्म विमुख होने पर सारा राज्य दुःख को प्राप्त होता है’, कथन का आशय बताइए।

भाषा की बात

1. नीचे लिखे हुए वाक्य को ध्यान से पढ़िए-

'राजा ने सोचा कि जनपद में कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय, जो उसके दोष बता सके।' इस वाक्य में मुख्य वाक्य है- 'राजा ने सोचा।' यह एक साधारण वाक्य है। इसके अतिरिक्त दो अन्य साधारण वाक्य हैं:-

(क) कि जनपद में कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय।

(ख) जो उसके दोष बता सके।

दोनों वाक्य क्रमशः 'कि' और 'जो' के द्वारा जोड़े गये हैं। इन्हें संयोजक अव्यय कहते हैं। इन तीनों वाक्यों में दूसरा वाक्य पहले के अधीन है और तीसरा वाक्य दूसरे के अधीन। इस प्रकार तीन स्वतन्त्र वाक्य आपस में मिलकर मिश्र वाक्य बने हैं।

नीचे लिखे मिश्रित वाक्यों से मुख्य और अधीन वाक्य अलग-अलग लिखिए-

(क) वह ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ता था, जो उसके दोषों को बता सके।

(ख) अधर्म और अन्याय से राज करूँगा और देखूँगा कि बोधिसत्त्व की बात में कितनी सच्चाई है।

2. तुलना की दृष्टि से विशेषण शब्दों की तीन अवस्थाएँ होती हैं- मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था। मूल शब्द में 'तर' एवं 'तम' लगाने से क्रमशः उत्तरावस्था एवं उत्तमावस्था बनती है, जैसे- श्रेष्ठ-श्रेष्ठतर- श्रेष्ठतम। यहाँ श्रेष्ठतर का अर्थ 'उससे श्रेष्ठ' और श्रेष्ठतम का अर्थ 'सबसे श्रेष्ठ' है।

इसी प्रकार नीचे दिये गये शब्दों के तीनों रूप लिखिए-

गुरु, अधिक, उच्च, न्यून, सरल।

3. नीचे कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द दिये गये हैं। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़कर शब्द और उनके विलोम शब्दों के जोड़े बनाकर लिखिए-

अधार्मिक, सुगम, रहित, गुण, सरस, स्थूल, विषाद, अवगुण, सहित, सूक्ष्म, दुर्गम, नीरस, हर्ष, धार्मिक।

4. शब्द अन्त्याक्षरी को आगे बढ़ाइए-

प्रबन्ध-धनवान-नदी....................

यह भी करें-

चित्र देखकर छात्र अपने शब्दों में कहानी लिखें।

इसे भी जानें

व्यास सम्मान- साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु के. के. बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा दिया जाता है।

गौतम बुद्ध-महात्मा गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ, वाराणसी में दिया था।

बौद्ध धर्म के इतिहास में इस घटना को 'धर्म चक्र प्रवर्तन' का नाम दिया गया है।

पाठ 3

4P4B8V

वीरों का कैसा हो वसंत

(प्रस्तुत कविता में वसंत के माध्यम से वीरों के पराक्रम का वर्णन किया गया हैं।)

वीरों का कैसा हो वसंत ?

आ रही हिमाचल से पुकार,

है उदधि गरजता बार-बार,

प्राची, पश्चिम, भू, नभ अपार

सब पूछ रहे दिग् दिगन्त,

वीरों का कैसा हो वसंत ?

फूली सरसों ने दिया रंग,

मधु लेकर आ पहुँचा अनंग,

वसु-वसुधा पुलकित अंग-अंग,

हैं वीर वेश में किन्तु कंत,

वीरों का कैसा हो वसंत ?

भर रही कोकिला इधर तान,

मारू बाजे पर उधर-गान,

है रंग और रण का विधान,

मिलने आये हैं आदि-अन्त,

वीरों का कैसा हो वसंत ?

गलबाँहे हों, या हो कृपाण,

चल चितवन हो या धनुष-बाण,

हो रस-विलास या दलित-त्राण,

अब यही समस्या है दुरन्त,

वीरों का कैसा हो वसंत ?

कह दे अतीत अब मौन त्याग,

लंके, तुझमें क्यों लगी आग,

ऐ कुरूक्षेत्र! अब जाग, जाग

बतला अपने अनुभव अनन्त,

वीरों का कैसा हो वसंत ?

हल्दी-घाटी का शिला-खंड,

ऐ दुर्ग! सिंह-गढ़ के प्रचण्ड,

राणा नाना का कर घमण्ड

दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत,

वीरों का कैसा हो वसंत ?

भूषण अथवा कवि चन्द नहीं,

बिजली भर दे वह छन्द नहीं,

है कमल बँधी स्वच्छन्द नहीं,

फिर हमें बतावे कौन? हन्त!

वीरों का कैसा हो वसंत ?

-सुभद्रा कुमारी चौहान

subhadra

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 ई0 को इलाहाबाद के निहालपुर नामक ग्राम में हुआ था। सुभद्रा कुमारी चौहान को स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने वाली प्रथम सत्याग्रही होने का गौरव प्राप्त है | ‘मुकुल’ इनकी कालजयी रचना है। साहित्य के क्षेत्र में इन्हें प्रतिष्ठित 'सेक्सरिया पुरस्कार’ मिला है। इन्होंने दो बार मध्य प्रदेश विधान सभा सदस्य के रूप में भी अपना राजनैतिक योगदान दिया। 'बिखरे मोती’, 'उन्मादिनी’, 'सीधे-सादे चित्र’, 'त्रिधारा’ आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं। इनका निधन 15 फरवरी 1948 को हुआ

शब्दार्थ

उदधि = समुद्र। **प्राची** = पूर्व दिशा। **दिगन्त** = दिशा का छोर। **अनंग** = कामदेव। **वसुधा** = पृथ्वी। **पुलकित** = रोमांचित। **कन्त** = पति, प्रिय। **मारू** = एक बाजा और राग जो युद्ध के समय गाया और बजाया जाता है। **गलबाँहें** = गले में बाँहों का हार। **कृपाण** = तलवार।

ज्वलंत = प्रकाशवान। **प्रचण्ड** = बहुत अधिक तीव्र। **दुरन्त** = अति गम्भीर। **हन्त** = खेद या शोक सूचक। **स्वच्छन्द**= स्वाधीन। **चितवन**=दृष्टि, कटाक्ष।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1-अपने आस-पास किसी सैनिक से मिलकर उनके कार्य क्षेत्र के बारे में जानकारी प्राप्त कर उसे अपने शब्दों में लिखिए।

2-1857 की क्रान्ति के मुख्य केन्द्र दिल्ली, मेरठ, झाँसी, कानपुर, और लखनऊ आदि थे। इन स्थलों पर स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करने वालों के नामों की सूची बनाइए।

3-इस कविता को कई गायकों ने अपना स्वर दिया है। अपने शिक्षक अथवा बड़ों के मोबाइल

फोन पर इस कविता को सुनकर लयबद्धता के साथ याद कीजिए तथा विद्यालय के किसी कार्यक्रम में प्रस्तुत कीजिए।

विचार और कल्पना

1- एक वीर सैनिक सारी सुख-सुविधा का त्यागकर देश की रक्षा में सन्नद्ध रहता है। दुर्गम बर्फ से घिरी पहाड़ी पर स्थित किसी सैनिक को किन कठिनाइयाँ का सामना करना पड़ता होगा ? सोचकर लिखिए।

2-सेना के तीन अंग हैं- थल सेना, वायु सेना, जल सेना। सैनिक के रूप में सेना के किस अंग में आप भाग लेना चाहंेगे और क्यों ?

कविता से

1-'वीरों का कैसा हो वसंत ?' कविता में कौन-कौन पूछ रहा है?

2-वीरों के लिए वसंत के रंग और रण का क्या स्वरूप है?

3.निम्नलिखित पंक्तियों के आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगन्त,

वीरों का कैसा हो वसंत?

(ख) है रंग और रण का विधान,

मिलने आये हैं आदि-अन्त,

(ग) बिजली भर दे वह छन्द नहीं,

है कलम बंधी स्वच्छन्द नहीं,

4. कविता में कवि अतीत से मौन त्यागने के लिए क्यों कह रहे हैं ?

भाषा की बात

1-निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए-

भू, नभ, पुष्प, मधु, बिजली

2-दो या दो से अधिक शब्दों का संक्षेपीकरण करके एक नया सार्थक शब्द बनाने की प्रक्रिया

समास कहलाती है। समास की विधि द्वारा बने शब्द को समस्त पद कहते हैं।

जैसे- कौरवों का क्षेत्र=कुरुक्षेत्र

निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करें-

शिलाखण्ड, सिंहगढ़, हिमाचल, गलबाँहें, धनुषबाण।

3-दिये गये मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

दाँत खट्टे करना, ईंट से ईंट बजाना, छक्के छुड़ाना, अंगारों पर चलना, खेत रह जाना।

शिक्षण संकेत

पाठ में कुछ ऐतिहासिक स्थलों, कवियों एवं ग्रन्थों का उल्लेख हुआ है, उनके बारे में बच्चों को बताएँ।

पाठ 4

4PD7AI

बहता पानी निर्मला

मुझे बचपन से नक्शे देखने का शौक है। आप समझेंगे कि कुछ भूगोल विज्ञान की तरफ प्रवृत्ति होगी-नहीं, सो बात नहीं; असल बात यह है कि नक्शों के सहारे दूर-दुनिया की सैर का मजा लिया जा सकता है। यों तो वास्तविक जीवन मंे भी काफी घूमा-भटका हूँ, पर उससे कभी तृप्ति नहीं हुई, हमेशा मन मंे यही रहा कि कहीं और चलें, कोई नयी जगह देखें।

यात्रा करने के कई तरीके हैं। एक तो यह कि आप सोच-विचार कर निश्चय कर लें कि कहाँ जाना है, कब जाना है, कहाँ-कहाँ घूमना है, कितना खर्च होगाः फिर उसी के अनुसार छुट्टी लीजिए, टिकट कटवाइए, सीट या बर्थ बुक कीजिए, होटल डाॅक बँगले को सूचना देकर रिजर्व कराइए या भावी अतिथियों को खबर दीजिए और तब चल पड़िए। बल्कि तरीका तो यही एक है-क्योंकि यह व्यवस्थित तरीका है और इसमंे मजा बिल्कुल नहीं है यह भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि बहुत से लोग ऐसे यात्रा करते हैं और बड़े उत्साह से भरे वापस आते हैं।

दूसरा तरीका यह है कि आप इरादा तो कीजिए कहीं जाने का, छुट्टी भी लीजिए, इरादा और पूरी योजना भी चाहे घोषित कर दीजिए कि आप बड़े दिनों की छुट्टियों मंे बम्बई जा रहे हैं, लोगों को ईर्ष्या से कहने दीजिए कि अमुक बम्बई का सीजन देखने जा रहा है, मगर चुपके से पैक कर लीजिए जबरदस्त गर्म कपड़े और जा निकलिए बर्फ से ढँके श्रीनगर में!

अंग्रेजी में कहावत है कि ''एक कील की वजह से राज्य खो जाता है-वह यों कि कील की वजह से नाल, नाल की वजह से घोड़ा, घोड़े के कारण लड़ाई और लड़ाई के कारण राज्य से हाथ धोना पड़ता है।'' हमारे पास छिनने को राज्य तो था नहीं पर एक दाँत माँजने के ब्रुश और मोटर की एक मामूली-सी ढिबरी के लिए हम कैसी मुसीबत में पड़े यह हमीं जानते हैं।

सोनारी एक छोटा-सा गाँव है-अहोम राजाओं की पुरानी राजधानी शिवसागर से कोई अठारह मील दूर। बरसात के दिन थे, रास्ता, खराब एक दिन सबेरे घूमने निकला तो देखा कि नदी बढ़ कर सड़क के बराबर आ गयी है। मैं शिवसागर से तीन-चार मील पर था, सोचा कि एक नया दाँत बु्रश ले लूँ क्योंकि पुराना घिस चला था; और मोटर की भी एक ढिबरी ठीक करवा कर ही लौटूँ-उसकी चूड़ी घिस जाने से थोड़ा-थोड़ा तेल चूता रहता था, वैसे कोई बहुत जरूरी काम नहीं था। खैर, इसमें कोई दो घण्टे लग गये, खाना खाने में एक घण्टा और।

तीन घण्टे बाद वापस लौटने लगे तो देखा, सड़क पर पानी फैल गया है। पानी बड़े जोर से एक तरफ से दूसरी तरफ बह रहा था, क्योंकि सड़क के एक तरफ नदी थी, दूसरी तरफ नीची सतह के धान के खेत, जिनकी ओर पानी बढ़ रहा था। पानी के धक्के से सड़क कई जगह टूट गयी थी। मैं फिर भी बढ़ता गया, क्योंकि आखिर पीछे भी तो पानी ही था।

तीन घंटे बाद वापस लौटने लगे तो देखा, सड़क पर पानी फ़ैल गया है |पानी बड़े जोर से एक तरफ से दूसरी तरफ बह रहा था, क्योंकि सड़क के एक तरफ नदी थी, दूसरी तरफ नीची सतह के धान के खेत, जिनकी ओर पानी बढ़ रहा था |पानी के धक्के से सड़क कई जगह टूट गयी थी | मैं फिर भी बढ़ता गया, क्योंकि आखिर पीछे भी तो पानी ही था | पर थोड़ी देर बाद पानी कुछ और गहरा हो गया और उसके धक्के से मोटर भी सड़क पर से हट कर किनारे की ओर जाने लगी। आगे कहीं कुछ दीखता नहीं था क्योंकि सड़क की सतह शायद दो-तीन मील आगे तक बहुत नीची ही थी। सड़क के दोनों ओर जो पेड़ थे उन में कइयों पर साँप लटक रहे थे, क्योंकि बाढ़ से बचने के लिए वे पहले सड़क पर आते थे और फिर पेड़ों पर चढ़ जाते थे।

मैंने लौटने का ही निश्चय किया। पर सड़क दीखती तो थी नहीं, अन्दाज से ही मैं बीच के पक्के हिस्से पर गाड़ी चला रहा था। मोड़ने के लिए उसे पटरी से उतारना पड़ेगा और इधर-उधर सड़क है भी कि नहीं, क्या भरोसा ? और मैं एक जगह देख भी चुका था कि आँखों के सामने ही कैसे समूचा ट्रक दलदल में धँस कर गायब हो जाता है। इसलिए मोटर को बिना घुमाये उलटे गियर मंे ही कोई ढाई मील तक लाया, यहाँ सड़क कुछ ऊँची थी, उस पर गाड़ी घुमाकर शिवसागर पहुँचा।

शिवसागर से सोनारी को एक दूसरी सड़क भी जाती थी चाय बागानों में से होकर, यह सड़क अच्छी थी पर इसके बीच एक नदी पड़ती थी जिसे नाव से पार करना होता था। मैंने सोचा कि इसी रास्ते चलंे, क्योंकि सामान तो सब सोनारी में था। मैं डाॅक बँगले से कुछ घंटों के लिए ही तो निकला था। शिवसागर में एक तो मोटर की ढिबरी कसवानी थी और दूसरे दाँत-बु्रश और कुछ तेल साबुन लेना था, बस। वह भी लौटने की जल्दी के कारण नहीं लिया था!

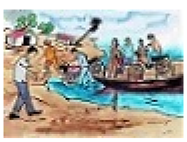

इस सड़क से नदी तक तो पहुँच गये। नदी मंे नाव पर गाड़ी लाद भी ली और पार भी चले गये। यहाँ भी नदी मंे बड़ी बाढ़ आयी थी और बहते हुए टूटे छप्पर बता रहे थे कि नदी किसी गाँव को लीलती हुई आयी है-एक भैंस भी बहती आयी और पेड़-पौधों की तो गिनती क्या। उस पार नदी का कगारा ऊँचा था मोटर के लिए उतारा बना हुआ था। लेकिन नाव से किनारे तक जो तख्ते डाले गये थे वह ठीक नहीं लगे थे। मोटर नीचे गिरी आधी पानी में, आधी किनारे पर मैं जोर से बे्रक दबाये बैठा था पर ऐसे अधिक देर तक तो नहीं चल सकता था ! खैर, आधे घण्टा उस स्वर्गनसैनी पर बैठे-बैठे, असमिया हिन्दी और बंगला की खिचड़ी में लोगों को बताता रहा कि क्या करें, तब मोटर ऊपर चढ़ायी जा सकी। थोड़ा आगे ही ऊँची जगह गाँव था, पर मोटर रोक कर चाय की तलाश की। यहीं सोनारी से आये दो साइकिल-सवारों से मालूम हुआ कि वे कन्धे तक पानी में से निकल कर आये हैं-साइकिलें कन्धों पर उठाकर! और मोटर तो कदापि नहीं जा सकती।

इस तरह इधर भी निराशा थी। पानी अभी बढ़ रहा था, यह गाँव ऊँची जगह पर था पर यहाँ कैद हो जाना मैं नहीं चाहता था, इसलिए फिर नाव पर मोटर चढ़ा कर उसी रास्ते नदी पार की। सब ने मना किया पर मेरे सर पर भूत सवार था, और हठधर्मी का अपना अनूठा रस होता है।

रात शिवसागर पहुँचे। एक सज्जन ने ठहरने को जगह दी, भोजन-बिस्तर का प्रबन्ध भी हो गया पर मन ही मन अपने को कोसा कि न नया दाँत-ब्रुश लेने के लिए सोनारी निकले होते, न यह मुसीबत होती-क्योंकि इसकी ऐसी तात्कालिक जरूरत तो भी नहीं, न मोटर की ढिबरी का मामला ही इतना जरूरी था। लेकिन अब उपाय क्या था ?

इस तरह बारह दिन और काटने पड़े, क्योंकि सोनारी के सब रास्ते बन्द थे। लौटकर देखा, सोनारी के डाकॅबँगले में भी पानी भर गया था, कपड़े सब सील कर सड़ रहे थे,किताबें तो गल ही गयी थीं। बचा था तो केवल स्नानघर में ऊँचे ताक पर रखा हुआ साबुन का डिब्बा और दाँतों का ब्रुश।

नक्शे में अब भी देखता हूँ। वास्तव में जितनी यात्राएँ स्थूल पैरों से करता हूँ उससे ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूँ। लोग कहते हैं कि मैंने अपने जीवन का कुछ नहीं बनाया, मगर मैं बहुत प्रसन्न हूँ और किसी से ईष्र्या नहीं करता। आप भी अगर इतने खुश हों तो ठीक-तो शायद आप पहले से मेरा नुस्खा जानते हैं-नहीं तो मेरी आप को सलाह है, ’’जनाब अपना बोरिया-बिस्तर समेटिए और जरा चलते-फिरते नजर आइये।’’ यह आप का अपमान नहीं है, एक जीवन दर्शन का निचोड़ है। ’रमता राम’ इसीलिए कहते हैं कि जो रमता नहीं, वह राम नहीं। टिकना तो मौत है।

-

हीरानन्द सच्चिदानन्द वात्स्यायन ’अज्ञेय’

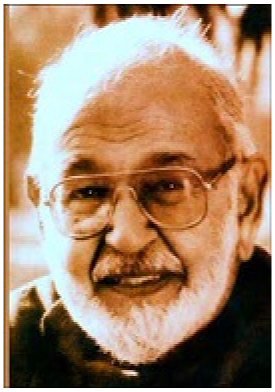

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' का जन्म 7 मार्च सन् 1911 ई0 को कुशीनगर जनपद में हुआ था। आपको हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद के जनक के रूप में ख्याति प्राप्त है। 'बावरा अहेरी', 'आँगन के पार द्वारा', 'कितनी नावों में कितनी बार', 'शेखरः एक जीवनी' इनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं। इनका निधन 4 अप्रैल सन् 1987 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

तृप्ति = सन्तोष, इच्छित वस्तु की प्राप्ति से मन का भरना। **अमुक** = कोई खास। **ढिबरी** = कसे जाने वाले पेंच के सिरे पर लगा छल्ला। **कगारा** = नदी का करार। **टीला**= ऊँचा किनारा। **हठधर्मी** = जिद्दी, दृढ़ संकल्पित। **तात्कालिक** = उसी समय।

प्रश्न अभ्यास

कुछ करने को

1-यदि आपने बस/रेलगाड़ी से कोई यात्रा की हो तो यात्रा मंे लिये गये टिकट पर दी गयीजानकारी तथा निर्देश को लिखें।

2-''मैंने लौटने का निश्चय किया पर सड़क दिखती तो थी नहीं, अन्दाज से ही मैं बीच के पक्के हिस्से पर गाड़ी चला रहा था। मोड़ने के लिए उसे पटरी से उतारना पड़ेगा-और इधर-उधर सड़क है भी कि नहीं क्या भरोसा ? और मैं एक जगह देख भी चुका था कि

आँखों के सामने ही कैसे समूचा ट्रक दलदल में धंसकर गायब हो जाता है। इसलिए मोटर को बिना घुमाये उलटे गियर में ही कोई ढाई मील तक लाया। यहाँ सड़क कुछ ऊँची थी, उस पर गाड़ी घुमाकर शिवसागर पहुँचा।''

उपर्युक्त अनुच्छेद को पढ़कर अपने सहपाठियों से पूछने के लिए चार प्रश्न बनाइए।

विचार और कल्पना

1- आपने भी कोई न कोई यात्रा जरूर की होगी। उस यात्रा में कई प्रकार की समस्याएं आयी होंगी। उन समस्याओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

2- आठ घण्टा उस स्वर्गनसैनी पर बैठे-बैठे, असमिया, हिन्दी और बंगला की खिचड़ी में लोगों को बताता रहा कि क्या करें'' इन परिस्थितियों में लेखक के मन में क्या-क्या भाव उत्पन्न हुए होंगे ? स्वयं को उस स्थान पर रखते हुए लिखिए।

यात्रावृत्त से

1- लेखक ने यात्रा करने के कितने प्रकार बताए हैं और उन्होंने किस प्रकार की यात्रा की ?

2- लेखक ने किन स्थानों की यात्रा की ?

3- लेखक ने अपनी यात्रा में किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना किया ?

4-'वास्तव में जितनी यात्राएं स्थूल पैरों से करता हूँ उससे ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूँ' इस वाक्य से लेखक का क्या अभिप्राय है ?

5-'एक कील की वजह से राज्य खो जाता है' कहावत को लेखक ने किस सन्दर्भ में कहा ?

6-यात्रा करने में हमें नक्शा किस प्रकार सहायता करता है ?

भाषा की बात

1-पाठ में आये अंग्रेजी के शब्दों को छाँटिए और उनके हिन्दी अर्थ ढूँढ़कर लिखिए ?

2-'एक कील की वजह से राज्य खो जाता है' यह एक कहावत है। ऐसी ही कहावतों को खोजिए और उनका अर्थ लिखिए ?

3-जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगकर संबंध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जुड़ते हैं उन्हें सम्बन्ध बोधक कहा जाता है। कुछ प्रमुख **सम्बन्ध बोधक** हैं-का, के, की ,के लिए, के कारण, के अनुसार, की ओर। उचित सम्बन्ध बोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए-

(क) उसी .....छुट्टी लीजिए और टिकट करवाइए।

(ख) लड़ाई ....राज्य से हाथ धोना पड़ता है।

(ग) एक मामूली सी ढिबरी..................हम कैसी मुसीबत में पड़े।

(घ) नदी बढ़कर सड़क ....आ गई।

(ड.) सड़क पर से हटकर किनारे...................जाने लगे।

पाठ 5

4PH3C6

निजभाषा उन्नति

(प्रस्तुत पाठ में कवि ने स्वाभिमान और देश-प्रेम की भावना के विकास के लिए अपनी मातृभाषा के विकास पर बल दिया है। साथ ही राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए परस्पर मिलजुल कर रहने का संदेश दिया है।)

(दोहे)

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल।।

करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु शूल।

निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जो सब को मूल।।

प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि जत्न।

राज काज दरबार में, फैलावहु यह रत्न।।

सुत सो तिय सो मीत सो, भृत्यन सो दिन रात।

जो भाषा मधि कीजिए, निज मन की बहु बात।।

निज भाषा निज धरम, निज मान करम व्यवहार।

सबै बढ़ावहु बेगि मिलि, कहत पुकार-पुकार।।

पढ़ो लिखो कोउ लाख विध, भाषा बहुत प्रकार।

पै जबही कछु सोचिहो, निज भाषा अनुसार।।

अंगे्रजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन।

पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।

घर की फूट बुरी

(पद)

जगत में घर की फूट बुरी।

घर के फूटहिं सों बिनसाई सुबरन लंकपुरी।।

फूटहिं सों सत कौरव नासे भारत युद्ध भयो।

जाको घाटो या भारत में अबलौं नहिं पुजयो।।

फूटहिं सो जयचन्द बुलायो जवनन भारत धाम।

जाको फल अब लौं भोगत सब आरज होइ गुलाम।।

फूटहि सों नवनन्द विनासो गयो मगध को राज।

चन्द्रगुप्त को नासन चाह्यो आपु नसे सह साज।।

जो जग में धन मान और बल अपुनी राखन होय।

तो अपुने घर में भूले हू फूट करौ जनि कोय।।

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

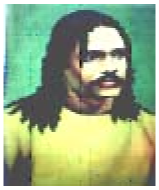

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी का जन्म 9 सितम्बर सन् 1850 ई0 को वाराणसी में हुआ था। भारतेन्दु जी ने निबन्ध, नाटक, कविता आदि की रचना की। आपको आधुनिक काल का जन्मदाता कहा जाता है। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ 'प्रेम माधुरी', 'प्रेम फुलवारी', 'भक्तमाल' हैं। इन्होंने खड़ी बोली में गद्य लिखा और गद्य लिखने के लिए लोगों को उत्साहित किया। ये अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। 35 वर्ष की अल्पायु में ही 6 जनवरी सन् 1885 ई0 को इनकी मृत्यु हो गयी।

शब्दार्थ

मूल = आधार। **शूल** = पीड़ा। **बिलम्ब** = देर। **जत्न** = यत्न, प्रयास। **भृत्यन** = सेवकों। **मधि** = बीच में। **बेगि** = शीघ्र। **प्रवीन** = कुशल। **हीन** = अधूरा, रहित। **बिनसाई** = नष्ट हुई। **पुजयो** = पूरा हुआ। **जवन** = यवन। **आरज** = आर्य।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1.निम्नांकित स्थितियों पर छोटे समूहों में चर्चा कीजिए और निष्कर्ष को पाँच-सात पंक्तियों में लिखिए-

(क) ऐसा घर जिसमें सब मिलकर कार्य करते हैं।

(ख) ऐसा घर जिसमें फूट है।

2.कवि ने फूट के कारण होने वाले विनाश के अनेक उदाहरण दिए हैं, यथा-

(क) रावण और विभीषण की फूट के कारण लंका का नाश।

(ख) कौरव और पाण्डवों की फूट के फलस्वरूप महाभारत युद्ध।

(ग) पृथ्वीराज और जयचन्द की आपसी फूट के कारण यवनों का भारत आगमन।

इन विषयों पर शिक्षक/शिक्षिका के साथ चर्चा करके फूट के कारण और उनके दुष्परिणामों को संक्षेप में लिखिए।

3. इस कविता के आधार पर आप भी दो सवाल बनाइए।

विचार और कल्पना

1. यदि आपको अपनी बात हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में कहने के लिए कहा जाय, तो आप किस भाषा को चुनेंगे ?

कविता से

1. निज भाषा की उन्नति से क्या-क्या लाभ होगा ?

2. हमें अपनी भाषा का प्रसार कहाँ-कहाँ करना चाहिए ?

3. कवि ने अपनी भाषा के अतिरिक्त किसको-किसको बढ़ाने की बात की है ?

4. कवि ने महाभारत के युद्ध का क्या कारण बताया है ?

5. निम्नांकित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।

(ख) जो जग में धन मान और बल अपुनी राखन होय।

तो अपुने घर में भूले हू फूट करौ जनि कोय।।

भाषा की बात

1. शब्दों के तत्सम रूप लिखिए-

करम, जदपि, सुबरन, हिय, जल, मीत, धरम।

2. निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय को शूल।।

उपर्युक्त पंक्तियों में आये हुए 'मूल' और 'शूल' शब्द तुकान्त शब्द हैं। कविता से ऐसे ही तुकान्त शब्द छाँटकर उन शब्दों के आधार पर कुछ पंक्तियाँ रचिए।

3-इस कविता से मैंने सीखा....................................।

4-अब मैं करूँगा/करूँगी..।

इसे भी जानें

महात्मा गांधी- "राष्ट्र भाषा की जगह एक हिन्दी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं।"

सुमित्रानंदन पंत- "हिन्दी का भविष्य उज्ज्वल है वह विश्व की सांस्कृतिक भाषा होगी।"

विनोबा भावे- "भारत की एकता के लिए आवश्यक है कि देश की सभी भाषाएँ नागरी लिपि अपनाएँ।"

सुभाषचन्द्र बोस- "प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी-प्रचार से मिलेगी उतनी दूसरी चीज से नहीं।"

राजर्षि टण्डन- "हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है।"

डॉ0 जाकिर हुसैन- "हिन्दी की प्रगति से देश की सभी भाषाओं की प्रगति होगी।"

पाठ 6

4PVYDT

शाप - मुक्ति

(प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने डॉ. प्रभात के माध्यम से अपराधबोध तथा प्रायश्चित - स्वरुप मानव सेवा का व्रत लेने का चित्रण किया है |)

मैं बूढी दादी की आँखों का इलाज कराने दिल्ली के एक बड़े प्रसिद्धनेत्र - चिकित्सक डॉ. प्रभात के पास गया | लगभग दृष्टिहीन हो चुकी दादी को सहारा दिए जब मैं डॉ. प्रभात के कमरे में पहुंचा तो उन्होंने मुस्कुराते हुए दादी का स्वागत किया, 'आओ, आओ, दादी अम्मा ! कहाँ, क्या तकलीफ है?'

कोई तकलीफ नहीं, बीटा | बस बुढापे की मारी हूँ |बुढापे में नज़र कमजोर हो ही जाती है |'

'पर मैं तो आँखों का डॉक्टर हूँ दादी अम्मा ! बुढापे का इलाज मेरे पास कहाँ ?' डॉ. प्रभात ने हँसते हुए कहा |

मेरी दादी भी कम विनोदी स्वभाव की नहीं | कहने लगी, 'कोई बात नहीं, बेटा ! तुम आँख का ही इलाज कर दो, बुढापे का इलाज तो भगवान् के पास भी नहीं है |'

यह सुनकर डॉ. प्रभात हँस पड़े और दादी से बात करते हुए उनकी आँखों की जाँचकरने लगे | उन्होंने विस्तार से, कई उपकरणों और यंत्रों की सहायता से दादी की आँखों की जांच की | बीच बीच में बातचीत और हँसी - मजाक भी करते जाते थे |

मैं चुपचाप बैठा डा.ॅ प्रभात की ओर देख रहा था। पहले तो मुझे उनकी हँसी ही कुछ जानी-पहचानी लगी थी, फिर ध्यान से देखने पर उनका चेहरा भी कुछ परिचित-सा मालूम हुआ। लेकिन याद नहीं आ रहा था कि मैंने इन्हें पहले कहाँ देखा है। आखिर जब उन्होंने दादी की आँखों की पूरी जाँच कर ली, तो मैंने पूछ ही लिया, ‘आप कहाँ के रहने वाले हैं, डाॅक्टर साहब?’

‘इलाहाबाद का हूँ।’ क्यों?

‘अरे, हम भी इलाहाबाद के ही हैं।’ दादी मुझसे पहले ही बोल उठीं।

‘अच्छा? बड़ी खुशी हुई।’ डा.ॅ प्रभात ने सचमुच खुश होकर पूछा ‘इलाहाबाद में कहाँ रहते हैं आप लोग?’

दादी ने ज्यों ही हमारे इलाहाबाद वाले घर का पता-ठिकाना बताया, डा.ॅ प्रभात ने मेरी तरफ़ देखा और अचरज भरी प्रसन्नता से बोले, ”अरे, तुम बब्बू तो नहीं हो?“

”और तुम मंटू?“

”हाँ भई, मैं मंटू ही हूँ। वाह, यार तुम खूब मिले! तुम तो ृायद जब दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ते थे, तभी अपने परिवार के साथ दिल्ली चले आये थे। है न ? वाह, मुझे तो स्वप्न में भी आशा नहीं थी कि जीवन में फिर कभी तुमसे भेंट होगी। सच, बड़ी खुशी हुई तुमसे मिलकर।“

”मुझे भी।“ मैंने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा।

तभी डा.ॅ प्रभात ने दादी का चेहरा ध्यान से देखा और अचानक उनकी मुस्कान लुप्त हो गयी। चेहरा किसी दुखदाई स्मृति में काला-सा हो आया। दादी की अत्यधिक कमजोर आँखों को डाॅक्टर के चेहरे का यह भाव-परिवर्तन नज़र नहीं आया। वे प्रसन्न होकर पूछने लगीं, ”अच्छा, तो तुम दोनों बचपन में साथ-साथ खेले हो? यह तो बड़ा अच्छा संयोग रहा। तुम तो अपने ही हुए, डाॅक्टर बेटा। हाँ, तुमने अपना क्या नाम बताया? मंटू?

इलाहाबाद में हमारे पड़ोस में एक वकील रहते थे, उनके लड़के का नाम भी कुछ ऐसा ही था। बड़ा बदमाश लड़का था |“

डा. प्रभात ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे सहसा बहुत गम्भीर हो गये। दादी के लिए दवाई का पर्चा लिखते हुए उन्होनें कहा, ‘‘ये बातें फिर कभी होंगी, दादी अम्मा! बाहर और भी कई रोगी इन्तजार कर रहे हैं। मैं तुम्हारी दवाई लिख रहा हूँ। बाजार से मँगवा लेना और दिन में तीन बार आँखों में डालती रहना, फिर अगले सप्ताह आज के ही दिन आ जाना। तुम्हारी आँखों का आॅपरेशन करना होगा। घबराना मत, ईश्वर ने चाहा तो तुम्हारी आँखें अच्छी हो जायेंगी।’’

बाहर आते ही दादी ने मुझसे पूछा,‘‘यह उसी वकील का बेटा मंटुआ था न?’’

‘‘हाँ, दादी ! बचपन में मेरे साथ पढ़ता था।’’

‘‘बस, तो अब इसके पास दुबारा आने की जरूरत नहीं। मैं इस दुष्ट के हाथों अपनी आँखें नहीं फुड़वाऊँगी।’’

‘‘कैसी बातें करती हो, दादी! यह तो बहुत माना हुआ डाॅक्टर है और अब तो अपनी जान-पहचान का भी निकल आया। उसे दुष्ट क्यों कह रही हो?’’

‘‘तू भूल गया इसने वहाँ इलाहाबाद में क्या किया था?’’

‘‘क्या किया था?’’

‘‘अरे, तुझे याद नहीं, इसने मुहल्ले की कुतिया के तीन पिल्लों की आँखें आक के

पौधों का दूध डालकर फोड़ दी थीं?’’ मैं सचमुच ही सब कुछ भूला हुआ था। ‘‘तूने ही तो यह बात हम लोगों को बतायी थी।“

इलाहाबाद (प्रयागराज) में हमारे पड़ोसी वकील साहब की कोठी के पीछे एक बहुत बड़ा बाग और घास का मैदान था। मैं मंटू के साथ अक्सर वहाँ खेला करता था। बाग की मेड़ के पास आक के बहुत से पौधे उगे हुए थे। एक दिन हम खेल-खेल में आक के पत्ते तोड़ने

लगे। उधर से गुजरते हुए हमारे स्कूल के अध्यापक ने हमें देख लिया। उन्होंने हमें डाँट लगायी और बताया कि आक के पत्ते कभी नहीं तोड़ने चाहिए, क्योंकि उन्हें तोड़ने से जो गाढ़ा-गाढ़ा सफेद दूध-सा निकलता है, यदि आँखों में चला जाये तो आदमी अन्धा हो जाता है।

यह जानकारी हम लोगों के लिए एकदम नयी और विस्मयकारी थी। ठंड के दिन थे और मुहल्ले में आवारा घूमने वाली एक कुतिया ने वकील साहब की कोठी के पीछे पड़ी सूखी टहनियों के ढेर के नीचे तीन पिल्ले दिये थे। पिल्ले बड़े सुन्दर थे। मैं और मंटू उनसे खेला करते थे। आक के दूध के भयानक असर की जानकारी मिलने के अगले दिन जब मैं स्कूल से आकर खाना खाने के बाद मंटू के साथ खेलने गया तो मैंने देखा, मंटू आक के पौधों के पास बैठा है और उसके घुटनों में दबा पिल्ला कें-कें कर रहा है। दो पिल्ले पास ही कूँ-कूँ करते इधर-उधर भटक रहे थे। नजदीक जाकर मैंने देखा, हैरान रह गया। मंटू आक के पत्ते तोड़-तोड़ कर उनका दूध पिल्ले की आँखों में डाल रहा था।

”यह तूने क्या किया, बेवकूफ! पिल्ला अन्धा हो जायेगा।“ मंैने चिल्ला कर कहा।

मंटू ने उस पिल्ले को रख दिया और बोला, ”मैंने उन दोनों की आँखों में भी आक का दूध भर दिया है। अब देखेंगे, ये तीनों अन्धे होते हैं या नहीं।“

उस गाढ़े चिपचिपे दूध से तीनों पिल्लों की आँखें बन्द हो गयीं। कुछ दिनों बाद आँखें तो ृायद खुल गयी थीं, लेकिन वे अन्धे हो गये थे।

मंटू के इस कुकृत्य की जानकारी केवल मुझे ही थी। मैंने उसे उन प्यारे-प्यारे पिल्लों को अन्धा बना देने के लिए बहुत बुरा-भला कहा था और वकील साहब से शिकायत करने की धमकी भी दी थी। उसने गिड़गिड़ा कर मुझसे कहा था कि यह बात मैं किसी को न बताऊँ। मैं शायद बताता भी नहीं, लेकिन जब उन तीन पिल्लों में से दो, दिन-रात कूँ-कूँ करते, इधर से उधर भटकते मर गये, मुझे बहुत दुःख हुआ और उस दिन मैं बहुत रोया।

सभी लोग मुझसे बार-बार पूछने लगे कि मैं क्यों रो रहा हूँ? पहले मैंने बात छिपा कर अपने मित्र मंटू को बचाने की कोशिश की, लेकिन फिर मुझे तीसरे पिल्ले का ध्यान आ

गया, जो अभी जीवित था और उसकी जान बचाना मुझे मंटू को पिटाई से बचाने से ज्यादा जरूरी लग रहा था।इसलिए मैंने रोते-रोते सारी बात बता दी और उस पिल्ले की आँखों का इलाज करा देने की जिद पकड़ ली। सब लोगों ने मंटू को बुरा-भला कहा। वकील साहब ने उसकी पिटाई भी की। मुझे भी बहुत कुछ सुनना पड़ा, क्योंकि मैंने भी सब कुछ जानते हुए भी बात को तब तक छिपाए रखा, जब तक दो पिल्ले मर नहीं गये।

आखिर तीसरे पिल्ले को बचाने के प्रयास किये गये। मैंने जिद करके उसे पाल लिया। पिताजी ने उसकी आँखों का इलाज भी कराया, लेकिन वह अन्धा ही रहा। माँ और दादी उसकी बड़ी सेवा करती थीं। मैं भी उसका बहुत ध्यान रखता था। उस समय तो उसकी जान बच गयी, लेकिन जब वह बड़ा हो गया, एक दिन घर से बाहर निकल गया और सड़क पर किसी वाहन से कुचल कर मर गया।

उस घटना को याद कर मैं हैरान रह गया। बचपन में तीन पिल्लों की आँखें फोड़ देने वाला मंटू आज इतना बड़ा नेत्र-चिकित्सक! इससे भी ज्यादा हैरानी की बात यह थी कि लगभग पैंतीस साल पहले की वह घटना, जिसे मैं भूल चुका था, दादी को अभी तक याद थी।

निश्चय ही वह घटना प्रभात को भी याद होगी, तभी तो वह हम लोगों का परिचय पाते ही अचानक चुप, गम्भीर और उदास हो गये थे।

'लेकिन दादी, बचपन की उस बात को लेकर अब तो डाॅ. प्रभात को बुरा-भला कहना ठीक नहीं।' मैंने दादी को समझाने की कोशिश की, 'अब वे मंटू नहीं, देश के माने हुए नेत्र-चिकित्सक हैं। दूर-दूर से लोग उनके पास अपनी आँखों का इलाज कराने आते हैं। अब तक तो हजारों लोगों को उनकी खोयी हुई नेत्र-ज्योति लौटा चुके होंगे। क्या इतनी बड़ी सेवा से उनका बचपन का अबोध अवस्था में किया हुआ पाप अब तक धुल नहीं गया होगा ?'

'कुछ भी हो, मैं उससे अपनी आँखों का इलाज नहीं कराऊँगी।' दादी ने निश्चय के स्वर में कहा।

मैंने उन्हें बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन वे डा.ॅ प्रभात से इलाज कराने को तैयार न हुईं। आँखों में डालने की जो दवाई डा.ॅ प्रभात ने लिखकर दी थी, वह भी नहीं खरीदने दी। परिवार के सब लोगों ने उन्हें समझाया, लेकिन वे टस से मस नहीं हुईं।

आखिर शाम को मैंने डा.ॅ प्रभात को टेलीफोन किया और दादी की जिद के बारे में बताया। डा.ॅ प्रभात ने गम्भीर होकर सब कुछ सुना और बोले, 'तुम अपने घर का पता बताओ, मैं स्वयं आकर दादी अम्मा को समझाऊँगा।'

लगभग एक घंटे बाद डा.ॅ प्रभात हमारे घर में थे और दादी से कह रहे थे, 'दादी अम्मा! मैंने बचपन में जो पाप किया था, उसे मैं आज तक नहीं भूला हूँ और मैं उस शाप को भी नहीं भूला हूँ, जो आपने मुझे दिया था। जब तक आप इलाहाबाद (प्रयागराज) में रहीं, मुझे देखते ही कहने लगती थीं- अरे, कम्बख्त मंटुआ, तूने मासूम पिल्लों की आँखें फोड़ी हैं, तेरी आँखें भी किसी दिन इसी तरह फूटेंगी। आप के इस शाप से मुझे अपने पाप का बोध हुआ और मैंने फैसला कर लिया कि मुझे जीवन में नेत्र-चिकित्सक ही बनना है। मेरी आँखें तो आप के शाप के कारण कभी-न-कभी फूटेंगी ही, पर उससे पहले मैं बहुत-सी आँखों को रोशनी दे जाऊँगा। उन बहुत-सी आँखों में से दो आँखें आप की भी होंगी, दादी अम्मा।'

डा.ॅ प्रभात की बातों में न जाने कैसा जादू था कि दादी की ही नहीं, हम सबकी आँखें भर आयीं। दादी तो इतनी भाव-विह्वल हो उठीं की उन्होंने डा.ॅ प्रभात को पास बुलाकर हृदय से लगा लिया | उनके सिर पर स्नेहपूर्वक हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, 'जीते रहो, मेरे लाल ! तुम्हारी आँखों की ज्योति हमेशा बनी रहे।'

इसके बाद दादी ने मुझसे कहा, 'अरे बबुआ, तेरा बालसखा आया है, इसकी खातिरदारी नहीं करेगा? जा, इसके लिए, अच्छी-सी मिठाई लेकर आ और सुन, इसने मेरी आँखों के लिए जो दवाई लिखी थी न, वह भी खरीद लाना।'

-रमेश उपाध्याय

ramesh../Images/ramesh%0.jpg

आधुनिक हिन्दी कहानीकारों में रमेश उपाध्याय का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनका जन्म 1 मार्च 1942 को एटा जिले के बधारी गाँव में हुआ था। इन्होंने पहले 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' तथा 'नवनीत' में उपसम्पादक का कार्य किया। इस समय ये व्यावसायिक अध्ययन महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य कर रहे हैं। 'शेष इतिहास' 'नदी के साथ', 'बदलाव से पहले' इनके प्रसिद्ध उपन्यास तथा 'पेपरवेट' नाटक विशेष उल्लेखनीय हैं।

शब्दार्थ

नेत्र-चिकित्सक = आँख का डॉक्टर। **लुप्त** = गायब। **स्मृति** = याद। **सहसा** = एकाएक, अचानक। **आक** = मदार। **अक्सर** = प्रायः। **विस्मयकारी** = आश्चर्य उत्पन्न करने वाला। **कुकृत्य** = बुरा कार्य। **जिज्ञासा** = जानने की इच्छा। **मासूम** = भोला, अबोध। **बालसखा** = बचपन का मित्र।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. आक के पौधे से गाढ़ा दूध निकलता है। अन्य किन-किन पेड़-पौधों से गाढ़ा दूध निकलता है, उनके नाम लिखिए।

2. अपने पास के किसी अस्पताल में जाकर किसी आँख के डॉक्टर से मिलिए और पूछिए कि उन्होंने यह पेशा क्यों चुना।

3. किसी दृष्टिहीन व्यक्ति से मिलिए, उससे बातचीत कीजिए और महसूस कीजिए कि उसकी कल्पना में दुनिया कैसी है।

4. यह जानकारी हम लोगों के लिए एकदम नयी और विस्मयकारी थी। वास्तव में ऐसा होता है या नहीं, यह देखने के लिए मंटू ने एक प्रयोग कर डाला था। ठंड के दिन थे और मुहल्ले में आवारा घूमने वाली एक कुतिया ने वकील साहब की कोठी के पीछे पड़ी सूखी टहनियों के ढेर के नीचे तीन पिल्ले दिये थे। पिल्ले बड़े सुन्दर थे। मैं और मंटू उनसे खेला करते थे। आक के दूध के भयंकर असर की जानकारी मिलने के अगले दिन जब मैं स्कूल से आकर खाना खाने के बाद मंटू के साथ खेलने गया तो मैंनेदेखा, मंटू आक के पौधों के पास बैठा है और उसके घुटनों में दबा पिल्ला कें-कें कर रहा है। दो पिल्ले पास ही कूँ-कूँ करते इधर-उधर भटक रहे थे। नजदीक जाकर मैंने देखा, हैरान रह गया। मंटू आक के पत्ते तोड़-तोड़कर उनका दूध पिल्ले की आँखों में डाल रहा था।

उपर्युक्त अनुच्छेद को ध्यान से पढ़िए और अपने सहपाठियों से पूछने के लिए चार प्रश्न बनाइए।

विचार और कल्पना

1. प्रायः कुछ लोग आपसे किसी बात के लिए मना करते होंगे- "ऐसा नहीं, ऐसे करो"- याद कीजिए और लिखिए कि ऐसा आपको कब-कब और क्यों कहा गया।

2. जब उस पिल्ले की आँखें चली गयी होंगी तो उसे क्या-क्या कठिनाइयाँ हुई होंगी। सोचिए और लिखिए।

3. माफी माँगना आसान होता है या माफ करना ? अपने विचार लिखिए।

4. बचपन में मंटू ने पिल्लों के साथ बहुत खराब काम किया था। इस विषय में आप के मन में जो विचार आ रहे हैं, उन्हें लिखिए।

कहानी से

1. डाॅ0 प्रभात का चेहरा किस दु:खदायी स्मृति से काला-सा हो गया ?

2. मंटू ने बचपन में क्या पाप किया था और उस पाप का प्रायश्चित उसने किस प्रकार किया ?

3. “पर मैं तो आँखों का डाॅक्टर हूँ दादी अम्मा! बुढ़ापे का इलाज मेरे पास कहाँ ?” डाॅ. प्रभात ने यह जवाब दादी के किस बात के उत्तर में दिया था ?

4. दादी डाॅ0 प्रभात से अपनी आँखों का इलाज क्यों नहीं करवाना चाहती थीं, फिर वह इलाज के लिए कैसे तैयार हुईं ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए-

नयी, ठंड, पाप, बूढ़ा।

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

टस से मस न होना, हृदय से लगाना, मुस्कान लुप्त होना।

3. ‘बच्चा’ शब्द में ‘पन’ प्रत्यय लगाकर ‘बचपन’ शब्द बना है जो भाववाचक संज्ञा है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों में ‘पन’ प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाइए-

लड़का, अपना, अनाड़ी, रूखा।

4. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के कारक बताइए-

(क) मैं तो आँखों का डाॅक्टर हूँ।

(ख) मैं तुम्हारी दवाई लिख रहा हूँ।

(ग) दूध पिल्ले की आँखों में डाल रहा था।

(घ) सब लोगों ने मंटू को बुरा-भला कहा।

यह भी करें-

1. चित्र देखकर वर्षा ऋतु में प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों को छात्र अपने शब्दों में लिखें।

2. अपने आसपास के लोगों को नेत्रदान के प्रति जागरूक करें। समीप स्थित चिकित्सालय में जाकर इससे संबंधित जानकारी प्राप्त करें एवं लोगों को बताएं।

पाठ 7

4Q5UFG

बाललीला

(कृष्ण भक्त कवियों में सूर तथा राम भक्त कवियों में तुलसीदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत पाठ में तुलसीदास तथा रसखान के द्वारा रचित बाललीला के कुछ पद लिये गये हैं।)

सूरदास

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायौ।

मोसों कहत मोल कौ लीन्हौं, तू जसुमति कब जायौ।

कहा करौं यहि रिसि के मारे, खेलन हौं नहिं जात।

पुनि-पुनि कहत कौन है माता, को है तेरो तात।

गोरे नन्द, जसोदा गोरी, तू कत स्यामल गात।

चुटकी दै दै ग्वाल नचावत, हँसत सबै मुसकात।

तू मोहीं कौ मारन सीखी, दाउहिं कबहुँ न खीझै।

मोहन-मुख रिस की ये बातैं, जसुमति सुनि-सुनि रीझै।

सुनहु कान्ह बलभद्र चबाई, जनमत ही कौ धूत।

‘सूर’ स्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।

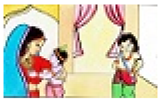

जसोदा हरि पालनैं झुलावै |

हलरावै, दुलराइ, मल्हावै, जोई सोइ कछु गावै |

मेरे लाल कौं आउ निंदरिया, काहैं न आनि सुवावै |

तू काहैं नहिं बेगिहिं आवै, तोकौ कान्ह बुलावै |

कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै |

सोवत जानि मौन ह्वै कै रहि, करि - करि सैन बतावै |

इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि, जसुमति मधुरैं गावै |

जो सुख सूर अमर - मुनि दुरलभ, सो नंद - भामिनी पावै |

सूरदास जी भक्तिकाल के प्रमुख कवि हैं | इनका जन्म सन् 1478 ई. में रुनकता नामक ग्राम (मथुरा) में हुआ था | इन्होने कृष्ण की बाललीलाओं एवं प्रेमलीलाओं का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है | ये वल्लभाचार्य के शिष्य थे | 'सूरसागर' नामक ग्रन्थ में इनके पद संकलित हैं | इनकी अन्य रचनाएँ हैं - 'सूर सारावली' तथा 'साहित्य लहरी' | इनका निधन सन् 1585 ई. में हुआ |

तुलसीदास

तन की दुति स्याम सरोरूह, लोचन कंज की मंजुलताई हरैं।

अति सुन्दर सोहत धूरि भरे, छवि भूरि अनंग की दूरि धरैं।।

दमकैं दतियाँ दुति दामिनि ज्यौं, किलकैं कल बाल विनोद करैं।

अवधेस के बालक चारि सदा, तुलसी मन-मन्दिर में बिहरैं।।

कबहूँ ससि माँगत आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिंब निहारि डरैं।

कबहूँ करताल बजाइ कै नाचत, मातु सवै मन मोद भरै।।

कबहूँ रिसिआइ कहैं हठि कै, पुनि लेत सोई जोहि लागि अरैं।

अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन-मन्दिर में बिहरैं।।

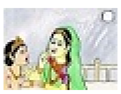

गोस्वामी तुलसीदास (1511.1623) हिन्दी साहित्य के महान कवि थे। इनका जन्म सोरों, कासगंज (एटा) में हुआ। आपने विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य 'रामचरित मानस' की रचना की। 'विनय पत्रिका' आपका अन्य महत्त्वपूर्ण काव्य हैं।

शब्दार्थ

खिझायौं=चिढ़ाना। **जायौ**=पैदा किया। **तात**=पिता। **खीझै**=डाँटना। **चबाई**=चुगली करने वाला। **धूत**=चालाक। **हलरावै**=बच्चों को हाथ में लेकर इधर-उधर हिलाना। **मल्हावै**=चुप कराना, पुचकारना। **बेगिहिं**=शीघ्र, जल्दी। **तोकौ**=तुमको। **फरकावै** = हिलाना, संचालित करना। **सैन** = इशारा, संकेत। **भामिनी**=पत्नी। **इति अंतर**=इसी बीच, इसी समय। **गात**=शरीर। **रिस**=क्रोध, गुस्सा। **रीझै**=अत्यन्त प्रसन्न। **गोधन की सौं**=गोवर्धन पर्वत की

सौगंध (कसम)। **हौं**=मैं। **अमर** =कभी न मरने वाला, देवता। **तन**=शरीर। **दुति**=चमक, सुन्दरता। **सरोरुह**=कमल। **कंज**=कमल। **मंजुलताई**=सुन्दरता। **लोचन**=नेत्र। **सोहत**=सुशोभित होना। **भूरि**=अधिक। **अनंग**=कामदेव। **दामिनी**=बिजली। **बिहरै**=केलि या क्रीड़ा करना, विहार (विचरण) करना। **ससि**= चन्द्रमा। **आरि**=जिद, हठ। **प्रतिबिम्ब**=परछाई, छाया। **निहारि**=देखकर। **करताल**=ताली बजाना। **मोद**=आनन्द, हर्ष। **जोहि लागि**=जिसके लिए।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1- बचपन में आपने भी माँ या दादी से कई लोरयाँ सुनी होगी। याद करके एक लोरी लिखिए।

2- नीचे बच्चों के बढ़ने की कुछ अवस्थायें दी गयी हंै, उन्हें क्रम से लगाइये-

- दौड़ कर चलना। - घुटनो के बल चलना। - पालने में लेटना

- स्कूल जाना। - गिरते पड़ते चलाना। - चारपाई/ चैकी पकड़ कर चलना।

विचार और कल्पना

1-अपने छोटे भाई बहन या छोटे बच्चों के क्रियाकलापों को देखकर आपके हृदय में जो भावों के चित्र उभरते हैं उन्हें अपने शब्दों में लिखिए ।

2-तुलसी दास ने राम का रूप वर्णन करते हुए उनके किन अंगों की उपमा कमल से दी है और क्यों ?

3-बालक राम चन्द्रमा को देखकर उसे खिलौना समझकर पाने का हठ करते हैं। चन्द्रमा को देखकर आपके मन में क्या विचार आता है ? लिखिए।

कविता से

1-यशोदा बालक श्रीकृष्ण को किस प्रकार सुला रही हैं ?

2-वह कौन सा सुख है जो देवताओं को भी दुर्लभ है ?

3-दाऊ क्या कहकर श्रीकृष्ण को चिढ़ाते हैं और यशोदा उन्हें क्या कहकर समझाती हैं ?

4-माँ यशोदा श्रीकृष्ण के मुख से कौन-कौन सी बातें सुनकर प्रसन्न हो रही हैं ?

5-निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिएः-

(क) कबहुँ पलक हरि मूँदि लेत हैं, कबहुँ अधर फरकावै।

(ख) सूर श्याम मोहि गोधन की सौं, हौं माता तू पूत।

(ग) अवधेस के बालक चारि सदा तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं।

(घ) कबहूँ रिसिआइ कहैं हठि कै, पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।

भाषा की बात

1- पद में आये निम्नलिखित शब्दों का तत्सम् रूप लिखिए।

कान्ह, स्याम, दुरलभ, दुति, अवधेस, ससि।

2- 'मंजुल' शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाकर भाव वाचक संज्ञा 'मंजुलता' बना है। इसी प्रकार

कुछ विशेषण शब्दों को खोज कर उन्हे भाववाचक संज्ञा में बदलिए।

3- बिम्ब शब्द में 'प्रति' उपसर्ग लगाकर 'प्रतिबिम्ब' शब्द बना है। इसी प्रकार 'प्रति' उपसर्ग लगाकर नये शब्द बनाइए।

पाठ 8

4QEQH4

स्कूल मुझे अच्छा लगा

(प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने वर्तमान स्कूलों की शिक्षा-पद्धति पर करारी चोट करते हुए उसे बच्चों के लिए व्यावहारिक बनाने की बात कही है।)

जब तोत्तो-चान ने नये स्कूल का गेट देखा तो वह ठिठक गयी। अब तक जिस स्कूल में वह जाती रही थी उसका गेट सीमेन्ट के दो बड़े खम्भों का बना था और गेट पर बड़े-बड़े अक्षरों में स्कूल का नाम लिखा था, पर इस स्कूल का गेट तो पेड़ के दो तनों का था। उन पर टहनियाँ और पत्ते भी थे।

'अरे, यह गेट तो बढ़ रहा है,' तोत्तो-चान ने कहा। 'यह बढ़ता जाएगा, और एक दिन शायद टेलीफोन के खम्भे से भी ऊँचा हो जाएगा।'

गेट के ये दो खम्भे असल में पेड़ ही थे, जिनकी जड़ें मौजूद थीं। कुछ और पास पहुँचने पर तोत्तो-चान ने अपनी गर्दन टेढ़ी कर स्कूल का नाम पढ़ना चाहा। टहनी पर टँगी नाम की तख्ती भी हवा से टेढ़ी हो गयी थी।

'तो-मो-ए गा-कु-एन।'

तोत्तो-चान माँ से पूछना चाहती थी कि तोमोए का मतलब क्या होता है, तभी अचानक उसे एक चीज दिखी और उसे लगा जैसे वह सपना देख रही हो। वह बैठ गयी ताकि झाड़ियों के बीच से अच्छी तरह देख पाए। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

'माँ, क्या वह सचमुच की रेलगाड़ी है? देखो, वहाँ स्कूल के मैदान में।'

स्कूल के कमरों की जगह रेलगाड़ी के छह बेकार डिब्बे काम में लाये जाते थे। तोत्तो-चान को लगा,ऐसा तो सपनों में ही होता होगा। रेलगाड़ी में स्कूल!

डिब्बों की खिड़कियाँ सूरज की प्रातःकालीन धूप में चमक रही थीं। लेकिन झाड़ियों के बीच से झाँकती गुलाबी गालों वाली एक नन्हीं लड़की की आँखें और भी अधिक चमक रही थीं |

क्षण-भर बाद ही तोत्तो-चान खुशी से चिल्लायी और रेलगाड़ी के डिब्बे की ओर भागी। भागते-भागते मुड़कर ही माँ से कहा,'आओ, जल्दी करो। बिना हिले-डुले खड़ी इस गाड़ी में हम झट से चढ़ जाते हैं।'

'तुम अभी अन्दर नहीं जा सकती,' माँ ने उसे रोकते हुए कहा। 'ये कक्षाएँ हैं और तुम तो अभी स्कूल में दाखिल तक नहीं हुई हो। अगर सचमुच इस ट्रेन में चढ़ना चाहती हो तो तुम्हें हेडमास्टर जी के सामने कायदे से पेश आना होगा। अब हम उनसे मिलने जाएगे। अगर सब कुछ ठीक रहा तो तुम इस स्कूल में आ सकोगी। समझी?'

माँ ने कहना तो चाहा कि प्रश्न यह नहीं है कि तुम्हें स्कूल अच्छा लगता है या नहीं, बल्कि यह है कि हेडमास्टर जी को तुम अच्छी लगती हो या नहीं, पर उसने कुछ कहा नहीं। माँ ने उसका हाथ थाम लिया और वे हेडमास्टर जी के दफ्तर की ओर बढ़ने लगीं।

हेडमास्टर जी का दफ्तर रेलगाड़ी के डिब्बे में नहीं था। वह दाहिने हाथ की ओर एक मंजिले भवन में था। वहाँ पहुँचने के लिए सात अर्ध-गोलाकार पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़नी होती थीं।

तोत्तो-चान माँ से अपना हाथ छुड़ा कर सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। अचानक वह रुकी और मुड़ी।

'क्या हुआ?' माँ ने पूछा, मन में भय था कि कहीं तोत्तो-चान ने स्कूल के बारे में अपना विचार न बदल लिया हो।

सबसे ऊपरी सीढ़ी पर खड़ी तोत्तो-चान गम्भीरता से फुसफुसायी, 'जिनसे हम मिलने जा रहे है, वे जरूर स्टेशन मास्टर होंगे।'

माँ धीरज वाली थी। साथ ही, मजाक करना भी आता था। वह झुकी, अपना चेहरा तोत्तो-चान के चेहरे के पास ले गयी और फुसफुसायी, 'क्यों?'

तोत्तो-चान ने धीरे से कहा, 'तुमने कहा था कि वे हेडमास्टर हैं, पर अगर वे इन सारे रेलगाड़ी के डिब्बों के मालिक हैं तो वे स्टेशन मास्टर हुए न।'

माँ को मानना पड़ रहा था कि रेलगाड़ी के डिब्बों में स्कूल चलाना कुछ अनूठी बात थी, पर फिलहाल समझाने का समय नहीं था। माँ ने सिर्फ इतना ही कहा,'तुम उनसे ही क्यों नहीं पूछ लेती? पर..... तुम अपने डैडी के बारे में क्या सोचती हो? वे वायलिन बजाते हैं, और उनके पास ढेरों वायलिन हैं, पर इससे अपना घर वायलिन की दुकान तो नहीं बन जाता। नहीं?'

'हाँ, दुकान तो नहीं बन जाता अपना घर।' तोत्तो-चान ने माँ का हाथ थामते हुए सहमति जतायी।

हेडमास्टर जी

जब माँ और तोत्तो-चान दफ्तर में घुसीं तो कुर्सी पर बैठे सज्जन उठ खड़े हुए।

उनके सिर पर बाल कम हो चले थे। कुछ दाँत भी गायब थे, पर चेहरा उनका स्वस्थ लगता था। बहुत लम्बे भी नहीं थे वे सज्जन, पर उनके कन्धों व बाहों में मजबूती लगती थी।

जल्दी से झुककर तोत्तो-चान ने नमस्ते किया और तब उत्साह से पूछा,'आप स्कूल मास्टर हैं या स्टेशन मास्टर?'

माँ अकुलायी, पर इसके पहले कि वह कुछ सफाई देती, सज्जन हँस पड़े और बोले, 'मैं इस स्कूल का हेडमास्टर हूँ।'

तोत्तो-चान की खुशी का ठिकाना न रहा। 'मुझे बड़ी खुशी हुई', उसने कहा,'क्योंकि मैं अब आपसे कुछ माँगना चाहती हूँ। मैं आपके स्कूल में पढ़ना चाहती हूँ।'

हेडमास्टर जी ने तोत्तो-चान को कुर्सी पर बैठने को कहा, फिर माँ की ओर मुड़कर वे बोले, 'आप घर जा सकती हैं, मैं तोत्तो-चान से बात करना चाहता हूँ।'

तोत्तो-चान को थोड़ी-सी उलझन हुई, पर उसने सोच कर देखा तो लगा कि सामने बैठे सज्जन से बात करना उसे बुरा नहीं लगेगा।

'तो मैं इसे आपके पास छोड़े जा रही हूँ।' माँ ने कहा और दफ्तर से निकलकर दरवाजा बन्द कर दिया।

हेडमास्टर जी ने एक कुर्सी खींची और तोत्तो-चान की कुर्सी के सामने रखी। जब दोनों आमने-सामने बैठ गये तो उन्होंने कहा,'अब तुम मुझे अपने बारे में सब कुछ बताओ। कुछ भी, जो तुम बताना चाहो, बताओ।'

'जो मुझे अच्छा लगे वह बताऊँ?' तोत्तो-चान ने सोचा था कि वे प्रश्न करेंगे और उसे उत्तर देने होंगे, पर जब उससे यह कहा गया कि वह किसी भी चीज के बारे में बोल सकती है तो उसे बड़ा अच्छा लगा। वह तुरन्त बोलने लगी। उसने जो कुछ कहा, वह था तो काफी गड्डमड्ड पर वह अपनी पूरी ताकत से बोलती गयी। उसने हेडमास्टर जी को बताया कि जिस टे्रन पर चढ़कर वे आये थे वह कितनी तेजी से चली थी, उसने बताया कि उसने

टिकट बाबू से कहा था कि वे उससे टिकट न लें, पर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी, उसने बताया कि उसके दूसरे स्कूल की शिक्षिका कितनी सुन्दर है, अबाबील का घोंसला कैसा है, उसका भूरा कुत्ता रॉकी कैसे-कैसे करिश्मे दिखा सकता है, उसने बताया कि वह कैंची मुँह में डालकर चलाया करती थी, पर उसकी शिक्षिका ने उसे ऐसा करने से मना किया था, क्योंकि उन्हें डर था कहीं तोत्तो-चान की जीभ न कट जाये, पर वह फिर भी वैसा करती रही, उसने बताया कि वह नाक कैसे सिनक लेती है, क्योंकि उसकी बहती नाक अगर माँ देख लेती है तो उसे डाँट लगाती है, उसने बताया कि पापा कितने अच्छे तैराक हैं, और तो और वे गोता भी लगा सकते हैं। वह लगातार बोलती गयी। हेडमास्टर जी कभी हँसते, कभी सिर हिलाते और कहते,'अच्छा फिर?' तोत्तो-चान इतनी खुश थी कि वह आगे बोलती जाती। बोलते-बोलते आखिर उसके पास बोलने को कुछ भी नहीं बचा। अब उसका मुँह बन्द था, वह अपने दिमाग पर जोर डाल रही थी। सोच रही थी कि आगे क्या कहें?

'मुझे और कुछ बताने को तुम्हारे पास क्या कुछ भी नहीं है?' हेडमास्टर जी ने पूछा।

ऐसे में चुप रहना कितने शर्म की बात है, तोत्तो-चान ने सोचा। कितना अच्छा मौका है। क्या वह किसी भी चीज के बारे में और कुछ भी नहीं बता सकती? उसने मन ही मन सोचा, अचानक उसे कुछ सूझा।

हाँ, वह अपनी फ्रॉक के बारे में बताएगी जो उसने पहन रखी थी। वैसे उसके ज्यादातर कपड़े माँ खुद ही सीती थी, पर यह फ्रॉक दुकान से खरीदी हुई थी। जब भी वह दोपहर के बाद स्कूल से घर लौटती थी तो अक्सर उसके कपड़े फटे होते थे। माँ को समझ ही नहीं आता कि वे ऐसे कैसे फटे होंगें। उसने हेडमास्टर को बताया कि ऐसा कैसे हो जाता था। असल में उसके कपड़े इसलिए फटते थे क्योंकि वह दूसरों के बगीचों में झाड़ियों के बीच में से घुसती थी। साथ ही, वह खाली जमीन के चारों ओर लगे कँटीले तारों के नीचे से भी घुसती थी। इसलिए आज सुबह जब तैयार होने की बारी आयी तो माँ की सिली हुई सारी फ्रॉकें फटी निकलीं और उसे यह खरीदी हुई फ्रॉक पहननी पड़ी। फ्रॉक पर लाल और सलेटी रंग के चेक बने थे, कपड़ा जर्सी का है। फ्रॉक इतनी बुरी भी नहीं है, पर माँ को

लगता है कि कालर पर कढ़े लाल फूल फूहड़ हैं। 'माँ को कालर पसन्द नहीं है,' तोत्तो-चान ने कालर उठाकर हेडमास्टर जी को दिखाया।

लेकिन इसके बाद खूब सोचने पर भी तोत्तो-चान को कुछ और न सूझा। उसे इस बात से कुछ दुःख हुआ, लेकिन तभी हेडमास्टर जी उठ खड़े हुए। उन्होंने अपना प्यार भरा बड़ा-सा हाथ उसके सिर पर रखा और कहा, 'अब तुम इस स्कूल की छात्रा हो।'

ठीक ये ही शब्द थे उनके। और उस समय तोत्तो-चान को लगा कि वह जीवन में पहली बार किसी ऐसे व्यक्ति से मिली है जो उसे सच में अच्छा लगता हो। असल में इससे पहले किसी ने उसे इतनी देर बोलते नहीं सुना था। और तो और, उसे सुनते समय हेडमास्टर जी ने एक बार भी जम्हाई नहीं ली थी, न ही उनके चेहरे पर अरुचि का भाव आया था। शुरू से अन्त तक उन्हें सुनना उतना ही अच्छा लगा था, जितना कि उसे बोलना।

इस दिन से पहले या उसके बाद किसी वयस्क ने तोत्तो-चान की बात इतने लम्बे समय तक नहीं सुनी। और पिछली शिक्षिका को यह जानकर भी आश्चर्य होता कि एक सात साल की लड़की लगातार चार घंटे बोलने का मसाला भी जुटा सकती है।

हेडमास्टर जी के सामने वह अपने आपको सुरक्षित महसूस कर रही थी। वह बहुत खुश थी। वह हमेशा-हमेशा के लिए उनके साथ ही रहना चाहती थी।

ये भावनाएँ थीं तोत्तो-चान की उस पहले दिन हेडमास्टर सोसाकु कोबायाशी के बारे में। सौभाग्य से हेडमास्टर जी की भावनाएँ भी उसके प्रति ठीक ऐसी ही थी।

दोपहर का भोजन

अब हेडमास्टर जी तोत्तो-चान को वह जगह दिखाने ले गये जहाँ बच्चे दोपहर का खाना खाते थे। 'हम ट्रेन में नहीं खाते,' उन्होंने समझाया, 'बल्कि सभागार में खाते हैं।' सभागार उन सीढ़ियों के ऊपर था जिन्हें चढ़कर तोत्तो-चान पहले आयी थी। जब वे वहाँ पहुँचे थे, बच्चे हल्ला करते हुए मेज व कुर्सियाँ उठा-खिसका कर उन्हें एक गोल घेरे में लगा रहे थे। वे सभागार के कोने में खड़े बच्चों को देखते रहे। तोत्तो-चान ने हेडमास्टर जी के जैकेट का किनारा खींचा और पूछा,'बाकी बच्चे कहाँ हैं?'

‘बस इतने ही हैं, जितने यहाँ मौजूद हैं।’ उन्होंने उत्तर दिया।

‘बस इतने ही?’ तोत्तो-चान को विश्वास नहीं हुआ। उसके पिछले स्कूल की एक कक्षा में जितने बच्चे थे, केवल उतने बच्चे मौजूद थे।

‘आपका मतलब है कि पूरे स्कूल में करीब पचास ही बच्चे हैं?’

‘हाँ, बस इतने ही।’ हेडमास्टर जी ने कहा।

यहाँ पहले वाले स्कूल से हर चीज अलग है, तोत्तो-चान सोचने लगी।

जब सारे बच्चे बैठ गये तो हेडमास्टर जी ने जानना चाहा कि हरएक बच्चा खाने में समुद्र से और कुछ पहाड़ से लाया है या नहीं।

‘हाँ जी।’ बच्चों ने अपने-अपने डिब्बे खोलते हुए एक स्वर में कहा।

‘जरा देखें तो क्या-क्या लाये हो तुम लोग’, हेडमास्टर जी ने मेजों के घेरे में घूमते हुए कहा। वे हरएक बच्चे के डिब्बे में झाँक रहे थे, और बच्चे खुशी से किलकारियाँ मार रहे थे।

‘वाह, क्या मजा है’, तोत्तो-चान ने सोचा, ‘पर ‘कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से’ का क्या मतलब होगा।’ कितना अलग है यह स्कूल, पर है अच्छा। उसे तो इससे पहले पता ही न था कि स्कूल में दोपहर का खाना भी इतने आनन्द की बात हो सकती थी।

हेडमास्टर जी हर मेज पर रुक कर डिब्बों में झाँक रहे थे और दोपहर की हल्की धूप उनके कन्धों को नहला रही थी।

तोत्तो-चान का स्कूल जाना

हेडमास्टर के यह कहने के बाद से ही कि ‘अब तुम इस स्कूल की छात्रा हो’ तोत्तो-चान बेसब्री से अगले दिन का इन्तजार कर रही थी। इस सप्ताह से उसने कभी किसी दिन का इन्तजार नहीं किया था। अकसर माँ को उसे सुबह स्कूल के लिए बिस्तर छुड़वाने में भी

परेशानी होती थी, पर उस दिन वह दूसरों से पहले उठ कर तैयार हो गयी और अपना बस्ता पीठ पर बाँधे इन्तजार करने लगी।

माँ को तो बहुत कुछ करना था। तोत्तो-चान को नाश्ता देकर वह उसका लंच-बाक्स बनाने में जुट गयी। उसमें 'कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से' भी तो डालना था। माँ ने रेलगाड़ी के पास को एक प्लास्टिक की थैली में डाला और एक डोरी से उसे तोत्तो-चान के गले में लटका दिया ताकि वह खो न जाय।

'अच्छी लड़की बनना'।

'बिल्कुल', तोत्तो-चान ने जूते पहने और सामने का दरवाजा खोला। तब वह मुड़ी और शिष्टता से झुककर बोली, 'अच्छा, गुड-बाय।'

तोत्तो-चान को यों निकलते देख माँ की आँखें बरबस भर आयीं। कितना कठिन था यह मानना कि उसकी चुलबुली बिटिया, जो आज इतनी खुशी से इस स्कूल में जा रही है, हाल ही में एक स्कूल से निकाली जा चुकी थी। उसने दिल से प्रार्थना की-इस बार सब शुभ हो।

- तेत्सुको कुरोयानागी

तेत्सुको कुरोयानागी जापानी लेखिका हैं। इनका जन्म 9 अगस्त 1933 को टोकियो में हुआ था। इनके पिता एक सम्मानित वायलिन वादक थे। इन्होंने टोकियो कालेज से ग्रेजुएशन किया। इनकी पुस्तक 'तोत्तोचान' विश्व-प्रसिद्ध कृति है, जिसका दुनिया की अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है। यहाँ दिया गया पाठ इस पुस्तक का ही एक अंश है |

शब्दार्थ

कायदा=नियम, ढंग, विधान। **फुसफुसाना**=धीमी आवाज में बोलना। **वायलिन**=एक तरह का वाद्ययन्त्र। **गड्डमड्ड**=अनाप-सनाप, मिला हुआ। **अबाबील**=एक छोटी चिड़िया, जो प्रायः खंडहरों में घोंसला बनाती है। **करिश्मा**=करामात, चमत्कार। **जम्हाई**=उबासी, (ऊब, आलस्य आदि से होने वाली शरीर की एक सहज क्रिया)। **बेसब्री**=अधीरता।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर अपने स्कूल के विषय में कुछ वाक्य लिखिए -

(क) स्कूल का भवन

(ख) तुम्हारी कक्षा और बच्चे

(ग) हैंडपम्प

(घ) हेडमास्टर

(ङ) शिक्षक-शिक्षिका

(च) खेल का मैदान

(छ) दोपहर का भोजन

(ज) पढ़ना-लिखना

2. अब लिखिए कि आप इनमें क्या-क्या बदलाव करना चाहते हैं ?

3. अपने स्कूल भवन का चित्र बनाइए।

विचार और कल्पना

जब आप पहली बार स्कूल में पढ़ने आये थे तो कैसा लगा था? अपने अनुभव लिखकर अध्यापक को दिखाइए।

कहानी से

1. (क) नये स्कूल का गेट कैसा था और गेट को देखते ही तोत्तो-चान ने क्या कहा?

(ख) तोत्तो-चान को वह स्कूल अच्छा क्यों लगा?

(ग) तोत्तो-चान ने स्कूल के हेडमास्टर को स्टेशन मास्टर क्यों कहा?

(घ) तोत्तो-चान ने हेडमास्टर से अपनी फ्राॅक के बारे में क्या-क्या बताया?

(ड.) आपके विचार में 'कुछ समुद्र से और कुछ पहाड़ से' का क्या मतलब हो सकता है?

(च) तोत्तो-चान को स्कूल जाते देख माँ की आँखें क्यों भर आयीं ?

2. निम्नलिखित प्रश्न को पढ़िए और सही विकल्प पर सही का चिह्न लगाइए-

तोत्तो-चान ने स्कूल को अच्छा कहा, क्योंकि-

(क) स्कूल रेलगाड़ी के डिब्बे में चलता था।

(ख) हेडमास्टर ने उसकी पूरी बात सुनी।

(ग) दोपहर के भोजन के समय सभी बच्चे मिल-बाँटकर भोजन करते थे।

(घ) उपर्युक्त सभी।

3. स्कूल के मुखिया को हेडमास्टर कहते हैं और स्टेशन के मुखिया को स्टेशन मास्टर। नीचे लिखे कार्यस्थलों के मुखिया को क्या कहते हैं-

पोस्ट आॅफिस, बैंक, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, पुस्तकालय, कालॅेज, कारखाना |

भाषा की बात

1. आप जानते हैं, विरामचिह्नों के बिना वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं होता। निम्नांकित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उपयुक्त विरामचिह्न लगाइए-

चिड़ीमार की बीबी ने डरे हुए तोते को हाथ में लिया और उसे सहलाते हुए बोली कितना छोटा तोता है इसका तो एक निवाला भी नहीं होगा इसे मारना फिजूल है हीरामन ने कहा माँ मुझे मत मारो राजा को बेच दो तुम्हें बहुत पैसे मिलेंगे। तोते को बोलते हुए सुनकर वे हक्के-बक्के रह गये थोड़ी देर बाद अचरज से उबरे तो पूछा कि वे उसकी कितनी कीमत माँगंे हीरामन ने कहा यह मुझपर छोड़ दो राजा कीमत पूछे तो कहना कि तोता अपनी कीमत खुद बतायेगा।

2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए-

अचानक, सचमुच, बेकार, दफ्तर, गम्भीरता।

3. अर्थ के आधार पर शब्दों के दो भेद हैं- एकार्थी और अनेकार्थी।

जिन शब्दों का प्रयोग सामान्य रूप में एक ही अर्थ के लिए होता है, उन्हें एकार्थी कहते हैं, जैसे- छत, पेन्सिल, पीला।

कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी कहते हैं, जैसे- अम्बर। अम्बर के दो अर्थ होते हैं- आकाश और वस्त्र।

नीचे दिये गये शब्द-समूह में से एकार्थी तथा अनेकार्थी शब्दों को अलग-अलग छाँटकर लिखिए-

दरवाजा, दवात, खिड़की, अंक, पत्र, मान, सोना, दल, कुल, मेज, नाना, कुर्सी, पद, वर्ण, वर, कक्षा, पक्ष।

4. नीचे लिखे शब्दों में से भाववाचक संज्ञा शब्दों को अलग छाँटकर लिखिए-

स्कूल, अच्छाई, चमक, कोमलता, थकावट, बुराई, दरवाजा, गुलाबीपन, कठोरता, सहजता, सहनशील, समानता, भावुकता।

5. इस पाठ से आपने क्या नया सीखा ?

6. इस पाठ के आधार पर दो सवाल आप भी बनाइए।

7. लेखिका ने इस पाठ का नाम स्कूल मुझे अच्छा लगा' रखा है। आपको इस पाठ का नाम रखना

हो तो क्या रखेंगे और क्यों ?

यह भी करें

1. नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखें। बच्चे और उसके पिता के बीच में कृषि तथा पर्यावरण को लेकर क्या-क्या बातचीत हो रही है। पुस्तिका में अपने शब्दों में लिखिए।

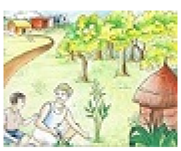

2.आपके घर और विद्यालय के आसपास कुछ ऐसे बच्चे होंगे जो विद्यालय नहीं जाते होंगे, उनके अभिभावक से मिलें और विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रेरित करें।

पाठ 9

4QNLIR

मेघ बजे, फूले कदम्ब

(प्रस्तुत कविताओं में कवि ने बादलों की उमड़-घुमड़ एवं उनकी ध्वनि का स्वभाविक चित्रण एवं सावन में फैली हरियाली तथा फूले हुए कदम्ब वृक्ष का सजीव चित्रण किया है।)

मेघ बजे

धिन-धिन-धा धमक-धमक

मेघ बजे

दामिनि यह गयी दमक

मेघ बजे

दादुर का कंठ खुला

मेघ बजे

धरती का हृदय धुला

मेघ बजे

पंक बना हरिचन्दन

मेघ बजे

हल का है अभिनन्दन

मेघ बजे।

धिन-धिन-धा....

फूले कदम्ब

फूले कदम्ब

टहनी-टहनी में कन्दुक सम झूले कदम्ब

फूले कदम्ब।

सावन बीता

बादल का कोप नहीं रीता

जाने कब से वो बरस रहा

ललचाई आँखों से नाहक

जाने कब से तू तरस रहा

मन कहता है, छू ले कदम्ब

फूले कदम्ब

फूले कदम्ब।

-नागार्जुन

इस कविता के रचयिता श्री 'नागार्जुन' हैं। इनका पूरा नाम वैद्यनाथ मिश्र 'नागार्जुन' है। इनका जन्म सन् 1910 ई0 में बिहार के दरभंगा जिले में हुआ था। इनकी रचनाओं में त्रस्त और पीड़ित मानव के प्रति विशेष सहानुभूति है। 'युगधारा', 'प्यासी पथराई आँखें', 'सतरंगी पंखों वाली' इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं। 05 नवम्बर सन् 1998 में इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ

दामिनी = बिजली। **दादुर** = मेढक। **पंक** = कीचड़। **हरिचन्दन** = पीला चन्दन, केशर। **अभिनन्दन** = स्वागत। **कन्दुक** = गेंद। **रीता** = खाली होना, समाप्त होना। **नाहक** = व्यर्थ।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1.चित्र देखिए और बताइए कि वर्षा ऋतु में गाँव में रहने वालों के समक्ष क्या-क्या समस्याएँ हो सकती हैं और उनके निदान के लिए क्या उपाय हो सकते हैं।

2.आपने कविता में पढ़ा-धिन-धिन- धा, धमक-धमक मेघ बजे। यह तबले का एक बोल है, इसी तरह अन्य वाद्ययंत्रों के भी बोल होते हैं। पता लगाएँ- ढोल, सितार, बाँसुरी, हारमोनियम के कौन-कौन से बोल होते हैं।

विचार और कल्पना

1. निम्नांकित कविता को ध्यान से पढ़िए-

बिजली चमकी कड़-कड़-कड़।

बादल गरजा गड़-गड़-गड़।

पानी बरसा तड़-तड़-तड़।

नानी बोली पढ़-पढ़-पढ़।

यह कविता आपके ही एक साथी द्वारा लिखी गयी है। आप भी कविता लिख सकते हैं। नीचे लिखे शब्दों की मदद से ऐसी ही एक कविता की रचना कीजिए-

धमक, चमक, दमक, महक।

2. बताइए, निम्नांकित ऋतुओं में आप अपने आस-पास क्या-क्या परिवर्तन देखते हैं-

(क) बरसात में (ख) जाड़े में (ग) गर्मी में

कविता से

1. (क) 'धरती का हृदय धुला' और 'दादुर का कंठ खुला' से क्या आशय है।

(ख) ”जाने कब से तू तरस रहा“ पंक्ति में 'तू' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(ग) कवि ने कदम्ब के फूलों की तुलना 'कन्दुक' से क्यों की है?

2. इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) पंक बना हरिचन्दन

हल का है अभिनन्दन

(ख) बादल का कोप नहीं रीता

जाने कब से वो बरस रहा

ललचाई आँखों से नाहक

जाने कब से तू तरस रहा

भाषा की बात

1. निम्नांकित शब्दों के तुकान्त शब्द कविता से छाँटकर लिखिए-

खुला, हरिचन्दन, दमक, रीता, बरस, झूले।

2. कविता की निम्नांकित पंक्तियों को पढ़िए-

‘ललचाई आँखों से नाहक

जाने कब से तू तरस रहा’

इनमें ‘नाहक’ शब्द का प्रयोग हुआ है। यह शब्द अरबी भाषा का है, जिसमें ‘ना’ उपसर्ग लगा हुआ है। ‘ना’ उपसर्ग रहित (नहीं) के अर्थ में प्रयोग होता है। इसी तरह के और भी शब्द हैं जैसे- नासमझ.............। आप इस प्रकार के चार शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए-

पाठ 10

4QXHKE

सत्साहस

(संसार में कोई भी कार्य बिना साहस के नहीं होता किन्तु प्रत्येक साहस को सच्चे साहस की संज्ञा नहीं दी जा सकती। साहस की विभिन्न श्रेणियाँ होती हैं जिन्हें इस निबन्ध में समझाया गया है।)

संसार के काम-बड़े अथवा छोटे-साहस के बिना नहीं होते। संसार के सभी महापुरुष साहसी थे। बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाये किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता। अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में जागरूक हैं। आल्प्स पर्वत के विशाल शिखरों को पार करने वाले हनीवल और नेपोलियन का नाम वीरवरों के नामों के साथ केवल उनके अतुलनीय साहस के कारण ही लिया जाता है। यह साहस का ही प्रभाव था जिसने तैमूर, बाबर, शिवाजी, क्रोमवेल, रणजीत सिंह और संग्राम सिंह जैसे सामान्य व्यक्तियों को कुछ से कुछ कर दिया।

सत्साहसी के लिए केवल साहस प्रकट करना ही अभीष्ट नहीं। सूरवंश के क्रूरकर्मा बादशाह मुहम्मद आदिल पर, भरे दरबार में कितने ही सिरों और धड़ों को धरणी पर गिरा कर, एक मुसलमान युवक ने आक्रमण करने का असीम साहस प्रकट किया था। कारण यह था कि बादशाह ने उसके पिता की जागीर जब्त कर ली थी। इसी से उक्त युवक ने इतने साहस का काम किया। युवक मारा गया। उसके साहस और उसकी निर्भीकता का कुछ ठिकाना नहीं है परन्तु क्रोधान्ध होकर स्वार्थवश ऐसा साहस करने से युवक का यह कार्य किसी प्रकार प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार का साहस चोर और डाकू

भी कभी-कभी कर गुजरते हैं। राजा -महाराजा भी अपनी कुत्सित इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए कभी-कभी इससे भी बढ़कर साहस के काम कर डालते हैं। ऐसा साहस नीच श्रेणी का साहस है।

मध्यम श्रेणी का साहस प्रायः शूरवीरों में पाया जाता है। वह उनके उच्च विचार और निर्भीकता को भली-भाँति प्रकट करता है। इस प्रकार के साहस वाले मनुष्यों में बेपरवाही और स्वार्थहीनता की कमी नहीं होती परन्तु उनमें ज्ञान की कमी अवश्य पायी जाती है। अकबर बादशाह के पास दो राजपूत नौकरी के लिए आये। अकबर ने उनसे पूछा कि तुम क्या काम करते हो? वे बोले, "जहाँपनाह, करके दिखलाएँ या केवल कहकर?" बादशाह ने करके दिखलाने की आज्ञा दी। राजपूतों ने घोड़ों पर सवार होकर अपने-अपने बरछे सँभाले और अकबर के सामने ही एक-दूसरे पर वार करने लगे। थोड़ी देर बाद वे एक दूसरे पर बेतरह टूट पड़े। बादशाह के देखते-देखते दोनों घोड़ों से नीचे आ गिरे और मर कर ठंडे हो गये। इस प्रकार का साहस निःसन्देह प्रशंसनीय है, परन्तु ज्ञान की आभा की कमी के कारण निस्तेज-सा प्रतीत होता है।

सर्वोच्च श्रेणी के साहस के लिए हाथ-पैर की बलिष्ठता आवश्यक नहीं धन, मान आदि का होना भी आवश्यक नहीं। जिन गुणों का होना आवश्यक है; वे हैं - हृदय की पवित्रता तथा उदारता और चरित्र की दृढ़ता। ऐसे गुणों की प्रेरणा से उत्पन्न हुआ साहस तब तक पूर्णतया प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता, जब तक उसमें एक और गुण सम्मिलित न हो। इस गुण का नाम है 'कर्तव्यपरायणता'। कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए। इस विचार से शून्य होने पर कोई भी मनुष्य, फिर चाहे उसके और विचार कैसे ही उन्नत क्यों न हों, मानव जाति की कुछ भी भलाई नहीं कर सकता। अपने कर्तव्य से अनभिज्ञ मनुष्य कभी भी परोपकारपरायण या समाज-हित-चिन्तक नहीं कहा जा सकता। बिना इस विचार के मनुष्य अपने परिवार--नहीं-नहीं-अपने शरीर अथवा अपनी आत्मा का --- उपकार नहीं कर सकता। कर्तव्य-ज्ञान-शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं, पशु समझना चाहिए।

उच्चकोटि के साहस के लिए कर्तव्यपरायण बनना परमावश्यक है। कर्तव्यपरायण व्यक्ति के हृदय में यह बात अवश्य होनी चाहिए कि जो कुछ मैंने किया, वह केवल अपना

कर्तव्य किया। मारवाड़ के मौरूदा गाँव का जमींदार बुद्धन सिंह किसी झगड़े के कारण स्वदेश छोड़कर जयपुर चला गया और वहीं बस गया। थोड़े ही दिनों बाद मराठों ने मारवाड़ पर आक्रमण किया। यद्यपि बुद्धन मारवाड़ को बिल्कुल ही छोड़ चुका था तथापि शत्रुओं के आक्रमण का समाचार पाकर और मातृभूमि को संकट में पड़ा हुआ जानकर उसका रक्त उबल पड़ा। स्वदेश-भक्ति ने उसे बतला दिया, 'यह समय ऐसा नहीं है कि तू अपने घरेलू झगड़ों को याद करे। उठ, और अपना कर्तव्य पालन कर।'

इस विचार ने उसे इतना मतवाला कर दिया कि वह अपने एक सौ पचास साथियों को लेकर, बिना किसी से पूछे जयपुर से तुरन्त चल पड़ा। देश भर में मरहठे फैले हुए थे। उनके बीच में होकर निकल जाना कठिन काम था, परन्तु बुद्धन के साहस के सामने उस कठिनता को मस्तक झुकाना पड़ा। एक दिन अपने मुट्ठी भर साथियों को लिये वह मरहठों के बीच से होकर निकल ही गया। इस तरह निकल जाने से उसके बहुत से साथी रणक्षेत्र रूपी अग्नि-कुंड में आहुत हो गये। जीवित बचे हुओं में बुद्धन सिंह भी था। वह समय पर अपने देश और राजा की सेवा के लिए पहुँच गया।

इस घटना को हुए बहुत दिन हो गये, परन्तु आज तक वीर राजपूत अपने कर्तव्यपरायण वीर बुद्धन की वीरता को सम्मानपूर्वक याद करते हैं। राजपूत महिलाएँ आज भी बुद्धन और उसके वीर साथियों की वीरता के गीत गाती हैं। मौरूदा में आज भी एक स्तम्भ उन वीरों की यादगार में खड़ा हुआ, इतिहासवेत्ताओं के हृदय को उत्साहित करता है।

इन गुणों के अतिरिक्त सत्साहसी के लिए स्वार्थ-त्याग भी परमावश्यक है। इस संसार में हजारों ऐसे काम हुए हैं, जिनको लोग बड़े उत्साह से कहते और सुनते हैं। उन कामों को वे बहुत अच्छा समझते हैं और उनके करने वालों को सराहते हैं, परन्तु उन कामों में थोड़े से ही ऐसे हैं, जो स्वार्थ से खाली हों। समय पड़ने पर अपनी जान पर खेल जाने अथवा असामान्य साहस प्रकट करने में सदा आत्मोत्सर्ग नहीं होता क्योंकि बहुधा ऐसा काम करने वाले-यश के लोभ से, अपने नाम को कलंकित होने से बचाने के इरादे अथवा लूटमार के द्वारा धनोपार्जन करने की इच्छा से ऐसे मदान्ध हो जाया करते हैं कि वे अपने मतलब के लिए कठिन काम करने में संकोच नहीं करते।

सत्साहसी व्यक्ति में एक गुप्त शक्ति रहती है, जिसके बल से वह दूसरे मनुष्य को दुःख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है। धर्म, देश, जाति, और परिवार वालों के ही लिए नहीं, किन्तु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह हमारे संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है। अपने प्राणों की वह लेश मात्र भी परवाह नहीं करता। हर प्रकार के क्लेशों को प्रसन्नतापूर्वक सहता और स्वार्थ के विचारों को वह फटकने तक नहीं देता है।

सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सत्साहस दिखाने का अवसर प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, पल-पल में आया करता है। देश, काल और कर्तव्य का विचार करना चाहिए और स्वार्थरहित होकर साहस न छोड़ते हुए कर्तव्यपरायण बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

-गणेशशंकर 'विद्यार्थी'

गणेशशंकर 'विद्यार्थी' का जन्म सन् 26 अक्टूबर 1890 ई0 को प्रयाग में हुआ था। इनकी शिक्षा ग्वालियर में हुई। आर्थिक कठिनाइयों के कारण ये हाईस्कूल (एंट्रेंस) तक ही पढ़ सके किन्तु स्वतन्त्र अध्ययन में लगे रहे। ये कुछ दिन 'सरस्वती' पत्रिका फिर 'अभ्युदय' पत्र में कार्य करते रहे। बाद में ये 'प्रताप' साप्ताहिक के सम्पादक हुए। अपनी अतुल देशभक्ति एवं आत्मोत्सर्ग के लिए ये सदैव याद किये जाते हैं। इनकी भाषा सशक्त एवं शैली ओजपूर्ण, गाम्भीर्य एवं वक्रता- प्रधान है। इनका निधन 25 मार्च सन् 1931 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

विशाल=बड़ा। **वीरवर**=श्रेष्ठ वीर। **अभीष्ट**=वांछित, चाहा हुआ। **धरणी**=पृथ्वी। **कुत्सित**=बुरा। **आभा** =चमक। **सर्वोच्च**=सबसे ऊँचा। **अनभिज्ञ**=अनजान। **मुट्ठी भर**=थोड़े से। **रणक्षेत्र**=युद्ध भूमि। **आत्मोत्सर्ग**=स्वयं को बलिदान करना। **सहायतार्थ**=सहायता के लिए।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. लेखक ने साहस की विभिन्न श्रेणियाँ बतायी हंै। आपके जीवन में भी ऐसी कोई घटना घटी होगी अथवा अपने आस-पास व परिवार के सदस्यों से सुनी होगी जिसमें आपने या आप के आस-पास व परिवार के लोगों ने साहस का परिचय दिया होगा। उसका वर्णन कीजिए।

2. साहसी व्यक्तियों तथा बालकों की कहानियों को समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं से काटकर एकत्र कीजिए और पाठ के आधार पर उनके साहस का वर्गीकरण कीजिए।

3. हमारे देश में हर वर्ष 26 जनवरी (गणतंत्र दिवस) की पूर्व संध्या पर बहादुर बच्चों को 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' दिये जाते हैं। इन पुरस्कारों के बारे में विस्तार से जानकारी कीजिए तथा सभी को बताइए।

4. प्रत्येक पाठ के साथ ही लेखकों व उनकी कृतियों का परिचय संक्षेप में दिया गया है, नीचे दिये गये समूह 'क' के लेखकों के सम्मुख उनकी कृतियाँ समूह 'ख' से चुनकर अपनी पुस्तिका में लिखिए-

'क'	'ख'
जयशंकर प्रसाद	प्रेम वाटिका
रामावतार त्यागी	नदी के साथ
तेत्सुको कुरोयानागी	नया खून

रसखान युगधारा

रमेश उपाध्याय तोत्तोचान

नागार्जुन कामायनी

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रेम-माधुरी

विचार और कल्पना

1. चित्र को देखकर आपके मन में जो विचार आ रहे हैं, उन्हें लिखिए।

2. आपके विचार से किसी डूबते हुए को बचाना किस प्रकार का साहस है ?

निबन्ध से

1. लेखक ने साहस की कितनी श्रेणियाँ बतायी हैं तथा उनकी क्या विशेषताएँ हैं ?

2. बुद्धन सिंह द्वारा सत्साहस का कौन-सा कार्य किया गया?

3. सत्साहसी व्यक्ति में कौन-सी गुप्तशक्ति रहती है, जिसके बल पर वह दूसरों को दुःख से बचाने के लिए प्राण तक दे सकता है ?

4. लेखक के अनुसार सत्साहस के लिए अवसर की राह देखने की आवश्यकता नहीं है, क्यों?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

(क) बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाये किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता।

(ख) कर्तव्य का विचार प्रत्येक साहसी मनुष्य में होना चाहिए।

(ग) कर्तव्य-ज्ञान-शून्य मनुष्य को मनुष्य नहीं, पशु समझना चाहिए।

भाषा की बात

1. 'बलिष्ठता' शब्द बलिष्ठ़ता(प्रत्यय) से बना है। 'बलिष्ठ' शब्द विशेषण और 'बलिष्ठता' शब्द भाववाचक संज्ञा है। इसी प्रकार निम्नलिखित विशेषण शब्दों के साथ 'ता' प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा बनाइए-

पवित्र, उदार, दृढ़, अनभिज्ञ, कायर, कठोर, कोमल, मधुर।

2. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क) रक्त उबल पड़ना

(ख) मस्तक झुकाना

(ग) जान पर खेल जाना

(घ) फटकने न देना

(ङ) अवसर की राह देखना

3. 'अग्निकुंड' तथा 'स्वदेश-भक्ति' सामासिक पद हैं। इनका विग्रह होगा- 'अग्नि का कुंड' तथा 'स्वदेश के लिए भक्ति'। इनमें क्रमशः- सम्बन्ध कारक तथा सम्प्रदान कारक का चिह्न लगा हुआ है। समास होने पर उनका लोप हो जाता है। नीचे लिखे शब्दों का समास-विग्रह कीजिए-

देश-प्रेम, क्रोधान्ध, इतिहास-वेत्ता, समाज-हित-चिन्तक, कर्तव्य-ज्ञान-शून्य

4. निम्नलिखित संज्ञा शब्दों को बहुवचन में बदलकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

माला, झरना, रोटी, आँख, कपड़ा, बालिका।

- इस निबन्ध पाठ के आधार पर आप भी दो प्रश्न बनाइए।

- इस निबन्ध पाठ से मैंने सीखा ....।

- अब मैं करुँगा/करुँगी.........................।

इसे भी जानें

एडमन्ड हिलेरी तथा शेरपा तेनसिंह एवरेस्ट चोटी पर चढ़ने वाले प्रथम व्यक्ति थे।

पाठ 11

4R7DM2

कलम आज उनकी जय बोल

(प्रस्तुत कविता में कवि ने उन असंख्य शहीदों का गुणगान किया है, जिन्होंने अपने त्याग और बलिदान से देश में नयी चेतना जगायी है।)

कलम, आज उनकी जय बोल,

जला अस्थियाँ बारी-बारी

छिटकायी जिसने चिनगारी,

जो चढ़ गये पुण्य-वेदी पर लिये बिना गरदन का मोल।

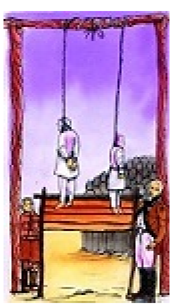

कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे

तूफानों में एक किनारे,

जल-जल कर बुझ गये, किसी दिन माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।

कलम, आज उनकी जय बोल।

पी कर जिनकी लाल शिखाएँ

उगल रहीं लू-लपट दिशाएँ

जिनके सिंहनाद से सहमी धरती रही अभी तक डोल।

कलम, आज उनकी जय बोल।

- रामधारी सिंह "दिनकर"

प्रस्तुत कविता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखी गयी है। दिनकर जी का जन्म सन् 1908 ई0 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ था। 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'कुरुक्षेत्र', 'परशुराम की प्रतीक्षा' आदि उनकी महत्त्वपूर्ण काव्य रचनाएँ हैं। इन कविताओं में देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना झलकती है। इनका देहावसान सन् 1974 ई0 में हो गया।

शब्दार्थ

जय बोल=विजय का गान करना, प्रशंसा के गीत गाना। **जला अस्थियाँ**=हड्डियाँ जलाकर अर्थात् अपना सबकुछ बलिदान कर। **छिटकायी जिसने चिनगारी**=जिसने लोगों में क्रान्ति की भावना या नयी चेतना फैलायी। **अगणित लघुदीप** = असंख्य या अनगिनत छोटे दीप। यहाँ कवि ने बलिदानी वीरों के लिए लघुदीप का प्रयोग किया है। **माँगा नहीं स्नेह मुँह**

खोल = यहाँ 'स्नेह' के दो अर्थ हैं- दीप के अर्थ में तेल और शहीदों के अर्थ में 'प्रेम'। दीप जलते हुए समाप्त हो जाता है पर किसी से तेल की याचना नहीं करता उसी प्रकार देश की आन पर न जाने कितने वीर शहीद हो गये पर उन्होंने किसी से स्नेह और सम्मान की माँग नहीं की। **सिंहनाद** = ललकार, हुंकार।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. (क) 'सुभाषचन्द्र बोस' का उपनाम 'नेता जी' है। नीचे कुछ महापुरुषों के उपनाम दिये जा रहे हैं, उनका पूरा नाम लिखिए-

बापू, लौहपुरुष, देशबन्धु, महामना, लोकमान्य, मिसाइल मैन

(ख) देश-प्रेम कविताओं का संकलन कीजिए।

विचार और कल्पना

1. पाठ में कलम देशभक्तों का जयघोष कर रही है। कलम का अर्थ है-देश के रचनाकार अपनी रचनाओं से उनका अभिवादन करते हैं। देशभक्त तो सर्वोपरि होते हैं। उनका जयघोष केवल देशवासी ही नहीं करते, बल्कि पूरी प्रकृति भी उनके लिए मंगल गीत गाती है। आप बताइए कि बादल और पुष्प किस रूप में उनका जयगान करेंगे।

2. क्या आपके आस-पास कोई ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने देश की सेवा में अपनी जान न्योछावर की है ? अपने बड़ांे से पूछकर उनके बारे में लिखिए।

कविता से

1. कवि अपनी लेखनी से किसकी जय बोलने के लिए कह रहा है?

2. निम्नलिखित भाव कविता की किन पंक्तियों में आये हैं, लिखिए-

(क) जो बिना किसी प्रतिफल के कर्तव्य की पुण्य वेदी पर न्योछावर हो गये।

(ख) देश की आन पर मर मिटे पर उन लोगों ने किसी से स्नेह की माँग नहीं की।

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) पीकर जिनकी लाल शिखाएँ

उगल रहीं लू-लपट दिशाएँ।

(ख) जिनके सिंहनाद से सहमी

धरती रही अभी तक डोल ।

(ग) जला अस्थियाँ बारी-बारी

छिटकायी जिसने चिनगारी।

4. कविता की एक पंक्ति है 'कलम, आज उनकी जय बोल'। इस पंक्ति को गद्य रूप में इस तरह से लिखा जा सकता है- 'कलम, आज उनका जयगान कर'

नीचे दी गयी पंक्तियों को गद्य रूप में लिखिए-

जला अस्थियाँ बारी-बारी

छिटकायी जिसने चिनगारी

जो चढ़ गये पुण्य-वेदी पर

लिये बिना गरदन का मोल। कलम, आज उनकी जय बोल।

भाषा की बात

1. नीचे दिये गये विशेषण और विशेष्य (संज्ञा) का मिलान कीजिए-

विशेषण शब्द	विशेष्य शब्द
सहमी	वेदी
लाल	दीप
पुण्य	धरती
लघु	शिखाएँ

2. दिये गये शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

धरती, कलम, दीप, मँुह।

पढ़ने के लिए-

निम्नलिखित कविता को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि! डाला जाऊँ
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक।

(क) इस कविता पर दो प्रश्न बनाइए।

(ख) कविता का उचित शीर्षक दीजिए।

पाठ 12

4RG9NP

स्वतंत्र भारत के परमवीर

(प्रस्तुत पाठ में देश के परमवीर चक्र विजेता सैनिकों के शौर्य का वर्णन किया गया है।) रमेश कक्षा-7 में पढ़ता है। उसके दादा भारतीय सेना में सूबेदार मेजर पद से अवकाश ग्रहण कर घर आ गये हैं। रमेश प्रतिदिन शाम को युद्धों से सम्बन्धित रोचक घटनायें दादा से सुनता रहता है। दादा जी को सेना में बहादुरी के लिए सेना मेडल मिला हुआ है। दादा जी से सुनी कहानियों को रमेश स्कूल में अपने कक्षा के दोस्तों रहमान, केशव तथा मंजरी को सुनाता रहता है। एक दिन रमेश के इन मित्रों ने तय किया कि वे रमेश के घर जाकर दादा जी से मिलेंगे और उनसे युद्ध सम्बन्धी ढेर सारी जानकारियाँ प्राप्त करेंगे। सभी बच्चे दादा जी से मिलने रमेश के घर पहुँचते हैं। प्रस्तुत है दादा जी के साथ बच्चों की वार्ता का एक अंश-

बच्चे- दादाजी! प्रणाम।

दादा जी-बच्चो खुश रहो। मुझे पता था कि आज तुम लोग आने वाले हो। आओ, सब लोग मेरे पास बैठो।

रमेश-दादा जी ये मेरे सबसे अच्छे मित्र हैं। ये सभी देश की रक्षा में वीर जवानों के योगदान के बारे में जानना चाहते हैं।

दादा जी-ठीक है बच्चो! तुम क्या जानना चाहते हो ?

केशव- दादाजी, आपको सेना में बहादुरी के लिए सेना मेडल मिला हुआ है। हम जानना चाहते हैं कि भारतीय सेना का सबसे बड़ा सम्मान कौन सा है ?

दादा जी- हमारे देश में सैनिकों को दिये जाने वाले पदकों में परमवीर चक्र भारत का सर्वोच्च सैन्य अलंकरण है जो दुश्मनों के बीच में उच्च कोटि की शूरवीरता एवं त्याग के लिए प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार की स्थापना 26 जनवरी 1950 को की गयी थी , जब भारत गणराज्य घोषित हुआ।

रहमान- दादाजी, परमवीर चक्र सम्मान सबसे पहले किसे प्रदान किया गया ?

दादा जी- सबसे पहला परमवीर चक्र सम्मान मेजर सोमनाथ शर्मा को दिया गया था।

रहमान- उनके बारे में हमें विस्तार से बताइए।

दादा जी- हमने उन्हें देखा तो नहीं है किन्तु हमारे यूनिट में उनके बहादुरी की चर्चा अक्सर होती रहती थी। मेजर सोमनाथ शर्मा का जन्म हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में 31 जनवरी 1923 को हुआ था। उनके पिता मेजर जनरल अमरनाथ शर्मा थे।

मेजर सोमनाथ 03 नवम्बर 1947 को अपनी कम्पनी के साथ कश्मीर घाटी के बडगाँव में गश्त पर थे। लगभग 500 की संख्या में दुश्मनों ने उन्हें तीन तरफ से घेर लिया। युद्ध में कम्पनी के सैनिक तेजी से हताहत होने लगे। मेजर शर्मा ने अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाते हुए बहादुरी के साथ दुश्मनों का सामना करने को कहा। स्वयं गोलीबारी की परवाह न करते हुए वे कपड़े की मदद से अपने वायुयानों को दुश्मन के ठिकानों का संकेत देते

रहे। जब सैनिकों की संख्या कम होने लगी तब वे स्वयं मशीनगन की मैगजीन भरकर सैनिकों तक पहुँचाने लगे। उस समय उन्होंने अपने बाँये हाथ में चढ़े प्लास्टर की भी परवाह न की। तभी अचानक एक बम उनके करीब आ गिरा और वे शहीद हो गये। शहीद होने से पहले उन्होंने ब्रिगेड हेडक्वार्टर को अन्तिम मैसेज दिया था-"दुश्मन हमसे केवल 50 गज की दूरी पर है। हमारे सैनिक शहीद होते जा रहे हैं। हम भारी गोलीबारी के बीच हैं, किन्तु हम पीछे नही हटेंगे और अन्तिम सैनिक व अन्तिम गोली रहने तक लड़ेंगे।"

मंजरी-दादाजी रमेश ने मुझे बताया था कि आपने कारगिल युद्ध में दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिये थे। कारगिल युद्ध में किन शूरवीरों को परमवीर चक्र दिया गया ?

दादा जी- कारगिल की लड़ाई बहुत विपरीत परिस्थितियों में लड़ी गयी थी। दुश्मन की चालाकी और विश्वासघात से हम अनजान थे। हमारी सेना के जवानों ने हर परिस्थिति का सामना करते हुए विजय प्राप्त की। मैं तुम्हें अपने उत्तर प्रदेश के रणबाँकुरे कैप्टन मनोज पाण्डेय के बारे में बताता हूँ।

कैप्टन मनोज पाण्डेय का जन्म 25 जून 1975 को सीतापुर उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम गोपीचन्द्र तथा माता का नाम मोहिनी था। कारगिल युद्ध के दौरान खालूबार को फतह करने का जिम्मा कैप्टन मनोज पाण्डेय की कम्पनी को दिया गया था। कैप्टन पाण्डेय को युद्ध में कम्पनी की अगुआई करते आगे बढ़ना था। जैसे ही कम्पनी आगे बढ़ी उन पर दो तरफ की पहाड़ियों से जिन पर दुश्मनों ने अपना बंकर बना रखा था, जबरदस्त गोलाबारी होने लगी। उन्होंने तुरन्त हवलदार भीम बहादुर की टुकड़ी को आदेश दिया कि वह दाहिनी तरफ के दो बंकरों पर हमला कर उन्हें नाकाम करें और स्वयं बायें

तरफ के चार बंकरों को नष्ट करने के लिए आगे बढ़े। एक के बाद एक करके चार दुश्मनों को मार गिराया। इस कार्यवाही में वे बुरी तरह से जख्मी हो गये किन्तु वे इसकी परवाह किये बिना दो बंकरों को नष्ट करते हुए तीसरे बंकर की ओर बढ़े। उसे नष्टकर जब चैथे बंकर की ओर बढ़कर उसे नष्ट करने के लिए आक्रमण किया तभी दुश्मन की गोली उनके माथे पर लगी और वे वही शहीद हो गये किन्तु उनके द्वारा फेंके गये ग्रेनेड से चैथा बंकर भी नष्ट हो गया। उनकी इस वीरता के लिए उन्हे परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

केशव- कैप्टन मनोज पाण्डेय के बारे में हमने भी समाचार पत्रों में पढ़ा था। देश के लिए कुर्बान होने वाले इन वीर जवानों को हम सलाम करते हैं। दादाजी! कारगिल युद्ध में उत्तर प्रदेश के अन्य सैनिक को भी यह सम्मान मिला हैं ?

दादाजी- हाँ ! मिला है न। उत्तर प्रदेश के निवासी ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव को सबसे कम आयु में परमवीर चक्र से सम्मानित होने का गौरव प्राप्त है।

इनका जन्म बुलंदशहर जनपद के औरंगाबाद अहीर गाँव में 10 मई 1980 को हुआ था। सन् 1999 ई0 में जम्मू कश्मीर के कारगिल क्षेत्र की 16 से 18 हजार फुट ऊँची पहाड़ियों पर पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कब्जा जमा लिया था। इन घुसपैठियों ने श्रीनगर को लेह से जोड़ने वाले महत्वपूर्ण राजमार्ग पर गोलीबारी आरम्भ कर दी। 2 जुलाई को कमांडिग आफिसर कर्नल कुशल ठाकुर के नेतृत्व में ग्रेनेडियर योगेन्द्र को टाइगर हिल पर कब्जा करने का आदेश मिला। दल में ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव सहित 7 कमाण्डो शामिल थे। टाइगर हिल पर घुसपैठियों की तीन चैकियाँ बनी थी। पहले मुठभेड़ में पहली चैकी पर कब्जा कर 7 कमाण्डो वाला दल आगे बढ़ा। कुछ ही दूर आगे बढ़ने पर दुश्मन की ओर से

अन्धाधुन्ध गोलीबारी आरम्भ हो गयी। जिसमें दो सैनिक शहीद हो गये। दोनों सैनिकों को वापस छोड़ शेष पाँच जाँबाज सैनिक आगे बढ़े किन्तु पुनः एक भीषण मुठभेड़ हुई जिसमें चार कमाण्डो और शहीद हो गये और बचे केवल योगेन्द्र सिंह यादव। हालाँकि वह भी बुरी तरह घायल थे उनके हाथ में एक और जांघ में दो गोली लगी थी। उनके बायें हाथ की हड्डी टूट गयी थी और हाथ ने काम करना बंद कर दिया था फिर भी वे हिम्मत नही हारे। हाथ को बेल्ट से बाँधकर कोहनी के बल चलना आरम्भ किया और इस स्थिति में भी कई घुसपैठियों को मार गिराया। इस प्रकार दूसरी चैकी पर भी कब्जा हो गया। योगेन्द्र सिंह ने अकेले ही अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए चैकी पर शेष बचे घुसपैठियों को मार गिराया और तीसरी चैकी पर भी कब्जा कर लिया। इसी बीच उन्होंने पाकिस्तानी कमाण्डर की आवाज सुनी जो अपने सैनिकों को 500 फुट नीचे भारतीय चैकी पर हमला करने के लिए आदेश दे रहा था। इस जानकारी को अपनी चैकी तक पहुँचाने के लिए अपनी जान की बाजी लगाकर योगेन्द्र ंिसंह ने पत्थरों पर लुढ़कना प्रारम्भ किया तथा जानकारी देने में सफल भी रहे जिससे दुश्मनों को खदेड़ कर भारतीय चैकी को बचा लिया गया।

रहमान- दादाजी यह वीर तो अद्भुत हैं। ग्रेनेडियर योगेन्द्र ंिसह यादव ने मात्र 19 वर्ष की आयु में जो वीरता दिखाई है, उस पर हम सभी को गर्व है। हमारी इच्छा और शूरवीरों के बारे में जानने की हो रही है।

दादा जी- मैं तुम लोगों को कारगिल की लड़ाई में इस सम्मान को पाने वाले राइफल मैन संजय कुमार के बारे में बताना चाहता हँू जो मेरे ही प्लाटून का सैनिक था। संजय कुमार की बहादुरी को मैंने अपनी आँखों से देखा था।

मुश्कोह घाटी पर स्थित चैकी नम्बर 4875 पर फतह किये बिना द्रास के हैलीपैड पर अपना हेलीकाप्टर उतारना सीधे-सीधे दुश्मन के निशाने पर आना था। इस स्थिति में 4 जुलाई 1999 को राइफल मैन संजय कुमार जब हमले के लिए आगे बढ़े तो दुश्मनों ने आॅटोमेटिक गन से जबरदस्त गोलाबारी आरम्भ कर दी और आगे बढ़ना कठिन हो गया था। स्थिति की गम्भीरता का देखते हुए संजय कुमार ने यह तय किया कि उस ठिकाने को अचानक हमले से खामोश कर दिया जाय। इसी इरादे से संजय कुमार ने यकायक हमला कर आमने-सामने मुठभेड़ में तीन दुश्मनों को मार गिराया। इस आकस्मिक आक्रमण से दुश्मन बौखलाकर भाग खड़े हुए और अपना मशीनगन भी छोड़ गए। इस मुठभेड़ में संजय कुमार पीछे नहीं हटे और दुश्मनों की मशीनगन से ही उनका सफाया करना आरम्भ किया और तब तक जूझते रह जब तक वह प्वाइंट (चैकी) दुश्मनों से पूरी तरह खाली नहीं हो गया। इस वीर सैनिक का जन्म 3 मार्च 1976 को बिलासपुर हिमाचल प्रदेश में हुआ था। उनके इस अदम्य साहस के लिए भारत सरकार ने उन्हे परमवीर चक्र से अलंकृत किया।

मंजरी- दादाजी! मेरे पिताजी कारगिल युद्ध में शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा की चर्चा अक्सर घर में करते हैं। आप उनके बारे में भी हमें बताएँ।

दादा जी- 9 सितम्बर 1974 को हिमाचल प्रदेश के पालमपुर में पैदा हुए कैप्टन विक्रम बत्रा दिसम्बर 1997 में अपनी शिक्षा समाप्त कर सोपोर में सेना की 13 जम्मू कश्मीर राइफल्स में लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त हुए।

1 जून 1999 को कारगिल युद्ध के दौरान हम्प और राकीनाब स्थान को जीतने के बाद उन्हें कैप्टन बना दिया गया। कैप्टन विक्रम बत्रा को श्रीनगर-लेह मार्ग के ठीक ऊपर सबसे महत्वपूर्ण चोटी-5140 को पाक सेना से मुक्त करवाने का जिम्मा दिया गया। वह क्षेत्र बहुत ही दुर्गम था फिर भी विक्रम बत्रा ने अपने साथियों के साथ 20 जून 1999 को सुबह 3:30 बजे तक इस चोटी को अपने कब्जे में ले लिया। इसके बाद प्वाइंट-4815 को भी कब्जे में लेने की बागडोर इन्हें सौंपी गयी। इस अभियान में उन्होंने अपनी जान की परवाह किये बिना अभूतपूर्व वीरता का परिचय दिया और वीरगति को प्राप्त हुए। इस अदम्य साहस के लिए उन्हें मरणोपरान्त भारत के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

बच्चे-दादाजी, आपने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले इन वीरों के बारे में बताकर हम बच्चों का बहुत मनोबल बढ़ाया है।

अन्त में सभी बच्चों ने दादा जी को पैर छूकर प्रणाम किया और अपने-अपने घर लौट गये।

शब्दार्थ

सन्नद्ध=युद्ध के लिए तैयार, तत्पर। **मेजर जनरल**=भारतीय थल सेना में जनरल लेफ्टिनेंट जनरल के नीचे का रैंक। **मेजर**=भारतीय थल सेना का लेफ्टिनेंट के बाद ऊपर का रैंक। **कम्पनी**=80.150 सैनिकों की यूनिट। **हताहत**=घायल होकर मरना। **मैगजीन**=बन्दूकों के साथ लगा छोटा बाक्स जिसमें गोलियां भरी जाती है। **गोरखा राइफल**=एक रेजीमेंट का नाम। **प्लाटून**=सेना की टुकडी जिसमें 40.50 सैनिक होते है। **बंकर**=धरती में खोदकर छिपने के लिए बनाया गया स्थान। **ग्रेनेड**=गोला-बारूद का एक प्रकार जिसे फेंक कर विस्फोट किया जाता है। **18 ग्रेनेड**=एक रेजीमेंट का नाम। **चौकी**=सुरक्षा (निगरानी) के लिए बनाया गया स्थान। **लेफ्टिनेंट**=कमीशण्ड अधिकारी का पहला रैंक। **दुर्गम**=स्थान जहाँ आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

(क) सभी परमवीर चक्र विजेताओं के बारे में जानकारी एकत्र कर पुस्तिका में लिखिए।

(ख) भारत ने किन-किन देशों के साथ युद्ध लड़ा, पता करके लिखिए।

(ग) अपने घर के आस-पास रहने वाले किसी सैनिक से साक्षात्कार कर उनके अनुभवों को लिखिए।

विचार और कल्पना

(क) देश के विकास के लिए आप क्या योगदान देना चाहेंगे ? लिखिए।

(ख) बताइए यदि आपको सेना का कमाण्डर बनने का अवसर दिया जाय तो आप क्या करना चाहेंगे ?

(ग) सीमा पार से आतंकियों की घुसपैठ को कैसे रोका जा सकता है ? अपने विचार दीजिए।

(घ) सोचकर बताइए, एक सैनिक को सीमा पर किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता होगा ?

पाठ से

(क) रमेश के मि़त्र उसके घर क्यों जाना चाहते थे ?

(ख) युद्ध के दौरान सर्वोच्च वीरता का प्रदर्शन करने वाले सैनिक को किस पदक से सम्मानित करने का प्रावधान है ?

(ग) कारगिल युद्ध में किन सैनिकों को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया ?

(घ) सबसे कम उम्र में परमवीर चक्र विजेता बनने का गौरव किसे प्राप्त है ?

(ड.) कैप्टन विक्रम बत्रा ने 20 जून 1999 को क्या कामयाबी हासिल की ?

भाषा की बात

1-दिये गये शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए-

(i) चक्र = च्+अ+क्+र+अ

(ii) युद्ध = - - - - -

(iii) सैनिक = - - - - - -

(iv) पदक = - - - - - -

2. मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य-प्रयोग कीजिए-

हौसला बढ़ाना, फतह करना, जान की बाजी लगाना, प्राणों की आहुति देना।

3. पाठ में कंपनी, मशीनगन जैसे अंगे्रजी भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसी तरह के अन्य शब्दों को छाँटकर लिखिए।

पाठ 13

4RQ5QC

जिसके हम मामा हैं

(प्रस्तुत पाठ हिन्दी साहित्य की लोकप्रिय विधा 'व्यंग्य' के अन्तर्गत दिया गया है। इसमें आज के राजनीतिज्ञों पर सटीक व्यंग्य किया गया है।)

एक सज्जन वाराणसी पहुँचे। स्टेशन पर उतरे ही थे कि एक लड़का दौड़ता आया।

'मामाजी! मामाजी।'-- लड़के ने लपक कर चरण छुए।

वे पहचाने नहीं, बोले--'तुम कौन?'

'मैं मुन्ना। आप पहचाने नहीं मुझे?'

'मुन्ना?' वे सोचने लगे।

'हाँ, मुन्ना। भूल गये आप मामाजी। खैर कोई बात नहीं इतने साल भी तो हो गये।'

'तुम यहाँ कैसे ?'

'मैं आजकल यहीं हूँ।'

'अच्छा!'

'हाँ |'

मामाजी अपने भानजे के साथ वाराणसी घूमने लगे। चलो कोई साथ तो मिला। कभी इस मन्दिर, कभी उस मन्दिर, फिर पहुँचे गंगा घाट। सोचा नहा लें।

'मुन्ना नहा लें?'

'जरूर नहाइए मामाजी । वाराणसी आये हैं और नहायें नहीं, यह कैसे हो सकता है।'

मामाजी ने गंगा में डुबकी लगायी। हर-हर गंगे। बाहर निकले तो सामान गायब, कपड़े गायब, लड़का भी गायब।

'मुन्ना...... ए मुन्ना।'

मगर मुन्ना वहाँ हो तो मिले। तौलिया लपेट कर खड़े हैं।

'क्यों भाई साहब, आपने मुन्ना को देखा है?'

'कौन मुन्ना?'

'वही जिसके हम मामा हैं।'

'मैं समझा नहीं।'

'अरे हम जिसके मामा हैं वो मुन्ना।'

वे तौलिया लपेटे यहाँ से वहाँ दौड़ते रहे। मुन्ना नहीं मिला। भारतीय नागरिक और भारतीय वोटर के नाते हमारी यही स्थिति है मित्रों! चुनाव के मौसम में कोई आता है और हमारे चरणों में गिर जाता है। मुझे नहीं पहचाना! मैं इस चुनाव का उम्मीदवार। होनेवाला एम0पी0। मुझे नहीं पहचाना। आप प्रजातन्त्र की गंगा में डुबकी लगाते हैं। बाहर निकलने पर आप देखते हं ै कि वह शख्स जो कल आपके चरण छूता था, आपका वोट लेकर गायब हो गया। वोटों की पूरी पेटी लेकर भाग गया। समस्याओं के घाट पर हम तौलिया लपेटे खड़े हं ै। सबसे पूछ रहे हैं। क्यों साहब वह कहीं आपको नजर आया? अरे वही

जिसके हम वोटर हैं। वही जिसके हम मामा हैं। पाँच साल इसी तरह तौलिया लपेटे, घाट पर खड़े बीत जाते हैं। - शरद जोशी

शरद जोशी का जन्म 21 मई सन् 1931 ई0 को उज्जैन (मध्य प्रदेश) में हुआ था। जोशी जी हिन्दी के श्रेष्ठ व्यंग्यकार हैं। समाज और राजनीति की गिरावट पर आपने गहरा प्रहार किया। जोशी जी की भाषा सीधी और सरल होती है। अपनी व्यंग्य रचनाओं के अन्त में वे तीखी चोट करते हैं। 'एक गधा उर्फ अलादाद खाँ' तथा 'अन्धों का हाथी' आपके नाटक हैं। 'परिक्रमा', 'किसी बहाने', 'जीप पर सवार इल्लियाँ', 'रहा किनारे बैठ', 'दूसरी सतह पर'' इनके व्यंग्य-संग्रह हैं। आप का निधन 5 सितम्बर सन् 1991 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

एम.पी.=मेम्बर आफ पार्लियामेंट, सांसद। **शख्स**=व्यक्ति, आदमी। **नजर**=दृष्टि।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

प्रायः कुछ लोग चुनाव में किसी न किसी लोभ या दबाववश योग्य प्रत्याशी को अपना मत न देकर किसी अयोग्य प्रत्याशी को मतदान कर बैठते हैं, जिसका समाज पर बुरा असर पड़ता है। आप भी निकट भविष्य में अपने मत (वोट) का प्रयोग करेंगे। लिखिए कि आप किसी प्रत्याशी को किन बातों के आधार पर अपना मत (वोट) देंगे ?

विचार और कल्पना

1. यदि आपको वोट देने का अवसर प्राप्त होता है तो आप किस प्रकार के व्यक्ति को अपना वोट देना चाहेंगे? लिखिए।

2. अपने ग्राम प्रधान/ सभासद, विधायक (एम0 एल0 ए0), सांसद (एम0 पी0) का परिचय देते हुए उनके व्यक्तित्व और सामाजिक छवि के बारे में अपने विचार लिखिए।

पाठ से

1. व्यंग्य में मामाजी और मुन्ना किसके-किसके लिए प्रयोग किया गया है ?

2. भारतीय नागरिक और भारतीय वोटर के नाते हमारी कैसी स्थिति है ?

3. ‘‘बाहर निकले तो सामान भी गायब लड़का भी गायब’’ इस वाक्य की तुलना पाठ में आये किस वाक्य से की जा सकती है ?

4. ‘‘क्यों साहब वह कहीं आपको नजर आया’’ इस वाक्य से लेखक का क्या आशय है ?

भाषा की बात

1. नीचे दिये गये वाक्यों के रूप कोष्ठक में दिये गये निर्देशों के अनुसार बदलिए-

(क) मैं आजकल यहीं हँू। (नकारात्मक)

(ख) वे तौलिया लपेटे यहाँ से वहाँ दौड़ते रहे। (प्रश्नवाचक)

(ग) तुमने इतनी देर से मुझे नहीं पहचाना। (विस्मय बोधक)

2. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग एक ही वाक्य में कीजिए -

(क) जैसे ही, वैसे ही -------

(ख) इसलिए, क्योंकि --------

(ग) जितना, उतना --------

3. सहायक क्रिया मुख्य क्रिया की काल सम्बन्धी सहायता करती है, जैसे- ‘घूमने लगे’ इसमें ‘घूमना’ मुख्य क्रिया है तथा ‘लगे’ सहायक क्रिया। इस प्रकार के दो अन्य उदाहरण देकर मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया को अलग-अलग लिखिए।

4. वाक्य शुद्ध कीजिए-

(क) वही जिसके मामा हैं हम।

(ख) वोटों की भाग गया लेकर पूरी पेटी।

(ग) पहुँचे वाराणसी सज्जन एक।

(घ) माधव विद्यालय गया से घर।

(ङ) शैली है गाना रही गा।

5. ‘परलोक’ शब्द में ‘पर’ तथा ‘बदकिस्मत’ शब्द में ‘बद’ उपसर्ग जुड़ा हैं। नीचे दिये गये शब्दों में से उपसर्ग और शब्द अलग-अलग लिखिए-

अस्थायी, प्रसिद्ध, सपूत, सुगम, खुशकिस्मत, खुशमिजाज, नासमझ, गैरहाजिर।

6.इस पाठ के आधार पर आप भी दो प्रश्न बनाइए।

7.-इस पाठ से

(क) मैंने सीखा ....। (ख) अब मैं करुँगा/करुँगी..............।

इसे भी जाने-

प्रतिवर्ष 14 से 20 सितम्बर तक राष्ट्रीय हिन्दी सप्ताह मनाया जाता है।

पाठ 14

4RZ1RZ

भविष्य का भय

(प्रस्तुत कहानी में साधन सम्पन्न परिवार की एक छोटी लड़की के माध्यम से निर्धन एवं असहाय बच्चों के प्रति संवेदना जागृत करने की चेष्टा की गयी है।)

स्कूल से लौटकर आज तुलतुल ने न तो खाना ही खाया और न पार्क में खेलने गयी। मुँह फुलाकर, चुपचाप छत की सीढ़ियों वाले दरवाजे के पास बैठ गयी। इस समय यहाँ कोई नहीं आता, इसीलिए गुस्से, दुःख और अपमान से आहत होकर तुलतुल यहीं दौड़ी आयी थी। किताब का थैला रख ही रही थी कि दादी माँ बोल पड़ीं, 'लो आ गयी बहादुर लड़की! और बहादुरी का फल भी देख लो। खैर तुम्हारा क्या? भोगना तो हम लोगों को है।'

तुरन्त माँ बोल उठी, 'हम क्यों भोगने जाएं? जिसको बहादुरी का फल मिला है वही भोगे। आज से तुलतुल बरतन धोयेगी, झाड़ू-पोंछा करेगी, मसाला पीसेगी। इसी के कारण तो टुनी की माँ काम छोड़कर भाग गयी है।'

भैया ने भी साथ नहीं दिया बल्कि माँ की हाँ में हाँ मिलाकर बोला, 'माँ ठीक कह रही हैं। इसके लिए यही उचित है।'

'हाँ, सभी तुलतुल को ही दोष दे रहे हैं, उसी से तंग आकर टुनी की माँ नौकरी छोड़कर चली गयी है।'

माँ मेज पर खाना लगा रही थीं और बोलती भी जा रही थीं, 'खाना खाकर बदन में ताकत लाओ फिर काम में जुट जाओ, तुलतुल! जब किसी का कहा कुछ सुनोगी नहीं तो और

क्या होगा?’

लेकिन क्या तुलतुल ऐसा खाना खायेगी?

तुलतुल ने स्कूल की यूनिफार्म भी नहीं उतारी, बस तीर की भाँति छत की सीढ़ी पर जाकर बैठ गयी। पहले तो उसे थोड़ा रोना आया। स्कूल से लौटते ही इतनी भूख लगती है। पर तुलतुल रोयी नहीं, बल्कि यही सोच रही थी कि महरी को उसने किस तरह से तंग किया था। कल स्कूल से लौटते ही महरी को उसने सिर्फ इतना ही तो कहा, ‘ओ टुनी की माँ। इतनी ठंड में टुनी को सिर्फ फ्रॉक पहनायी है और उस पर उससे चाय के बरतन धुलवा रही है?’

टुनी की माँ बोली थी, ‘हर रोज थोड़े ही धोती है। जल्दी के समय बस थोड़ा हाथ भर बँटा देती है।’

तुलतुल कहने लगी, वाह! क्या खूब कही तुमने? तुम कैसी माँ हो? यह भी नहीं जानती कि ‘अन्तरराष्ट्रीय बालवर्ष’ है!

और फिर टुनी की माँ की आश्चर्य से भरी आँखों को देखकर तुलतुल बोली, ‘उफ! तुम तो इस बात के माने ही नहीं समझोगी। सुनो, हमारी मिस ने कहा है।’

टुनी की माँ हाथ का काम छोड़कर बोली, ‘किसने कहा है?’

‘अरे बाबा हमारी स्कूल की मास्टर दीदी, समझी कुछ? उन्होंने कहा है, यह जो नया साल चल रहा है, यह साल छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों का है। इस साल छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों की ज्यादा देखभाल करनी होगी और उन्हें प्यार करना पड़ेगा। अच्छा-अच्छा खाना देना होगा, अच्छे-अच्छे कपड़े और जूते पहनने के लिए देने होंगे, उन्हें पढ़ना-लिखना होगा, बच्चे बीमार न पड़ें उसका भी ख्याल रखना होगा, बच्चों से कोई काम नहीं करवाया जायेगा। बात समझ में आयी?’

टुनी की माँ थोड़ा हँसकर बोली, ‘आयी समझ में।’ और फिर अपनी लड़की से कहा,

‘मुँह फाड़े बात निगलने की जरूरत नहीं है, जल्दी-जल्दी हाथ चला।’

तुलतुल ने गुस्से के मारे कहा, ‘खाक समझी है। खबरदार टुनी, जो तुमने फिर पानी छुआ। इतनी ठंड है और उससे भी अधिक ठंडे पानी में हाथ डुबोकर चाय के बरतन धो रही है। कह रही हँू छोड़ दे।’

तुलतुल की मिस ने कहा, ‘हमारे घरों में जो काम करने आते हैं यानी जो बरतन माँजते हैं, कपड़े धोते हैं, झाड़ू-पांेछा करते हैं, उनके बच्चों को ही यदि हम सिर्फ थोड़े प्यार की आँखों से देखें, अगर कोशिश करें कि वे भी थोड़ा अच्छा खा लें, सरदी के दिनों में पूरा बदन ढँकने का कपड़ा मिल जाय, पढ़ने-लिखने की सुविधाएँ दी जायँ, बीमारी में दवा मिल जाय तो लगेगा दुनिया में हमने कुछ अच्छा काम किया है। हालाँकि तुम सभी अभी बच्चे ही हो फिर भी अभी से सोचना सीखो- कैसे दुनिया में किसी के काम आओगे। एक बात ध्यान में रखना, दुनिया में सभी आदमी बराबर हैं। सभी छोटे बच्चों को प्यार पाने और देखभाल किये जाने का अधिकार है।’

तो फिर मिस के कहे अनुसार क्या तुलतुल कोशिश भी नहीं करेगी और फिर टुनी तो तुलतुल से भी छोटी है। दुबली-पतली हड्डियों का ढाँचा मात्र दिखती है, ऐसी टुनी ठंडे पानी से बरतन धोएगी और तुलतुल गरम पानी से हाथ-मुँह धोकर गरम कपड़े पहनकर गरम-गरम पूरियाँ खायेगी?

रोज-रोज ऐसा ही होता था, यह सच है पर अब तुलतुल बड़ों को ऐसी भूल नहीं करने देगी। आज तुलतुल समझ गयी है कि ऐसा करना बहुत खराब बात है। अंतरराष्ट्रीय बालवर्ष में टुनी जैसे बेचारे बच्चों की देखभाल होनी ही चाहिए।

इसीलिए तो तुलतुल चिल्लाकर बोली, ‘माँ नाश्ता दो....... और फिर टुनी से कहा, ‘ऐ टुनी, मेरे साथ चल, पूरियाँ खायेंगे।’ सुनकर माँ वहीं से बोली, ‘ओह तुलतुल! तू बेमतलब में देर क्यों कर रही है?’

‘पूरियाँ उसे भी दूँगी। पहले तू खा।’

‘क्यों, पहले मैं खाऊँगी?’

‘तू अभी-अभी स्कूल से आयी है। अच्छा टुनी को भी पूरियाँ दे रही हूँ, तू तो बैठ।’

टुनी की माँ तुलतुल से बोली, ‘जाओ मुन्नी। देर करने पर माँ डाँटेंगी। आज क्या तुम्हें भूख नहीं लगी है...... टुनी तू तब तक कोयला तोड़ दे, सुबह के लिए चूल्हा तैयार कर छोड़ूँ।

फिर क्या था तुलतुल ने टुनी के हाथ से कोयला तोड़ने का हथौड़ा छीनकर फेंक दिया और बोली, ‘माँ की बात कभी मत सुनना। यह बालवर्ष है, समझी! बालवर्ष में बच्चों को काम करना मना है....... आज से तू डिपो से दूध लेने नहीं जायेगी। माँ के साथ सड़क से सड़ा हुआ गोबर नहीं उठायेगी। बात समझ में आ रही है न! दिमाग में कुछ घुसा!’

तुलतुल की इतनी बातों के जवाब में टुनी डरी-डरी सी बोली, ‘हथौड़ा लौटा दो दीदी! नहीं तो माँ मुझे बहुत डाँटेंगी।’

‘डाँटने तो दो। मिस से कह दूँगी। मजा चखा देंगी। तू अब भी क्यों खड़ी है? आ न मेरे साथ।’

इतना कहकर टुनी का हाथ पकड़कर तुलतुल उसे खींचती हुई खाने की मेज पर लायी। कुछ लगा नहीं था पर बेवकूफ लड़की रोने लगी। असल में वह डाँट के डर से रो पड़ी थी। तुलतुल क्या यह समझ नहीं रही थी?

उसकी माँ जल्दी-जल्दी सन्देश के खाली बक्से में चार-पाँच पूरियाँ थोड़ी-सी आलू की सूखी सब्जी और थोड़ा-सा गुड़ रखकर बोली, ‘जा टुनी, माँ के पास जाकर खा ले।’

टुनी जान बचाकर भागी।

तुलतुल ने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि कल से अगर माँ ने टुनी को भी एक जैसा खाना नहीं दिया तो तुलतुल भी खाना नहीं खायेगी। उसने माँ से कह भी दिया। बोली, ‘मैं तो अच्छी भली मोटी हूँ, फिर भी इतना खाना देती हो और टुनी चिड़िया जैसी है उसे कुछ नहीं देती। जानती नहीं माँ, यह बालवर्ष है?’

माँ बोली, ‘जानती हूँ। ज्यादा बक-बक मत कर। लड़की के सर पर तो भूत सवार हुआ है।’

लेकिन भूत जमकर बैठ गया हो तो कोई चारा भी नहीं है।

खाना खाने के बाद तुलतुल ने देखा टुनी और उसकी माँ घर जा रही हैं। तुलतुल ने डाँटकर नहीं, अच्छी तरह से कहा, 'कल से टुनी यह सब काम नहीं करेगी। कल पापा तुझे स्कूल में दाखिला करवा देंगे।'

क्या यह टुनी की माँ को तंग करना हुआ?

तुलतुल ने जाकर अपने पापा से सारी बातें कहीं। पापा सुनकर बोले, 'सच में दाखिला करवाना चाहिए और आजकल तो स्कूल में फीस भी नहीं देनी पड़ती। किताब-कॉपी सब मुफ्त मिलते हैं। टिफिन में खाना भी मुफ्त मिलता है।'

'सच पापा?'

'हाँ, मुन्नी, बिलकुल सच। यह नियम हो गया है।'

'तो फिर टुनी हिसाब हल कर पायेगी?'

'क्यों नहीं। सीखने पर जरूर कर सकेगी।'

'किताब पढ़ सकेगी, पापा?'

'जरूर पढ़ सकेगी। कल सुबह जैसे ही वे लोग आयेंगे टुनी को पकड़कर स्कूल में बैठा आऊँगा।'

तुलतुल खुशी के मारे झूम उठी।

अहा! कल बड़ा मजा आयेगा।

स्कूल में पहुँचते, तुलतुल मिस को जाकर कहेगी, 'मिस, मैंने आपका कहना माना है। हमारे घर में जो काम करती है उसकी लड़की को......ही-ही......स्कूल में ही......।'

ही-ही तो तुलतुल ने यहीं कर लिया। स्कूल में मिस के सामने यह सब नहीं चलेगा। स्कूल में गम्भीर, ृान्त, सभ्य ढंग से बात करनी पड़ती है।

रात में सोते समय तुलतुल का मन बड़ा खुश था। सोते समय उसने माँ को निर्देश दिया, 'कल मेरे साथ-साथ टुनी को भी खाना दे देना। माँ! टुनी को भी अच्छी-अच्छी चीजें खाने के लिए देना। समझी न माँ।'

माँ नाराज होकर बोली, 'सब समझ गयी। तार-तार समझ गयी। अब, जरा बकना बन्द कर और कृपा करके सो जा।'

तुलतुल तुरन्त सो गयी।

ओ माँ! सुबह उठकर तुलतुल ने देखा यह क्या? यह सुबह तो रोज की तरह सुबह है। पापा को उन्हें ले जाने की कोई जल्दी ही नहीं है। पापा घर पर ही नहीं थे और टुनी ज्यों की त्यों फटी फ्रॉक पहनकर चाय के ढेर सारे बरतन धो रही थी।

तुलतुल नल के नीचे से टुनी को खींचकर बोली, 'कल क्या कहा था?' टुनी बेवकूफ की तरह अपनी माँ को देख रही थी। टुनी की माँ बोली, 'मुन्नी को क्या हो गया है? दिमाग फिर गया है क्या?'

तुलतुल सीधे दुमंजिले पर पहुँची और कल ृाम माँ से जो कपड़े लिये थे उन्हें लाकर टुनी को पहनने का हुक्म दिया और बोली, 'पापा के लौटते ही स्कूल जायेंगे, समझी और उसके पहले तू मेरे साथ खाना खायेगी। याद रहेगा?'

क्या इसे टुनी की माँ को तंग करना कहा जायेगा?

उसे तो उस समय स्कूल जाने के लिए नहीं कहा था!

खाना खाते समय टुनी को देखकर तुलतुल चिल्लाकर उसे पुकारने लगी। दादी माँ बोली, 'टुनी अपने पापा से पूछने गयी है।'

'क्या पूछने गयी है?'

‘वह, स्कूल जायेगी या नहीं, यह अपने पापा से नहीं पूछेगी क्या? तुम्हारे कहने से ही होगा? टुनी की माँ इसलिए बरतन छोड़कर लड़की को लेकर घर पूछने गयी है।’

दादी माँ की बात तो थोड़ी-थोड़ी ठीक लगती है, पर तुलतुल को थोड़ा डर भी है।

टुनी के पापा कहीं उसे स्कूल जाने से मना न कर दें। इन लोगों का कोई भरोसा नहीं। अभी-अभी तो टुनी की माँ बोली थी कि पढ़ने-लिखने से गरीब आदमी का काम चलेगा कैसे?

‘फीस नहीं लगेगी, किताब के पैसे नहीं लगेंगे यह सुनकर भी टुनी की माँ चुप रही।’ यह बात घर जाकर वह जरूर कहेगी।

तुलतुल जब जूते-मोजे पहन रही थी, पापा बाजार से लौट आये। तुलतुल बोली ‘ओह पापा, आप बड़े डेंजरस हैं। (यह बात वैसे अक्सर पापा ही तुलतुल को कहते हंै।) इतनी देर कर दी आपने? टुनी भी देर कर रही है। उसके आते ही उसे स्कूल में लेकर आ जाइएगा। यहीं पास के स्कूल में भर्ती करवा दीजिएगा। वहाँ बिना जूते-मोजे पहने भी घुसने देते हैं, पापा। टुनी बेचारी के पास तो कुछ भी नहीं है। जब वह पास कर जायेगी, आप उसे जूते-मोजे खरीदकर देंगे न पापा? उसके पापा के पास ज्यादा रुपये नहीं हैं इसलिए नहीं दे सकते। आप तो देंगे न पापा?’

फिर पापा का जवाब सुनने से पहले ही स्कूल की बस आ गयी थी और अब शाम को बस से उतरते ही उसे यह सुनना पड़ा कि टुनी की माँ ने तुलतुल की हरकतों से तंग आकर काम छोड़ दिया है। सुबह जो अधमँजे बरतन को छोड़कर चली गयी थी, फिर वापस नहीं लौटी। पड़ोस के घर की सुखदा भी उसी मुहल्ले की है। माँ ने उसे भेजा था पर टुनी की माँ ने कहलवा दिया कि वह अब काम नहीं करेगी।

इसके माने टुनी की माँ का पापा से पूछने जाना एक बहाना था। बकवास था। वह स्कूल के डर से भाग गयी। ताज्जुब है! कितनी बेवकूफ है वह!

घर के जो बड़े लोग हैं, उनमें से कोई तो टुनी की माँ को दोष नहीं दे रहा है। सभी तुलतुल की बेवकूफी की बात कर रहे हैं और ये लोग सभी पढ़े-लिखे लोग हैं! लोग तो जानते हैं

'बालवर्ष' में क्या-क्या करना चाहिए। रोज तो अखबार पढ़ते हैं।

असल में बड़ों को समझा ही नहीं जा सकता। बड़े लोग कभी कुछ बोलते हैं तो कभी कुछ। उनके सभी काम बड़े उलटे किस्म के हैं।

उस बार की तो बात है। तुलतुल जलपाईगुड़ी में नाना के घर गयी थी। नानाजी ने तुलतुल को 'दया के सागर विद्यासागर' पुस्तक खरीद कर दी। उस समय वे क्या बोले थे?

'महान व्यक्तियों की जीवनी पढ़, तुलतुल! जितना हो सके, ऐसी किताबें पढ़ना, समझी? पढ़ना और इनके आदर्शों पर चलना।'

ओह माँ! उसके कई दिनों बाद की बात है। जलपाईगुड़ी में बड़ी ठंड पड़ी थी। एक गरीब लड़का कोई पुराना कपड़ा माँग रहा था। तुलतुल ने अपना पहना हुआ कार्डिगन खोलकर उसे दे दिया। बाप रे बाप! नानाजी ने ऐसी डाँट लगायी कि क्या कहना! पागल, सिरफिरी लड़की, कहकर नानाजी और भी कुछ बड़बड़ाने लगे। क्यों? विद्यासागर क्या अपने शरीर के कपड़े उतार कर गरीबों को नहीं दे देते थे?

नानाजी बाद में हँसकर मजाक करते हुए बोले, 'अब कान पकड़ता हूँ। किसी को विद्यासागर की जीवनी नहीं खरीद कर दूँगा। इतना कीमती ऊनी कार्डिगन इस लड़की ने सड़क के भिखारी को दे दिया?'

रास्ते के भिखारी को नहीं देगी तो क्या तुलतुल पैसे वालों के लड़के-लड़कियों को देगी? देन पर भी वे क्या लेंगे? और तुलतुल उन्हें देगी भी क्यों? उनके पास नहीं है क्या?

नीचे से भैया की आवाज सुनायी दी, 'ऐ तुलतुल, खाना खाने आ न, छत पर क्यों बैठी है?'

तुलतुल का मन डोल उठा। पेट में चूहे कूद रहे थे फिर भी तुलतुल कठोर बनी बैठी रही। इतने में ही वह हिम्मत हार जायेगी?....मिस ने यह भी कहा था, कितने बच्चों को दो बार भरपेट खाना भी नहीं मिलता......।

भैया ने फिर पुकारकर कहा, ”बरतन धोने के डर से नीचे नहीं उतर रही है, क्या? हा, हा, हा। ही, ही, ही। इतना डरने की जरूरत नहीं, तुम्हारा कसूर माफ कर दिया गया है...।“

तुलतुल ने भी चिल्लाकर बोलना चाहा, ‘दंड किस चीज का? मैंने क्या कोई गलती की है?’ पर वह कुछ बोल नहीं पायी। उसकी आवाज रुँध गयी। अब दादी माँ ने पुकारा, पूरियाँ ठंडी पड़ रही हैं।’

तुलतुल मुँह कठोर बनाकर वैसी ही बैठी रही।

इसके बाद ही माँ आयी।

‘यह क्या नखरा हो रहा है? तुम्हें क्या सचमुच ही बरतन माँजने और कपड़े धोने के लिए कहा गया है? सर्दी के दिनों में काम का आदमी छूट जाय तो कैसा लगता है, तू क्या समझेगी? कोई तुम्हें बेमतलब डँाटना थोड़े ही चाहता है? ले अब, चल उठ। खाना खा ले। ज्यादा नखरे की जरूरत नहीं।’

तुलतुल गुस्से में ही बोली, ‘मैं नहीं जाती, जाओ। मैं नहीं जाऊँगी।’

‘ठीक है। आने दो तुम्हारे पापा को, लाडली बेटी को इतना प्यार करने का मजा भी वे देख लें’। बेटी की ‘हाँ’ में ‘हाँ’ मिलाकर बोले, ‘हाँ-हाँ’ टुनी को स्कूल में दाखिला दिला देना अच्छा रहेगा।’ पर तू ही सोच टुनी अगर स्कूल जाने लगेगी तो उसकी माँ का कैसे गुजारा होगा? टुनी कितना हाथ बँटाती है।’

तुलतुल के गले में दुगनी ताकत थी। झटक कर बोली, ‘यही तो खराब है। मिस ने कहा है, छोटे-छोटे बच्चों से काम कराना बहुत बड़ा पाप है। समझी? तुम सभी पापी हो।’ पर माँ इस भयंकर बात को सुनकर भी नहीं घबरायी। बल्कि हँसकर बोली, ‘क्या करूँ, तू बोल? पापी संसार में जन्म लिया है, पापी बनकर रह रही हूँ। इस दुनिया को नये सिरे से बदलने की क्षमता तो मेरी है नहीं और अगर ऐसा न किया जाये तो इस संसार का उद्धार भी नहीं होने का। तू जब बड़ी होगी तो इसे बदल डालना। तू और तेरे दोस्त सभी मिलकर। हम लोगों की तरह का पाप, तुम लोग नहीं करना।’

इस बात से न जाने क्या हुआ।

अचानक तुलतुल बिलखकर रो उठी। माँ से लिपटकर बोली, ‘अगर बड़ी होकर मैं भी तुम्हारी तरह उलट-पलट जाऊँ तो? अगर बेवकूफ बन जाऊँ तो? अगर यह भूल जाऊँ कि सभी लोग एक समान हैं।’

- आशापूर्णा देवी

कहानी से

1. स्कूल से लौटने पर तुलतुल मुँह फुलाकर क्यों बैठ गयी?

2. तुलतुल की माँ ने उसे घरेलू कार्य करने का आदेश क्यों दिया?

3. ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की जीवनी पढ़ने का तुलतुल पर क्या असर हुआ?

4. तुलतुल के मन में भविष्य के किस भय की चिन्ता थी?

5. टुनी की माँ टुनी को स्कूल क्यों नहीं भेजना चाहती थी और वह तुलतुल के घर की नौकरी छोड़कर क्यांे चली गयी?

6. ‘अन्तरराष्ट्रीय बालवर्ष’ के सन्दर्भ में ‘मिस’ के क्या विचार थे और ‘मिस’ के विचारों का तुलतुल पर क्या प्रभाव पड़ा?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए-

मुँह फुलाना, हाथ बँटाना, मजा चखाना, सर पर भूत सवार होना, कोई चारा न होना, दिमाग फिरना, पेट में चूहे कूदना।

2. इस पाठ में कई ृब्द-युग्म आये हैं जो पुनरुक्त हैं, जैसे- कभी-कभी, डरी-डरी, गरम-गरम आदि। पाठ में आये हुए अन्य पुनरुक्त ृब्दों को छाँटकर लिखिए।

3. इस पाठ में आये निम्नलिखित ृब्दों को पढ़िए-

यूनिफार्म, फ्राॅक, हुक्म, माफ।

ये शब्द विदेशी भाषा से हिन्दी में आये हैं। पाठ से अन्य विदेशी शब्द चुनकर लिखिए।

4. पदों के मेल से बने हुए नये संक्षिप्त पद को ‘समास’ कहते हैं। जिस ‘समास’ में दोनों पद प्रधान होते हैं और उनके बीच में ‘और’ शब्द का लोप होता है, उसे ‘द्वन्द्व समास’ कहते हैं, जैसे- पढ़ना-लिखना अर्थात् पढ़ना और लिखना। नीचे लिखे शब्दों में समास विग्रह कीजिए-

झाड़ू-पोंछा, दुबली-पतली, हाथ-मुँह, लड़के-लड़कियाँ।

पाठ 15

मनभावन सावन

(प्रस्तुत कविता में कवी ने सावन के बरसते बादलों का मनोरम चित्र खींचा है | कविता के अंत में कवि ने जन - जन के जीवन में सावन का उल्लास भरने की कामना की है |)

झम-झम, झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के,

छम-छम-छम गिरती बूँदें तरुओं से छन के |

चम-चम बिजली चमक रही रे उर में घन के,

थम-थम दिन के तम में स्सपने जगतेमन के ||

पंखों से रे, फैले-फैले ताड़ों के दल,

लम्बी-लम्बी अंगुलियाँ हैं, चौड़े करतल |

तड़-तड़ पड़ती धार वारि की उन पर चंचल,

टप-टप झरती कर मुख से जल बूँदें झलमल ||

नाच रहे हैं पागल हो ताली दे-दे चल-दल,

झूम-झूम सिर नीम हिलातीं सुख से विह्वल !

हरसिंगार झरते बेला-कलि बढ़ती प्रतिपल,

हँसमुख हरियाली में खगकुल गाते मंगल ||

दादुर टर-टर करते झिल्ली बजती झन-झन,

'म्याव' 'म्याव' रे मोर, 'पीउ' 'पीउ' चातक के गण।

उड़ते सोनबलाक, आर्द्र-सुख से कर क्रन्दन,

घुमड़ घुमड़ घिर मेघ गगन में भरते गर्जन।।

रिमझिम-रिमझिम क्या कुछ कहते बूँदों के स्वर,

रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अन्तर ।

धाराओं पर धाराएँ झरती धरती पर

रज के कण कण में तृण-तृण को पुलकावलि भर।।

पकड़ वारि की धार झूलता है मेरा मन,

आओ रे सब मुझे घेर कर गाओ सावन।

इन्द्रधनुष के झूले में झूले मिल सब जन,

फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।।

- सुमित्रानन्दन पन्त

पद्मभूषण तथा ज्ञानपीठ सम्मान प्राप्त सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म 20 मई सन् 1900 ई0 को अल्मोड़ा जिले के कौसानी ग्राम मंे हुआ था। पन्तजी को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। 'पल्लव, 'गुंजन', 'युगान्त', 'युगवाणी', 'स्वर्णधूलि', 'चिदम्बरा' उनकी प्रख्यात काव्य रचनाएँ हैं। 28 दिसम्बर सन् 1977 ई0 मंे इनका निधन हो गया।

शब्दार्थ

थम-थम = रुक-रुक कर। **तम** = अन्धकार। **दल** = पत्ते। **चल-दल** = पीपल (जिनके पत्ते सदैव हिलते रहते हंै)। **सोनबलाक** = सुनहरे बगुले। **आर्द्र-सुख** = सुख में मग्न होकर।

कुछ करने को

1. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से एक कविता स्वयं बनाइए-

बादल, बरसात, पानी, बिजली, हरियाली, दादुर, मोर, पंख, फुहार, काले।

2. वर्षा ऋतु की कुछ और कविताओं को पढ़िए।

3. वर्षा ऋतु का एक सुन्दर-सा चित्र बनाइए।

प्रश्न-अभ्यास

विचार और कल्पना

1. कविता को पढ़कर आप के मन में सावन का जो चित्र उभरता है, उसे लिखिए।

2. सावन में चारों ओर हरियाली फैल जाती है। दादुर, मोर, चातक, सोनबलाक सभी खुशी से बोलने लगते हैं। आपको सावन कैसा लगता है- दस-पन्द्रह पंक्तियों में लिखिए।

कविता से

1. ताड़ के पत्ते किस रूप में दिखायी पड़ रहे हंै ?

2. हरसिंगार और बेला के फूलों पर सावन की बूँदों का क्या प्रभाव पड़ रहा है?

3. निम्नलिखित भाव कविता की किन पंक्तियों में आए हैं ?

(क) पीपल के पत्ते मानो ताली बजाकर नाच रहे हैं और नीम आनन्दित हो झूम रहीहै।

(ख) पानी की गिरती धाराओं से धरती के कण-कण में हरे-भरे अंकुर फूट पड़े हंै।

4. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) उड़ते सोनबलाक, आर्द्र-सुख से कर क्रन्दन।

(ख) रोम सिहर उठते छूते वे भीतर अन्तर।

(ग) फिर-फिर आये जीवन में सावन मनभावन।

5. कविता की अन्तिम पंक्तियों में कवि ने क्या इच्छा व्यक्त की है ?

भाषा की बात

1. 'झम-झम, झम-झम मेघ बरसते हैं सावन के' - इसमें 'झम-झम' ध्वनि सूचक शब्द है। कविता में अन्य कई ध्वनि सूचक शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिससे सावन की बरसात का बड़ा सहज एवं सरस चित्रण हुआ है। इस प्रकार के ध्वनि सूचक शब्दों को चुनकर लिखिए।

2. कविता की उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमंे अनुप्रास अलंकार है।

प्रोजेक्ट कार्य-

अपने आस-पास जल के दूषित होने के इन कारणों के अतिरिक्त अन्य कारणों की जानकारी प्राप्त कर सूची बनाइए।

इसे भी जानें

आसमान से गिरने वाला निर्मल जल धरती पर आकर दूषित हो जाता है। दूषित जल से डायरिया, हैजा, पेचिस, टाइफाइड आदि बीमारियाँ फैलती हैं। जल दूषित होने के निम्नलिखित कारण हैं-

Û कुएँ एवं हैण्डपम्प के आस-पास गन्दगी का होना।

Û पीने के पानी में मानव-मल या सीवर का पानी मिल जाना।

Û छोटी-बड़ी फैक्टरियों के रसायन युक्त जहरीले पानी का नदियों एवं भूमिजल मंे मिलना।

Û रासायनिक खादों एवं कीटनाशक दवाओं का भूमिगत जल में मिलना।

मंजरी-7

अवधारणा चित्र-किसी पात्र अथवा विषयवस्तु के बारे में उसकी विशेषता, गुण, लाभ, हानि के प्रमुख बिन्दुओं के आधार पर चित्रण करना। जैसे-मनभावन सावन पाठ का अवधारणा चित्र निम्नवत् है-

मनभावन सावन

1. बादल

2. वर्षा

3. हरियाली

4. जल जमाव

5.तापमान में गिरावट

6. जलीय जन्तुआंे की

विशेष सक्रियता

मेघ गरजते हैं।

झम-झम मेघ बरसते हैं।

छम-छम बूँदें गिरती हैं।

चम-चम बिजली चमकती है।

मेढ़क टर-टर करते हैं।

मोर म्याव-म्याव करता है।

चातक पीउ-पीउ करता है।

पक्षी चहचहाते हैं।

पीपल के पत्ते तेजी से हिलते हैं।

नीम की डालियाँ झूमती हैं।

हरसिंगार के फूल झड़ते हैं।

सावन-

आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना।

ताड़ के पत्ते पंख की

तरह फैले लगते हैं।

उन पर वर्षा की धार पड़ती है।

पत्तों के किनारे से बूँदें टपकती हैं।

चैड़ी हथेली व लम्बी

अँगुलियों जैसे लगते हैं।

शिक्षकों हेतु निर्देशः-

इसी प्रकार अन्य पाठों के आधार पर अवधारणा चित्र बच्चों से बनवाएं।

मंजरी-7

पाठ 16

4SHSVA

क्या निराश हुआ जाय

(प्रस्तुत निबन्ध में निबन्धकार ने निराशा के स्थान पर सदैव आशावान रहने की प्रेरणा दी है।)

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति सन्देह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं, उसमें उतने ही अधिक दोष दिखाये जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता। जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिये जायेंगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिल्कुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिन्ता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था? रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति-सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिन्दू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलन-भूमि 'मानव महा-समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

परन्तु ऊपर-ऊपर जो कुछ दिखायी दे रहा है, वह बहुत ही हाल की मनुष्य-निर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। सदा मनुष्य-बुद्धि नयी परिस्थितियों का सामना करने के लिए नये सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए बनाये जाते हैं, पर सबके लिए कभी-कभी एक ही नियम सुखकर नहीं होते। सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते हैं, इससे ऊपरी सतह आलोड़ित भी होती है, पहले भी हुआ है, आगे भी होगा। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आन्तरिक तत्त्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बन्धन में बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है, परन्तु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाये गये हैं, जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परन्तु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन सब समय पवित्र नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

संशय सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाये गये, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गये। लक्ष्य की बात भूल गये। आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए क्षोभ का नतीजा है, परन्तु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखायी देने लगे हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अन्तर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और अध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गये हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार-पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं, जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में जाकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के

सेकन्ड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिये और बोला, ”यह बहुत गलती हो गयी थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।“ उसके चेहरे पर विचित्र सन्तोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहँू कि सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गयी है, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परन्तु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गन्तव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गये। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को सन्देह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरु कर दीं। किसी ने कहा, ”यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था।“ परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा, ‘हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।’ डर तो मेरे मन में भी था, पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है। परन्तु यात्री इतने घबरा गये कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, ‘इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।’

मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गये। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी।

लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं, पर उसे बस से उतार कर एक जगह घेर कर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो ड्राइवर को समाप्त कर देना, उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, ‘अड्डे से नयी बस लाया हँू, इस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है’, फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा-सा दूध लेकर आया और बोला, ‘पंडित जी! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।’ यात्रियों में फिर जान आयी। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गये।

कैसे कहँू कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गयी! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-मया रह ही नहीं गयी! जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया हूँ, परन्तु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो जिनमें धोखा खाया है, तो जीवन कष्टकर हो जायेगा, परन्तु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण ही सहायता की है, निराश मन को ढाढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान् से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर सन्देह न करूँ।

मनुष्य की बनायी विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आये दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की सम्भावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

- हजारीप्रसाद द्विवेदी

पद्मभूषण से सम्मानित हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त सन् 1907 ई0 में बलिया के आरत दूबे का छपरा(ओझवलिया) नामक गाँव में हुआ था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिष में आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् ये शान्ति निकेतन में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुए फिर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं चंडीगढ़ विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष रहे। द्विवेदी जी हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकारों, समीक्षकों और सांस्कृतिक उपन्यासकारों में से एक हैं।'कबीर', 'हिन्दी साहित्य की भूमिका', 'सूर-साहित्य', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चारुचन्द्रलेख', 'अनामदास का पोथा', 'अशोक के फूल', 'कुटज' आदि इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। इनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति और जीवन-मूल्यों की गहरी झाँकी है। इनका निधन 19 मई सन् 1979 ई0 को हुआ।

शब्दार्थ

गह्वर=गुफा। मनीषी=विचारक, विद्वान। भीरु=डरपोक। निरीह=असहाय, बेचारा। आस्था= विश्वास। विधि-निषेध=करने और न करने के नियम। आलोड़ित=उथल-पुथल, हिलोरें लेता हुआ। विकार=दोष। दकियानूसी=पुराने विचारों से चिपका रहने वाला, पुरातनपन्थी। पर्दाफाश करना=भेद खोलना। दोषोद्घाटन=बुराइयाँ बताना। अवांछित=अनचाहा। कातर मुद्रा=डरा हुआ रूप। वंचना=धूर्तता। विश्वासघात=विश्वास में धोखा। जवाब दे देना=खराब हो जाना। हिसाब बनाना=योजना बनाना। चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना=डर जाना। गन्तव्य=जहाँ किसी को जाना हो। परीक्षित=जाँचा-परखा। निकृष्ट=बुरा, नीच।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

इस पाठ में लेखक ने दो घटनाओं का जिक्र किया है। इन घटनाओं से क्रमशः 'टिकट बाबू' और 'बस के कंडक्टर' की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा प्रकट होती है। इस तरह की

घटनाएँ हमारे समाज में प्रायः घटित होती रहती हैं। अपने साथ या आस-पास में घटित किसी घटना के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए।

विचार और कल्पना

1. अपने आस-पास या विद्यालय में घटी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए जिसमें किसी ने किसी की निःस्वार्थ सहायता की हो।

2. आप परिवार सहित कहीं जा रहें हैं। निर्जन और सुनसान मार्ग पर एकाएक बस खराब हो जाती है। कल्पना कीजिए आप के मन में किस तरह की शंकाए जन्म लंेगी और आप गन्तव्य तक पहुँचने के लिए क्या-क्या उपाय करेंगे।

निबन्ध से

1. क्या कारण है कि आजकल हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि देखा जा रहा है?

2. जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्थाएँ क्यों हिलने लगी हैं?

3. किन घटनाओं के आधार पर लेखक को लगा कि मनुष्यता अभी समाप्त नहीं हुई है?

4. 'बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है।' क्यों?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा हैं, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है।

(ख) केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा।

(ग) भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

(घ) महान भारतवर्ष के पाने की सम्भावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

भाषा की बात

1. आँधी आयी और पानी बरसा। यहाँ दो वाक्य में- 'आँधी आयी', 'पानी बरसा' को 'और' शब्द जोड़ता है। इसी प्रकार यह दो पदों को भी जोड़ता है। जैसे-दो और दो चार होते हैं इस प्रकार ऐसा पद जो एक वाक्य या पद का संबंध दूसरे वाक्य या पद से जोड़ता है, समुच्चय बोधक अव्यय कहलाता है।

नीचे कुछ अव्यय शब्द दिए गये हैं, उनका प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए-

क्योंकि, किन्तु, परन्तु, अथवा, इसलिए, चूंकि, तथा, अतः

2. 'ईमानदार' तथा 'मूर्ख' शब्द गुणवाचक विशेषण हैं, इनमंे क्रमशः 'ई' तथा 'ता' प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा शब्द 'ईमानदारी' तथा 'मूर्खता' बनाया गया है। नीचे लिखे गये विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए -

निर्भीक, जिम्मेदार, कायर, अच्छा, लघु, बुरा।

3. इस पाठ में सरल, मिश्र और संयुक्त तीनों प्रकार के वाक्य आये हैं। नीचे दिये गये वाक्यों को पढ़िए और बताइए कि वे किस प्रकार के वाक्य हैं-

(क) उसके सारे गुण भुला दिये जायेंगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया जाने लगेगा।

(ख) एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था।

(ग) इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता।

(घ) यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं।

इसे भी जानें

साहित्य अकादमी पुरस्कार- साहित्य अकादमी द्वारा अंग्रेजी सहित बाईस भाषाओं में गत पाँच वर्षों में प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाओं पर दिया जाता है। इसकी स्थापना सन् 1955 ई0 में हुई थी।

पाठ 17

वरदान माँगूँगा नहीं

(प्रस्तुत कविता से कवि के स्वाभिमान और आत्मविश्वास का परिचय मिलता है।)

यह हार एक विराम है

जीवन महासंग्राम है

तिल-तिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं ,

वरदान माँगूँगा नहीं।

स्मृति सुखद प्रहरों के लिए

अपने खंडहरों के लिए

यह जान लो मैं विश्व की सम्पत्ति चाहूँगा नहीं,

वरदान माँगूँगा नहीं।

क्या हार में क्या जीत में

किंचित नहीं भयभीत मैं

संघर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही,

वरदान माँगूँगा नहीं।

लघुता न अब मेरी छुओ

तुम हो महान बने रहो

अपने हृदय की वेदना मैं व्यर्थ त्यागूँगा नहीं,

वरदान माँगूँगा नहीं।

चाहे हृदय को ताप दो

चाहे मुझे अभिशाप दो

कुछ भी करो कर्तव्य पथ से किन्तु भागूँगा नहीं,

वरदान माँगूँगा नहीं।

- शिवमंगल सिंह 'सुमन'

पद्मभूषण से सम्मानित 'शिवमंगल सिंह' का जन्म सन् 1916 ई0 में उत्तर प्रदेश स्थित उन्नाव जिले में हुआ था। इन्होंने हिन्दी विषय में एम0 ए0 और पी-एच0 डी0 की उपाधियाँ प्राप्त कीं। बाल्यावस्था से ही इन्होंने काव्य रचना करनी प्रारम्भ कर दी थी, 'सुमन' उपनाम

से इन्होंने कविताओं का लेखन किया। उनके काव्य संग्रह हैं- ‘हिल्लोल’, ‘पर आँखें भरी नहीं’, ‘जीवन के मान’ ‘प्रलय सृजन’ और ‘विश्वास बढ़ता ही गया’। 27नवम्बर सन् 2002 में इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ

महासंग्राम = महान संघर्ष, जीवन में आने वाली कठिनाइयों से लड़ने का भाव। **प्रहर** = पहर-एक दिन का आठवाँ भाग। **ताप** = कष्ट। **अभिशाप** = शाप, बद्दुआ।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. हम बहता जल पीने वाले,

मर जाएंगे भूखे-प्यासे।

कहीं भली है कटुक निबौरी,

कनक कटोरी की मैदा से।।

उपर्युक्त कविता भी श्री शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ जी की ही है। दोनों कविताओं में क्या समानता तथा क्या अन्तर है? लिखिए।

2. ‘जीवन महासंग्राम है’ के समान भाव की कुछ सूक्तियाँ एकत्र करके लिखिए।

विचार और कल्पना

1. कवि दया की भीख नहीं लेना चाहता, इस संबंध में आपके क्या विचार हैं, लिखिए?

2. ‘यह भी सही, वह भी सही’ का प्रयोग किन परिस्थितियों के लिए किया गया है?

3. कविता के मूल भाव को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसका शीर्षक 'वरदान माँगँूगा नहीं' क्यों रखा गया होगा ? इस कविता के और क्या-क्या शीर्षक हो सकते हैं ?

कविता से

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) कवि तिल-तिल मिट जाने के बाद भी किस बात के लिए तैयार नही हैं ?

(ख) संघर्ष पथ पर चलते हुए कवि का संकल्प क्या है ?

(ग) कर्तव्यपथ के विषय मंे कवि का दृढ़ संकल्प क्या है ?

2. निम्नलिखित पंक्तियों को उनके सही अर्थ से मिलाइए-

(क) क्या हार में क्या जीत में जीवन स्वयं ही महासंघर्ष है इसमें हार को

किंचित नहीं भयभीत मैं। क्षणिक विश्राम के रूप में लेना चाहिए।

(ख) मैं विश्व की सम्पत्ति हार हो या जीत, मैं जरा भी चाहूँगा नहीं। भयभीत नहीं।

(ग) यह हार एक विराम है, मैं संसार की सम्पदा की

जीवन महासंग्राम है। कामना नहीं करूँगा।

3. कविता में जीवन को महासंग्राम क्यों कहा गया है?

भाषा की बात

1. इस कविता में एक पंक्ति है ''क्या हार में क्या जीत में'' इसमें एक ही पंक्ति में 'हार' और 'जीत' दो परस्पर विलोम शब्द आए हैं। आप भी कुछ ऐसी पंक्तियाँ बनाइए जिनमें दो परस्पर विलोम शब्द एक साथ आए हों, जैसे- क्या सुख में क्या दु:ख में।

2. पाठ में आए तुकान्त शब्द छाँटकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3. जन = लोग। (जन-जन की आवाज है - हम सब एक हैं।)

जान = प्राण। (क्या बताऊँ, वह हमेशा मेरी जान के पीछे पड़ा रहता है।)

ऊपर के शब्दों (जन-जान) में केवल एक मात्रा के हेर-फेर से उनके उच्चारण और अर्थ दोनों ही बदल गये हैं। नीचे कुछ शब्द-युग्म दिये जा रहे हैं, उनका अर्थ स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए तथा ऐसे पाँच शब्द-युग्म आप भी ढूँढ़िए। सुत-सूत, नीर-नीड़, मन-मान, कुल-कूल, क्रम-कर्म

4. तिल-तिल मिटूँगा पर दया की भीख नहीं लूँगा, क्योंकि-

(1) जीवन एक विराम है।

(2) जीवन महासंग्राम है।

(3) जीवन बहुत अल्प है।

(4) जीवन मंे बहुत आराम है।

5. स्मृति सुखद प्रहरांे के लिए क्या नहीं चाहूँगा ?

(1) विश्व की सम्पत्ति। (2) खण्डहर।

(3) दीर्घायु। (4) कर्तव्य

6. किन-किन परिस्थितियों में कवि अपने कर्तव्य-पथ से हटना नहीं चाहता है ?

(1) हृदय को ताप एवं अभिशाप प्राप्त होने पर।

(2) भयभीत होने पर।

(3) धमकाने पर।

(4) प्रताड़ित होने पर।

इसे भी जानें

खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' कृत 'प्रिय प्रवास' है। इस कृति पर इन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया गया है।

पाठ 18

4T1JYK

कर्तव्यपालन

(प्रस्तुत एकांकी में वनरक्षक के कर्तव्यपालन का सहज, सुन्दर और रोचक वर्णन है।)

पात्र

राजा, वनरक्षक (जंगल का रखवाला), राजा के दरबारी

स्थान -- जंगल का रास्ता

समय -- शाम

(राजा जंगल से निकलकर एक रास्ते के किनारे खड़ा है।)

राजा: (यकायक पहुँचकर) यह तो किसी के घर का रास्ता है। यह सबके लिए खुला नहीं हो सकता। (खड़े-खड़े होंठों पर उँगली रख कर) मैं राजा हूँ। आश्चर्य है, अँधेरा मेरी कुछ भी परवाह नहीं करता, वह बढ़ता ही आ रहा है। मामूली आदमी की तरह मैं भी भूल और भटक सकता हूँ। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाएँ भी, जो मेरा आतंक मानती थीं, इस समय सब चुप हैं। दरबार में बढ़-बढ़कर बातें करने वाली मेरी बुद्धि इस समय नहीं बता सकती कि मैं किधर जाऊँ। (किसी की आहट सुनता है) कोईर् आ रहा है। मुझे क्या करना चाहिए। क्या कुछ राजापन दिखाऊँ। नहीं, नहीं, फेंको इस राजापन के ढोंग को। मनुष्य होने का लाभ लो।

(वनरक्षक का प्रवेश)

वनरक्षक: आज मैं बदमाश को पकड़ पाया। तुम कौन हो?

राजा: मैं बदमाश नहीं, तुमको विश्वास दिलाता हूँ।

वनरक्षक: अच्छी बात है। किसने बन्दूक चलायी।

राजा: मैंने नहीं चलायी।

वनरक्षक: (तिरस्कार के स्वर में) तुम झूठ बोलते हो।

राजा: (मन में) झूठ बोलता हूँ। कैसे दुःख की बात है कि मैं राजा होकर एक अपराधी की तरह सुन रहा हूँ। (प्रकट) तुम मेरी बात का विश्वास करो। भाई, मैंने बन्दूक नहीं चलायी।

वनरक्षक: अच्छा, अच्छा इधर आओ तुमने राजा के एक हिरन को गोली मारी। क्या नहीं मारी?

राजा: नहीं, सचमुच नहीं। मैं खुद राजा का बहुत सम्मान करता हूँ। मैंने भी गोली की आवाज सुनी है और मुझे भय है कि कुछ चोर या डाकू जंगल में छिपे हुए हैं।

वनरक्षक: मुझे यकीन नहीं। खैर, तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है?

राजा: (गम्भीर होकर) मेरा नाम!

वनरक्षक: हाँ, तुम्हारा नाम। तुम्हारा कोई नाम तो होगा ही। क्या नहीं है? तुम कहाँ रहते हो और करते क्या हो?

राजा: इन प्रश्नों का उत्तर देने का मुझे अभ्यास नहीं है।

वनरक्षक: हो सकता है, पर ये ही प्रश्न हैं, जिनके उत्तर देने से सच्चे आदमी को डर नहीं लगता। खैर, अगर तुम अपने बारे में कोई साफ उत्तर नहीं देना चाहते हो, तो मत दो, मगर तुम जाना कहाँ चाहते हो? चलो मैं तुमको बाहर निकाल आऊँ।

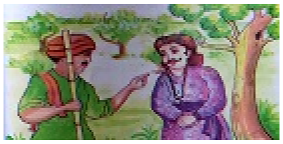

राजा: (क्षुब्ध होकर) तुम। किस अधिकार से?

वनरक्षक: (जोश के साथ) मैं राजा का वनरक्षक पुंडरीक हूँ, इस अधिकार से।

राजा: (गौर से देखकर) पुंडरीक।

वनरक्षक: (अकड़ के साथ) जी हाँ, पुंडरीक। किसी आदमी को, जिस पर मुझे शक होता है और जब तक वह अपना परिचय, जितना तुमने दिया है उससे अधिक नहीं देता, मैं इस राह से नहीं जाने देता।

राजा: अच्छी बात है, भाई। मुझे बड़ी खुशी है कि मेरी तरह तुम भी राजा के एक अच्छे अफसर हो। अगर तुम विश्वास करो ....

वनरक्षक: नहीं, तुम विश्वास के पात्र नहीं हो।

राजा: मैं राजा का एक अफसर हूँ । मैं राजा के साथ इस जंगल में शिकार खेलने के लिए आया था और यहाँ राह भूल गया हूँ। जंगल में मुझे रात हो गयी और मैं घर से बहुत दूर पड़ गया हूँ।

वनरक्षक: इसमें सच्चाई की कमी है। अगर तुम शिकार को निकले थे तो तुम्हारा घोड़ा कहाँ है?

राजा: घोड़ा थक कर गिर पड़ा, मैंने उसे छोड़ दिया ।

वनरक्षक: यदि मैं तुम्हारी बात का विश्वास न करूँ ......

राजा: मैं झूठ नहीं बोलता, भले आदमी ।

वनरक्षक: वाह! वाह! दरबार में रहते हो और झूठ नहीं बोलते।

राजा: खैर! तुम जैसा समझो? मगर मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। यह मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ। यदि तुम कभी राजधानी में आओगे, तो मैं तुमको दिखा दूँगा कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। (जेब से एक रुपया निकाल कर और पुंडरीक की ओर हाथ बढ़ाकर) यह लो इनाम और आज रात को मुझे अपनी झोपड़ी में रहने दो।

(वनरक्षक राजा का मुँह देखता है)

यदि यह कम हो, तो सबेरे तुम जो कहोगे, वही तुमको दूँगा। और खुश कर दूँगा।

वनरक्षक: (जोर से हँसकर) ओहो, अब मैंने माना कि तुम दरबारी हो आज के लिए तो एक छोटी रिश्वत और कल के लिए एक बड़ा-सा वादा। एक ही साँस में दोनों। मगर मेरे दोस्त, यह दरबार नहीं है।

राजा: (क्रोध से) तू एक नीच आदमी है। जबान सँभालकर नहीं बोलता। मैं तेरे बारे में अधिक जानना चाहता हूँ।

वनरक्षक: (लापरवाही से) 'तू' और 'तेरे' शब्द को इस तरह लापरवाही से मत फेंको, मैं भी उतना ही भला आदमी हूँ जितने तुम हो।

राजा: (शान्त होकर) क्षमा करो, मित्र।

वनरक्षक: (मुस्कुराकर) मैं क्रोध में नहीं हूँ, पर जब तक तुम्हारी सच्चाई पर मेरा सन्देह है, तब तक मैं तुमसे विशेष प्रेम-भाव नहीं दिखला सकता ।

राजा: तुम ठीक कहते हो, पर मैं तुमको कैसे विश्वास दिला सकता हूँ।

वनरक्षक: ओह! तुम जैसा मुनासिब समझो, करो। राजधानी यहाँ से दस मील (16किलोमीटर) पर तो है। तुम अभी राजधानी जाना चाहो, तो मैं तुमको रास्ता बताऊँगा और अगर तुम रात भर इस गरीब के घर में टिकना पसन्द करो, तो मेरे सिर आँखों पर रहो। सबेरे मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।

राजा: क्या तुम अभी साथ नहीं चल सकते ।

वनरक्षक: नहीं, चाहे तुम राजा ही क्यों न हो ।

राजा: तब तो चलो, मैं तुम्हारे ही घर में रात काटूँगा ।

(घोड़े पर सवार एक सरदार का प्रवेश)

दरबारी: महाराज ! कुशल से तो हैं? महाराज के लिए हमने सारा जंगल छान डाला।

वनरक्षक: (चकित होकर, आँखें फाड़कर) कौन? महाराज । तब तो मुझसे बड़ी भूल हुई महाराज, आपके साथ मैंने जो ढिठाई की, उसे क्षमा कीजिए।

(राजा तलवार खींचता है)

वनरक्षक: महाराज, आप अपने उस सेवक का वध निश्चय ही नहीं करेंगे, जिसने ईमानदारी से अपना फर्ज अदा किया है।

राजा: नहीं, मेरे सच्चे बहादुर मित्र! नहीं, मैं तुमको क्षमा नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे जैसे नेक और सच्चे आदमियों के सम्मान का ऋणी हूँ। उठो, राजरत्न पुंडरीक, उठो ! अपनी पदवी का प्रमाण और मेरी प्रसन्नता का चिह्न यह तलवार लो।

पर्दा गिरता है |

- राम नरेश त्रिपाठी

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 ई. को जिला जौनपुर, (उत्तर प्रदेश) के कोइरीपुर ग्राम में हुआ था | साहित्य की अनेक विधाओं में आपने रचनाएँ की हैं | इनकी रचनाओं में नवीन आदर्श और नवयुग का संकेत है | आप द्वारा रचित 'पथिक'. 'मिलन', 'मानसी' और स्वप्न आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं | 16 जनवरी सन् 1962 ई. में इनका देहावसान हो गया था |

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. कक्षा में इस एकांकी का अभिनय प्रस्तुत करें।

2. इस एकांकी को संक्षेप में कहानी के रूप मंे लिखिए।

3. इस पाठ में वनरक्षक की कर्तव्यपरायणता को उभारा गया है। आपके गाँव/नगर में कर्तव्यपालन के लिए प्रसिद्ध महिलाआंे और पुरुषांे के नाम और उनकी विशेषताएँ लिखिए।

विचार और कल्पना

1. यदि इस एकांकी के मंचन में आपको कोई भूमिका करनी पड़े तो किस पात्र की भूमिका करना चाहेंगे और क्यों?

2. इस एकांकी में आप ने पढ़ा, कि बीच-बीच में कुछ संकेत कोष्ठक में दिये गये हैं, जैसे (राजा जंगल से निकल कर एक रास्ते के किनारे खड़ा है) (तिरस्कार के स्वर में)

स्थान- जंगल का रास्ता, समय-शाम................आदि। ऐसे निर्देशों/संकेतों से नाटक के दृश्य स्पष्ट होते हैं तथा नाटक को मंच पर अभिनीत करने में सुगमता होती है।

कल्पना कीजिए- यदि रात का दृश्य मंच पर दिखाना हो तो क्या-क्या संकेत देंगे?

एकांकी से

1. राजा द्वारा ली गयी परीक्षा में वनरक्षक किस प्रकार खरा उतरता है ?

2. नीचे लिखे वाक्य के तीन सम्भावित उत्तर दिये गये हैं, सही उत्तर पर सही का चिह्न लगाइए तथा उसका कारण भी लिखिए।

राजा ने तलवार खींच ली क्योंकि-

(क) वह वनरक्षक को दंड देना चाहता था।

(ख) वह वनरक्षक को क्षमा करना चाहता था।

(ग) वह वनरक्षक को सम्मान देना चाहता था।

3. वनरक्षक द्वारा परिचय पूछे जाने पर राजा क्या उत्तर देते हैं?

4. वनरक्षक को राजा पर क्या संदेह होता है ?

5. राजा द्वारा यह कहने पर कि यदि एक रुपया कम हो तो सवेरे और भी दूँगा, वनरक्षक ने राज दरबार और दरबारी के विषय मंे क्या कहा ?

6. वनरक्षक को उसकी नेकी और ईमानदारी का क्या फल मिला?

7. एकांकी में वनरक्षक के व्यक्तित्व की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों को छाँटकर अलग-अलग लिखिए-

अभिमान, चमकीला, सच्चाई, सम्मान, ईमानदारी, विशेष, प्रसन्नता, निकलकर।

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

तिरस्कार, यकीन, मुनासिब, रिश्वत, ढिठाई, फर्ज।

3. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए -

(क) किसी बात की परवाह न करने वाला।

(ख) वन की रक्षा करने वाला।

(ग) जो विश्वास करने योग्य हो।

(घ) जो रिश्वत लेता हो।

(ङ.) जो क्षमा करने योग्य न हो।

4. नीचे दिये गये वाक्यों में से सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्रित वाक्य अलग-अलग कीजिए-

(क) मुझे पता तो चल गया कि मैं मनुष्य भी हूँ ।

(ख) आज मेरा सारा अभिमान मुझे झूठा जान पड़ रहा है ।

(ग) तुम कहाँ रहते हो और करते क्या हो ?

(घ) मैंने माना कि तुम दरबारी हो, आज के लिए तो एक छोटी-सी रिश्वत और कल के लिए एक बड़ा सा वादा।

(ङ.) आज मैं बदमाश को पकड़ पाया।

5. इस एकांकी को पढ़कर-

(क) आपने क्या नया सीखा ?

(ख) क्या करने लगेंगे, जो अभी नहीं करते हैं ?

इसे भी जानें

दिनांक 28 जुलाई को प्रति वर्ष 'वन महोत्सव दिवस' के रूप तथा 5 जून को 'पर्यावरण दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

पाठ 19

521BSQ

मैं कवि कैसे बना

(प्रस्तुत आत्मकथा में गोपालप्रसाद व्यास ने अपने बचपन में कवि बनने की लालसा का प्रस्तुतीकरण बड़े ही रोचक ढंग से किया है। बालक गोपालदास ने अपनी गलती को अपने कक्षाध्यापक के सामने स्वीकार कर उसका निराकरण पूछा। अध्यापक ने उसे तुकान्त शब्दों के माध्यम से कविता बनाने का पहला गुर सिखा दिया।)

कोई सन् 1924 के आस-पास की बात है। मैं मथुरा के अग्रवाल विद्यालय में शायद तीसरे दर्जे में पढ़ा करता था। वह भारत का जागरणकाल था। समाज-सुधारक और राष्ट्रीयता दोनों ही अपने पूर्ण यौवन पर थे। शिक्षा-संस्थाओं पर भी इनकी गहरी छाप थी। हमारे विद्यालय में भी लगभग प्रति सप्ताह कोई-न-कोई उत्सव-आयोजन होता ही रहता था। मुझे भी इन अवसरों पर उजले-उजले कपड़े पहनकर आगे बैठने में बड़ा आनन्द आता था। संगीत तो मेरे परिवार के रग-रग में था। मेरे नानाजी (नन्दन गिरवर) अपने दिनों में ब्रज की रासलीलाओं के एकछत्र स्वामी थे। मेरे पिता जी (पं0 व्रजकिशोरजी शास्त्री) को भी स्वर-ताल का अच्छा ज्ञान था। मेरी जीजी (माँ) के बिना तो हमारे गली-मुहल्ले में स्त्रियों का कोई गीत-वाद्य जमता ही न था। मैं अपने माता-पिता की अकेली संतान था, इसलिए उनकी अन्य सब चीजों के साथ संगीत भी मुझे विरासत में मिला था। इसी बपौती के कारण मैं अपने संगीत के घंटे का मॉनीटर बनता था और गणेश चतुर्थी के अवसर पर जब हमारे नगर में विद्यालय की गाती-बजाती शोभायात्रा निकलती थी तो मैं उसका बनचट्टा बनाया जाता था। लेकिन मेरा यह संगीत-ज्ञान मुझे विद्यालय के सभा-समारोहों में कोई महत्ता नहीं दिला सका। मुझे किसी समारोह में संगीत सुनाने के लिए आमंत्रित नहीं

किया गया। यह मेरे साथ सरासर अन्याय था और जहाँ तक याद पड़ता है, जान-बूझकर तो मैंने अन्याय को बचपन से ही सहन नहीं किया।

तभी मैंने देखा कि लोगों के मन में संगीत से अधिक कविता की कद्र है। मैंने पाया कि मेरे साथी लड़कों को संगीत सुनाने के लिए तो नहीं, पर कविताएँ सुनाने के लिए बड़े चाव से आमंत्रित किया जाता है, फिर यह भी देखा कि अच्छे-बुरे की, आदर-अनादर की सूचना तालियों द्वारा ही प्रकट होती है। मैं देखता कि साथी लड़कों का संगीत सुनने के बाद तालियों की तड़तड़ाहट बड़ी क्षीण होती है और उसमें भी लड़के नहीं, अध्यापक ही थोड़ा रस लेते हैं। मगर कविता के बाद जिस तरह तालियों के खाली बादल गरजते थे, उन्हें देखकर मेरे मन में भी कविताएँ सुनाने की लालसा उत्पन्न होने लगी।

मथुरा में तब ब्रजभाषा के सुप्रसिद्ध कवि श्री नवनीत चतुर्वेदी जीवित थे। उनकी वहाँ अच्छी शिष्य-मंडली थी। इन शिष्यों को ब्रजभाषा के अनेक चुटीले कवित्त-सवैये कंठस्थ होते थे। बसंतोत्सव के फूलडोलों, सावन के हिंडोलों और श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के अवसर पर जगह-जगह इनके पढ़ंत-दंगल जुटा करते थे, जिनमें दूर-दूर के कवित्त-सवैये पढ़नेवाले मथुरा आया करते थे और हार-जीत की बाजी लगा करती थी। इनमें से एक रामलला जी हमारे पड़ोसी थे। इन्हें अकेले पावस पर ही कोई सैकड़ों छन्द याद थे। यों वह उम्र में मुझसे कोई थोड़े ही बड़े थे, लेकिन कवि होने के कारण समाज में उनकी गिनती समझदारों में हो चली थी। मंैने रामलला जी से मेल-जोल बढ़ाना प्रारम्भ किया। मैं भी अब ब्रजभाषा के पुराने कवित्त-सवैये याद करने लगा और उन्हें विद्यालय में अपना बता-बताकर सुनाने लगा।

पर शीघ्र ही मैंने देखा कि मतिराम, भूषण, पद्माकर, ग्वाल, रसखान और नवनीत के छन्दों को अधिकांश सुनने वाले पहचान जाते हैं। पहचानने के बाद उनमें सुनानेवाले के प्रति उतना आदर नहीं रह पाता जितना कि मैं चाहता था। तब मैंने अपनी राह बदली और रामललाजी से खुशामद कर-करके अपने नाम से कविताएँ बनवाने लगा और विद्यालय के उत्सवों में छाती तानकर उन्हें गर्व से सुनाने लगा। थोड़े ही दिनों में श्रोताओं पर रौब जम गया कि मैं भी अक्षर जोड़ लेता हूँ। तभी मूँड़ मुड़ाते ही ओले पड़े।

हमारे नगर में प्रति वर्ष नुमाइश लगा करती थी और उसमें हर बार एक कवि-सम्मेलन हुआ करता था। इस कवि-सम्मेलन में एक घंटा पूर्व समस्या दी जाती थी और सर्वोत्तम तीन समस्या-पूर्तियों पर कलेक्टर साहब इनाम दिया करते थे। इसके लिए शिक्षा-संस्थाएँ भी अपने यहाँ से चुने हुए छात्रकवि भेजा करती थीं। इस बार हमारे विद्यालय से मेरा नाम भी प्रतियोगिता के लिए प्रेषित कर दिया गया। मैंने सुना तो मुझे काठ मार गया। घबराया हुआ अपने क्लासटीचर के पास गया।

मेरे क्लासटीचर श्री कामेश्वरनाथजी थे। वे पक्के आर्यसमाजी थे। मेरे पिताजी के मित्र थे। मुझ पर भी बड़ा स्नेह रखते थे। मुझ जैसे शरारती को चुपचाप खिसियाया हुआ-सा देखकर वह बोले, 'भूसुरजी, क्या बात है?'

मैंे धरती की ओर देखता रहा।

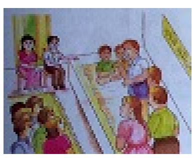

उन्होंने समझा कि किसी से पिटकर या किसी को पीटकर आया है। जरा रुखाई से पूछा, "बताओ न, क्या बात है ?"

मेरे मुँह से फिर भी कोई बोल नहीं निकला। लेकिन मेरी आँखों की आर्द्रता और मँुह की बेबसी ने उनकी रुखाई को ठंडा कर दिया। उन्होंने अनुभव किया कि कोई गंभीर बात है। मेरी पीठ पर हाथ रखकर पुचकारते हुए बोले, "बोलो बेटे, क्या बात है?"

मैंने लगभग हकलाते हुए कहा, "आपने नुमाइश में मेरा नाम भिजवाया है?"

उन्हें हँसी आ गयी, कहने लगे, "हाँ तो क्या हुआ? शाम को ठीक समय पर पंडाल में पहँुच जाना। मैं भी वहीं मिलूँगा।"

शब्द आते-आते मेरे गले में अटक गये।

वह कहने लगे ‘‘झिझक तो शुरू-शुरू में होती ही है, पर नालायक, तूने झिझकना कब से सीख लिया ?’’ इस समय सोचता रहा कि कैसे कहूँ? कहूँ कि न कहूँ? अन्त में साहस करके मैंने कह ही दिया कि जी मैं जो कविताएँ सुनाया करता हूँ, वे तो सब पराई होती हैं।

कोई और अवसर होता तो मास्टरजी ने मलते-मलते मेरे कान सुर्ख कर दिये होते लेकिन भगवान की कृपा से इस बार उन्होंने वैसा कुछ नहीं किया। मुस्कराकर बोले, ‘‘धत्तेरे की ! पर अब क्या हो? हमने तो विद्यालय से अकेले तुम्हारा ही नाम भेजा है। तुम्हारे न जाने से बड़ी बदनामी होगी।’’

मैं इसका क्या जवाब देता?

वह भी कुछ देर चुप सोचते रहे, फिर एकाएक मेरा भविष्य जैसे उनकी आँखों में चमक गया हो, ऐसे उत्साह में भरकर बोले ‘‘कविता करना बहुत आसान है। तुम घबराओ नहीं। देखो, वहाँ मामूली-सी समस्याएँ दी जायेंगी, यही ‘आई है’, ‘गाई है’, ‘सुहायौ है’ आदि। तुम ऐसा करना कि जो भी समस्या तुम्हें दी जाये पहले उसकी चार तुकें जमा लेना। उदाहरण के लिए अगर ‘आई है’ समस्या दी जाय तो पहले छाई है, भाई है, एक ओर लिख लेना । समझ गये न?’’ मैंने छंद-रचना के पहले पाठ को हृदयंगम करते हुए स्वीकृति-सूचक सिर हिलाया। ‘‘तो बताओ ‘सुहायौ है’ की क्या तुक बनाओगे?’’ सारी हिचक हवा हो गयी और मैंने तड़ाक से कहा ‘‘आयौ है, गायौ है, भायौ है।’

‘‘शाबाश, बस एक काम और करना।’’

वह कहने लगे-

‘‘देखो, एक कवित्त में 4 पंक्तियाँ होती हैं और हर पंक्ति में 31 अक्षर होते हैं और अन्त के अक्षरों में वही तुकें रख देना बेटे, कविता बन जायेगी।’’

यों गणित में मैं भी कभी अच्छा नहीं रहा। हमेशा तिमाही-छमाही में इसने मुझे अंडा और सालाना में बड़े प्रयत्नों के बाद प्रमोशन दिलाया है। मगर होनहार की बात कि उस दिन कविता का यह जटिल गणित मेरी समझ में तत्काल आ गया।

मुझे आज भी याद है कि उस दिन जब नुमाइश में कविता की परीक्षा देने के लिए मैं पहले-पहल पहँुचा तो मेरे मन में कोई दुविधा या संकोच नहीं था। यद्यपि आगत कविजनों में मैं सबसे छोटा था- केवल ग्यारह वर्ष का। मगर सच कहता हूँ कि मैंने उस दिन सबको अपने से छोटा अनुभव किया था, क्योंकि मैंने समझ लिया था कि कविता का जो गुर मैंने अभी आज दोपहर को प्राप्त किया है, वह इनमें से किसी के पास नहीं है।

समस्या दी गयी ''कर्ज कौ करबौ और मरबौ बराबर है।'' मैंने फौरन ''बराबर'' शब्द को पकड़ा और फुल स्केप साइज के कागज की दाहिनी तरफ एक के नीचे एक लिखना शुरू किया-'सरासर है', 'झराझर है' लेकिन जैसे बन्दूक और सन्दूक के बाद तीसरी तुक नहीं मिलती, वैसे ही मुझे बराबर की तीसरी तुक उस समय नहीं मिली पर मैं रुका नहीं, 'बराबर है' की तीसरी तुक 'ऊपर है' लिखकर फौरन समस्या-पूर्ति कर डाली।

कविता तो मुझे अब याद नहीं रही, लेकिन उसका भाव यह था कि देखो मित्र, तुम्हारे पिता ने कर्जा लिया था, उसका कैसा बुरा फल निकला। वह स्वयं तबाह हुए और तुम्हें भी बरबाद कर गये। इसीलिए किसी ने सच ही कहा है कि ''कर्ज कौ करबौ और मरबौ बराबर है।''

समस्या-पूर्ति के लिए एक घंटे का समय दिया गया था। मगर मंैने कोई बीस मिनट में ही- जैसे तेज विद्यार्थी सवाल हल करके स्लेट मास्टर साहब को पकड़ा देता है, कागज परीक्षक को थमा दिया।

उस दिन का वह दृश्य आज भी मेरी आँखों के सामने चित्र की तरह खिंचा हुआ है। कवि-सम्मेलन का पंडाल श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था। मेरे हेडमास्टर और कविता की कुंजी बतानेवाले क्लासटीचर भी बगल की कुर्सियों पर बैठे हुए थे। भीड़ में मेरे विद्यालय के कितने ही विद्यार्थी और सहपाठी भी शामिल थे। मेरा नाम पुकारा गया। मैं उत्साह के साथ भीड़ को चीरता हुआ मंच पर आया। चारों तरफ तालियाँ बज रहीं थीं। पर मैंने उन पर कान नहीं दिया। विश्राम घाट के चैराहेवाले हनुमान जी को मैं रोज सन्ध्या को हनुमान चालीसा का पाठ सुनाया करता था। मन-ही-मन उनका स्मरण किया और हाथ हिला-हिलाकर कविता सुनाने लगा।

स्वर मेरा सधा हुआ था। शक्ल भी बचपन में बुरी नहीं लगती थी। लोगों ने जो बच्चे के मुँह से कच्ची समस्या-पूर्ति सुनी तो गद्गद हो गये। सभी लोग प्रशंसा और आश्चर्य के भाव से मुझे देख रहे थे। कविता की समाप्ति के बाद मैं तालियों के तूफान में जो खोया तो फिर सुध-बुध नहीं रही। मेरी साँस फूलने लगी। पसीना आ गया। शायद और अधिक देर होती तो मैं लड़खड़ा कर मंच पर ही बैठ जाता कि तभी हमारे विद्यालय के हेडमास्टर श्री मुकुटबिहारीलाल जी लपके हुए मंच पर आए और उन्होंने दौड़कर मुझे गोदी में उठा लिया। मुझे लगा कि मानो साक्षात देवी सरस्वती ने मुझे अंक में भर लिया है। उनकी गोद में जाते ही मेरा सम्मान कई गुना बढ़ गया। मेरे विद्यालय के लड़के जोर-जोर से तालियाँ बजा-बजाकर कूदने लगे।

मैंने गोदी से उतरकर हेडमास्टर साहब और कामेश्वरनाथ जी के चरण छुए। इस प्रकार मेरी पहली कविता ने ही धूम-धाम से मेरे कवि होने की घोषणा जनता में कर दी। घड़ीभर में मैं चोर से साहूकार हो गया।

-गोपालप्रसाद व्यास

गोपाल प्रसाद व्यास का जन्म 13 फरवरी सन् 1915 ई0 (माघ शुक्ल दशमी, संवत 1972) को मथुरा जनपद के मुहम्मदपुर (परसौली) गाँव में हुआ था। यह वही स्थान है जहाँ सूरदास ने अनेक भक्ति-पदों का निर्माण किया और वहीं पर उनका देहावसान हुआ। इनके पिताजी पं0 ब्रजकिशोर शास्त्री स्वर-ताल के अच्छे ज्ञाता थे और माता चमेली देवी गीत-वाद्य की अच्छी जानकार थीं। इनकी स्कूली शिक्षा केवल सातवीं कक्षा तक हुई। बाद

में इन्होंने विशारद, प्रभाकर और साहित्य रत्न की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। ये जाने-माने पत्रकार, लब्धप्रतिष्ठ व्यंग्यकार, शिष्ट हास्यरस के सुप्रसिद्ध कवि और लेखक हैं। 28 मई 2005 को इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ

खुशामद = चापलूसी। पावस = वर्षा ऋतु। नुमाइश = प्रदर्शनी। आर्द्रता = नमी। हृदयंगम = हृदय मंे अच्छी तरह बैठा हुआ, भली प्रकार समझ में आया हुआ।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. किसी समस्या के आधार पर भी कविता लिखी जा सकती है। यहाँ कविता की एक पंक्ति दी गई है। इसे आगे बढ़ाएँ-

(क) प्लेटफार्मे से गाड़ी छूटी,

....

....

............................।

(ख) हम सब राही एक डगर के

....

....

...........................।

2. अपने हिन्दी के अध्यापक की सहायता से कक्षा में ‘कवि दरबार’ का आयोजन कीजिए, जिसमें प्राचीन कवियों की वेश-भूषा में आप उन कवियों की कविता को उचित हाव-भाव के साथ प्रस्तुत करें। कुछ छात्र, अपनी लिखी कविता भी प्रस्तुत कर सकते हैं।

3. पाठ मंे लेखक ने अपने बचपन की घटनाओं को प्रस्तुत किया है, आप भी अपने बचपन की कोई रोचक घटना लिखिए तथा कक्षा मंे प्रस्तुत कीजिए।

विचार और कल्पना

1. लेखक को अवसर मिला तो वे कवि बन गए, यदि आपको अवसर मिले तो आप क्या बनना चाहेंगे और क्यों?

2. लेखक के विद्यालय में सभा, उत्सव, समारोह आदि के अवसर पर कविताएँ प्रस्तुत की जाती थीं। आपके विद्यालय में इन अवसरों पर क्या-क्या होता है?

आत्मकथा से

1. बालक गोपालप्रसाद को संगीत के घंटे का माॅनीटर क्यों बनाया जाता था ?

2. लेखक के मन में कविताएँ सुनाने की इच्छा क्यों होने लगी ?

3. कक्षाध्यापक द्वारा नुमाइश में नाम भेजने पर बालक गोपालप्रसाद को घबराहट क्यों हुई ?

4. बालक गोपालप्रसाद द्वारा ‘दूसरों की लिखी कविताओं को अपना बताकर सुनाने की चोरी’ स्वीकार करने से क्या लाभ हुआ ?

5. कक्षाध्यापक ने अपने छात्र को कविता बनाने के क्या गुर सिखाए ?

6. बालक गोपालप्रसाद की 'समस्या-पूर्ति' को सुनकर श्रोताओं में क्या प्रतिक्रिया हुई ?

भाषा की बात

1. 'समाज-सुधार' शब्द 'समाज' व 'सुधार' दो शब्दों से मिलकर बना है। समाज-सुधार शब्द में सामासिक चिह्न (-) के स्थान पर कारक चिह्न 'का' छिपा हुआ है। ऐसे शब्द 'तत्पुरुष समास' कहलाते हैं। तत्पुरुष समास के ऐसे ही पाँच उदाहरण पाठ में से छाँटकर लिखिए।

2. नीचे दिये गये मुहावरों के अर्थ लिखिए और इनका प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए-

मूँड़ मुड़ाते ही ओले पड़ना, काठ मार जाना, चोर से साहूकार होना।

3. निम्नांकित पंक्तियों में पर शब्द के तीन प्रकार के प्रयोग हुए हैं-

(क) मैं मंच 'पर' कविता पढ़ने पहुँचा।

(ख) 'पर' वहाँ बहुत बड़े-बड़े कवि विद्यमान थे।

(ग) मैं कविता के 'पर' लगाकर आसमान में उड़ने लगा।

तीनों पर का प्रयोग क्रमशः 'ऊपर', 'लेकिन' तथा 'पंख' के अर्थ में हुआ है। इसी प्रकार आप भी 'पर' शब्द का प्रयोग अपने वाक्यों में करते हुए तीन वाक्य बनाइए।

इसे भी जानें

(क) बारह राशियाँ-मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन।

(ख) प्रस्तुत पाठ आत्मकथा विधा मंे लिखा गया है। आत्मकथा स्वयं के अनुभव व्यक्त करने का सबसे सरल माध्यम है। आत्मकथा के द्वारा लेखक अपने जीवन, परिवेश, महत्त्वपूर्ण घटनाओं, विचारधारा, निजी अनुभव, अपनी क्षमताओं, दुर्बलताओं के साथ-साथ अपने समय की सामाजिक व राजनैतिक स्थितियों को पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है।

पाठ 20

52A7UD

एक संसद नदी की

(प्रस्तुत 'रिपोर्ताज' दैनिक समाचार पत्र 'हिन्दुस्तान' से साभार लिया गया है। इसमें मैग्सेसे सम्मान प्राप्त राजेन्द्र सिंह द्वारा राजस्थान के अलवर जिले में जल-प्रबन्धन द्वारा जल-संचयन एवं जल - क्रान्ति का वर्णन किया गया है)

सूखी धरती में पानी लौट आया। सिर्फ पानी ही नहीं लौटा। उसके साथ लौट आयी नंगे पहाड़ों पर हरियाली और जीवन में खुशहाली। बरसों से सूखी नदियाँ न सिर्फ सरस हो गयीं, बल्कि मछलियों व अन्य छोटे-छोटे जल-जीवों की क्रीड़ा शुरू हो गयी। जगह-जगह पानी का जमा होना, कुओं का फिर से चढ़ जाना और हरे-भरे होते जा रहे खेतों में पानी फेंकती मशीनें देखकर सहसा यकीन करना मुश्किल हो जाता है कि क्या यह वही धरती है जो हर साल 'मौसम आते ही' अकाल और सूखे की चपेट में आ जाती है !

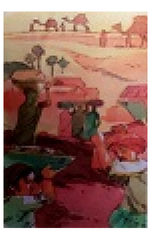

राजस्थान की धरती पर हुई यह जलक्रान्ति एक-दो नहीं करीब पन्द्रह सालों के कड़े संघर्ष और समाज की अथक मेहनत का नतीजा है। इस जल क्रान्ति को संभव बनाने में केन्द्रीय भूमिका रही राजेन्द्र सिंह की। इनके प्रयासों की सुखद और अनूठी मिसाल हैं- वे पाँच नदियाँ। जो दो दशक पहले सूख गयी थीं पर अब सदानीरा हो गयी हैं। पारम्परिक तरीके से जल-प्रबन्धन का अद्भुत उदाहरण पेश करती इन नदियों ने कितने ही गाँवों की तस्वीर

बदलकर रख दी हैं। अखरी, रुपारेल, सरसा, भगाणी और जहाज वाली नदी में फिर से बहता पानी इन गाँवों के लोगों के जुझारू चरित्र का अद्भुत प्रमाण है। अलवर जिले में अपनी मेहनत से सूखी नदियों को फिर से पानीदार बनाने वाले गाँव के मेहनतकश लोगों ने इन्हें अपनी सम्पत्ति मान लिया है।

एक दिलचस्प बात यह है कि अखरी नदी को जिलाने वाले लोगों ने तो इसके संरक्षण के लिए अखरी संसद का गठन कर लिया है। अखरी संसद के कई अधिवेशन भी हो चुके हैं। इन बैठकों में लगभग 75 गाँवों के लोग हिस्सेदारी करते हैं। अखरी संसद में पानी के उपयोग के उचित कानून बनते हैं। इन पर सख्ती और बगैर किसी कोताही के अमल भी होता है। एक नियम के अनुसार यदि कोई बाहरी व्यक्ति मछली मारते पकड़ा गया तो उस पर 11 से 1100 रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। इस नदी पर किसी सरकार का नहीं, अखरी संसद का कानून चलता है। इस समय अखरी संसद के सौ से ऊपर सदस्य हैं।

जब अखरी सहित अन्य नदियाँ सूख चुकी थीं तो इन्हें पुनर्जीवित करने के लिए प्रशासन ने कोई ध्यान नहीं दिया। पर जब लोगों की लगन और मेहनत से इनमें पानी बहने लगा तो स्थानीय प्रशासन ने इन पर नजरें टिका लीं। एक ठेकेदार को अखरी में मछली मारने का ठेका दे दिया गया। पर वह ठेकेदार अपने दल के साथ हमीरपुर गाँव पहुँचा तो गाँव वालों ने पूरी एकता से उसका विरोध किया। ठेकेदार को तब गाँव वालों ने अपनी संसद के बारे में बताया और साथ ही गिना दिया नियम भी। ठेकेदार के पास चुपचाप चले जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं था।

दुःख और कमजोरी में समाज का साथ देने के विचार से राजेन्द्र सिंह अक्टूबर 85 में राजस्थान के अलवर जिले के किशोरी गाँव में पहुँचे थे। वे समाज को शिक्षित करना चाहते थे। यहाँ आकर उनका शिक्षा के पूर्वाग्रहों का किला टूट गया। गाँव के बुजुर्गों ने उन्हें एक बड़ी नेक सलाह दी। सलाह थी पढ़ाई से पहले पानी। सूखे से बरसों से जूझ रहे उन बूढ़े लोगों के ज्ञान और समाज की दशा को देखकर राजेन्द्र सिंह को ये बात जँच गयी। उन्हें लगा इस समाज को वाकई पढ़ाई से पहले पानी की जरूरत है। अपने साथियों के साथ तब उन्होंने पानी बचाने और बढ़ाने का काम करने का मन बना लिया।

अब सवाल था कि आखिर यह सब होगा कैसे? इसके लिए राजेन्द्र सिंह को किशोरी और गोपालपुरा गाँव के उन्हीं पुराने और अनुभवी लोगों की मदद लेनी पड़ी। गाँव के लोगों ने उन्हें पारम्परिक जल प्रबन्धन की पुरानी विधियों की विस्तार से जानकारी दी। मशविरा

सीधा-सा था। छोटे-छोटे बाँध बनाये जाएँ। सूख चुके कुएँ-बावड़ियों को गहराकर उन्हें फिर से जीवित किया जाय। इसके साथ ही जोहड़ बनाये जाएँ। नदियों को जिलाया जाए इत्यादि। सीधा गणित बरसाती पानी के प्रबन्धन का था। प्रबन्ध इस तरह से कि बारिश का पानी बहकर बेकार न जाय। उस पानी को छोटे-छोटे बाँध और एनी कट बनाकर रोक लिया जाय। जब पानी रुकेगा तो वहीं धरती में समा जायेगा। इससे धरती के नीचे पानी सुरक्षित भी रहेगा और वह अन्दर ही अन्दर ढलान या नीचे की तरफ रिसता रहेगा। जब जमीन के अन्दर पानी बना रहेगा और

धीरे-धीरे आगे या नीचे की ओर बढ़ेगा तो आस-पास के कुओं का जलस्तर उठेगा। सूखी धरती को पानी मिलने से हरियाली होगी और खेती भी की जा सकेगी। बस, यही था जल-प्रबन्धन का पूरा शास्त्र, जो गाँव के लोगों ने समझाया।

बकौल राजेन्द्र सिंह तब हमें यकीन आने लगा कि यदि ऐसा हो सका तो ग्रामीण समाज की दशा-दिशा और हालात में जबरदस्त परिवर्तन आ सकता है। ग्रामीण जीवन के आधार कृषि और पशु ही तो हैं। दोनों होंगे और बचे रहेंगे तो लोगों का जीवन भी टूटने और बिखरने से बच जायेगा। गाँव के लोगों ने यह भी समझाया कि जिस समाज में रहकर काम करना है, सीखना भी वहीं से होगा। दूसरे, करना भी वही होगा जो समाज चाहता है। फैसला भी समाज का और मेहनत भी। आपको सिर्फ समाज का साथ देना है। उसे परम्पराओं का स्मरण कराना है। कुल मिलाकर हालात से हारे लोगों की निराशा दूर करनी है, ताकि वे इस काम को आत्मविश्वास से करें। इस के लिए पहले लोगों का मन बनाना होगा। उन्हें काम, काम के तरीके और इससे मिलने वाले लाभ के बारे में समझाना पड़ेगा।

बहरहाल, काम की शुरुआत गोपालपुरा गाँव के चबूतरे वाले जोहड़ से हुई। इसके लिए लोगों से चन्दा इकट्ठा किया और उन्हें श्रमदान के लिए भी राजी किया। गाँव के कुछ उत्साही लोग गैंती-फावड़े लेकर जुट गये। चूँकि गोपालपुर में उस समय ज्यादा लोग नहीं थे, इसलिए सिलीबावड़ी के लोगों से मशक्कत करायी गयी। हाँ, देखरेख का जिम्मा

गोपालपुरा के लोगों ने ही सँभाला। इस तरह गोपालपुरा में चैतरे वाला जोहड़ और मेवालों वाला बँाध बनकर तैयार हो गया। लोगों को अब बस बरसात का इन्तजार था। लम्बे इन्तजार के बाद पानी गिरा और जोहड़ पानी से भर गया। मेहनत से बनाए जोहड़ में पानी देखकर गाँव के लोग पुलकित थे। पानी से लबालब चैतरे वाले जोहड़ ने लोगों का विश्वास पक्का कर दिया कि अगर इस सिलसिले को आगे बढ़ाया जाय तो सुखद परिणाम जरूर निकलेंगे। इस तरह अभिक्रम शुरू हुआ एक के बाद एक तालाब और जोहड़ बनाने का।

इतना बड़ा काम हुआ तो उसकी चर्चा होनी ही थी। दूसरे गाँवों के लोग भी गोपालपुरा में पानी का प्रबन्धन देखने आने लगे। उन्हें भी लगा कि जब इस गाँव के लोग अपनी मेहनत के दम पर ऐसा चमत्कार कर सकते हैं तो वे क्यों नहीं? फिर तो गाँव के गाँव इस काम में जुट गये। राजेन्द्र सिंह ने बाकायदा संस्था बनाकर इस मुहिम को आगे बढ़ाना शुरू किया। काम का तरीका यह था कि जिस बाँध, तालाब या जोहड़ बनाने में जो खर्च आयेगा उसका दो तिहाई संस्था वहन करेगी और बाकी स्थानीय लोगों से जमा किया जायेगा। ऐसा इसलिए कि जब लोगों का पैसा लगेगा तो उसका उस काम से स्वाभाविक रूप से जुड़ाव होगा। फिर श्रम भी तो स्थानीय लोगों को ही करना था। इस तरह लोग इस काम और संस्था से जुड़ते चले गये। संस्था के लोगों ने अपने काम को फैलाने के लिए गाँव-गाँव पैदल यात्राएँ शुरू कर दीं। इन यात्राओं का लाभ यह हुआ कि लोग जल के साथ जंगल का महत्त्व भी समझने लगे।

करीब 15 साल पहले शुरू हुआ छोटा सा प्रयास एक मुहिम बनकर अलवर सहित राजस्थान के दोसा, जयपुर, टोब, उदयपुर, करौली और सवाई माधोपुर जिलों में भी फैल चुका है। इन जिलों के सैकड़ों गाँवों में इन दिनों पानी बचाने, बढ़ाने का काम चल रहा है। राजस्थान के जिन इलाकों में पारम्परिक तरीके से जल-प्रबंधन का काम हुआ है, वहाँ की तस्वीर पूरी तरह से बदल गयी है।

भू-जल स्तर उठने से कुएँ जी उठे हैं। 'डार्क जोन' 'ह्वाइट जोन' में तब्दील हो गये हैं। हरियाली वापस आ गयी है। धरती की उर्वरा शक्ति भी लौट आयी है। फसल-चक्र भी बदल गया है। अरावली की नंगी पहाड़ियों पर फिर से पेड़-पौधे उगने लगे हैं।

वतन छोड़कर रोजी-रोटी की तलाश में पलायन कर गये, गाँव के लोग वापस आने लगे हैं। अपने खेतों में भरपूर फसल पैदा कर रहे हैं। पलायन पर विराम लग चुका है। धूप और लू की गर्म लहरें झेलकर पानी के लिए रोज कोसों की यात्रा करने वाली महिलाओं के तो दिन ही फिर गये हैं। अब वे घर का काम निपटाकर घर-परिवार की सोचने लगी हैं और बच्चे जो पहले कुछ या कुछ भी नहीं करते थे, पाठशाला जाने लगे हैं।

बहरहाल जल-संरक्षण का यह अद्भुत काम नीति-निर्धारकों के लिए सबक है और शेष समाज के लिए सीख। आज जबकि हर जगह पानी की किल्लत है, ऐसे में इस तरह का काम निश्चय ही प्रेरक और अनुकरणीय है। राजेन्द्र सिंह भी मानते हैं कि पानी बचाने का यह काम इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आज भी हमारी परम्पराएँ प्रासंगिक हैं। उनमें समाज को समृद्ध करने के पर्याप्त बिन्दु मौजूद हैं। जल-संरक्षण के व्यापक काम की बदौलत राजेन्द्र सिंह को मिले मैग्सेसे सम्मान ने भी हमारी परम्पराओं की प्रासंगिकता को ही पुष्ट किया है। निःसंदेह इन्हीं परम्पराओं पर विश्वास कर राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और गुजरात में कई जगह जल- संरक्षण का काम चल रहा है।

राजस्थान में अगर परम्पराओं को आधार बनाकर काम किया जा रहा है तो गुजरात में कुछ काम वैज्ञानिक तकनीक की मदद लेकर भी चल रहा है। वैज्ञानिक तकनीक की मदद उस जगह की पहचान करने में ली जाती है, जहाँ पानी इकट्ठा किया जा सकता है। इस तकनीक का नाम है रिमोट सेंसिंग। रिमोट सेंसिंग के माध्यम से धरती के किसी हिस्से के चित्र लिये जाते हैं। उन चित्रों में धरती की आन्तरिक रचना भी स्पष्ट हो जाती है। आन्तरिक रचना जानकर यह अन्दाजा आसानी से लगाया जा सकता है कि अमुक जगह पानी जमा करने के लिए ठीक रहेगी या नहीं। इससे यह भी पता चल जाता है कि जमीन के भीतर पानी किस गति से रिसेगा। रिमोट सेंसिंग तकनीक, पहाड़ी और पठारी इलाकों में ज्यादा कारगर है। नेहरू विश्वविद्यालय में भी इसी तकनीक की मदद से तीन चैक डैम बनाये गये हैं। उल्लेखनीय है कि जल-संरक्षण की अहमियत समझते हुए ही विश्वविद्यालय

ने इसके लिए एक पाठ्यक्रम की भी घोषणा की है। लेकिन विडम्बना यह है कि जल संकट जिस तेजी के साथ गहरा रहा है, उस तेजी के साथ काम नहीं हो पा रहा है। इसलिए कुदरत की अमोल देन जल को बचाने, बढ़ाने के लिए हर एक को जागरूक होकर अपने स्तर पर कुछ न कुछ करना होगा।

शब्दार्थ

सतत् = हमेशा, सर्वदा। **रीते** = खाली। **मेहनतकश** = मेहनत करने वाला, परिश्रमी। **कोताही** = लघुता, कमी। **पूर्वाग्रह** = पहले से बनी बनायी धारणा। **मशविरा** = परामर्श, सलाह। **जोहड़** = जलाशय। **एनीकट** = गड्ढा जिसमें जल संचित हो। **अभिक्रम** = आरम्भ, प्रयत्न। **मुहिम** = कोई बड़ा काम, मेहनत का काम। **डार्क जोन** = जहाँ जल का स्तर नीचे हो, पानी के अभाव वाले क्षेत्र। **ह्वाइट जोन** = जहाँ पानी का स्तर ऊपर हो। **रिमोट सेंसिंग** = इसके माध्यम से धरती के अन्दर का चित्र लिया जाता है।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अपने जिलाधिकारी को एक पत्र लिखिए-जिसमें अपने क्षेत्र में स्थित एकमात्र तालाब, जो कभी पर्यटन-स्थल था, किन्तु अब उसमें जलकुम्भी तथा गन्दगी भरी है, या सूख गया है, उसकी सफाई हेतु निवेदन किया गया हो।

पत्र लेखन में निम्नांकित प्रारूप की मदद ले सकते हैं।

सेवा में,

जिलाधिकारी,

जिलाधिकारी कार्यालय,

जनपद ....

विषय - ....

महोदय/महोदया,

....
....

दिनांक........... प्रार्थी

2. आपने अनुभव किया होगा कि हमें जितनी आवश्यकता होती है, उससे कहीं ज्यादा पानी हम व्यर्थ ही बहा देते हैं। अपने द्वारा एक दिन में खर्च किए गये जल की मात्रा को नीचे दिये गये तालिका में भरें। यह भी लिखें कि आपने इन कार्यों में कितना अधिक पानी खर्च किया है-

कार्य	खर्च किया गया जल (अनुमानित)	कितने पानी में काम चल सकता था (अनुमानित)	कितना पानी अधिक खर्च किया गया

3. यह पाठ हिन्दी गद्य की 'रिपोर्ताज' विधा के अन्तगत ''हिन्दुस्तान'' समाचार पत्र से लिया गया है। आपके विद्यालय अथवा घर में या पास-पड़ोस से आपको कोई अखबार या पत्रिका जरूर मिल जायेगी, जिसमें इसी प्रकार के कुछ रिपोर्ताज होंगे। उनमें अपने गाँव/ब्लाक अथवा तहसील से सम्बन्धित रिपोर्ट छाँटकर उनका संकलन कीजिए तथा स्वयं भी किसी विषय पर रिपोर्ट लिखिए।

विचार और कल्पना

(क) ऐसी दस बातें/कारण लिखिए जिससे सिद्ध हो कि ''जल ही जीवन है।''

(ख) अपने आस-पास के क्षेत्र में जल को बचाने, बढ़ाने के लिए आप अपने स्तर से क्या-क्या प्रयास कर सकते हैं, लिखिए।

(ग) ‘जल-संरक्षण’ के सम्बन्ध में दूसरों को जागरूक बनाने के लिए आप क्या उपाय करेंगे?

(घ) ‘जल-संरक्षण’ से सम्बन्धित एक पोस्टर बनाकर सार्वजनिक स्थान पर लगाएं।

रिपोर्ताज से

1. दो दशक पहले अलवर जिले में जो नदियाँ सूख गयीं थीं, उनके नाम क्या थे ?

2. अक्टूबर सन् 1985 ई0 में राजेन्द्र सिंह राजस्थान के अलवर जिले के किशोरी गाँव में किस उद्देश्य से गये थे?

3. किशोरी और गोपालपुरा गाँव के लोगों ने राजेन्द्र सिंह को जल-प्रबन्धन की कौन-सी पुरानी विधियाँ बतायीं?

4. सूखी धरती में पानी लौटने के साथ और क्या-क्या परिवर्तन हुए?

5. राजेन्द्र सिंह को मैग्सेसे सम्मान क्यों दिया गया?

6. रिमोट संेसिंग तकनीक क्या है, इससे किस क्षेत्र में मदद मिलती है?

भाषा की बात

1. सूखी धरती, सुखद उम्मीद, नंगे पहाड़ में क्रमशः सूखी, सुखद, नंगे शब्द ‘विशेषण’ हैं। जबकि धरती, उम्मीद और पहाड़ ‘विशेष्य’ हैं। इस प्रकार के पाँच अन्य विशेषण-विशेष्य को इस पाठ से छाँटकर लिखिए।

2. निम्नलिखित मुहावरांे का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए-

पानी लौट आया, चपेट में आना, तस्वीर बदलना, नजरें टिकाना, किला टूटना, दिन फिरना।

3. स्थान शब्द में ‘ईय’ प्रत्यय लगा कर ‘स्थानीय’ शब्द बनता है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में ईय प्रत्यय जोड़कर नया शब्द बनाइए-

कथन, राष्ट्र, जल, आकाश, संसद, वन्दन, पठन।

4. ‘प्रबन्धन’ में ‘प्र’ उपसर्ग है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग कीजिए-

प्रहार, प्रवर, प्रशिक्षण, प्रशासन, प्रगति, प्रबुद्ध।

पाठ 21

52J3H1

भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय

(प्रस्तुत पाठ में महामना मदन मोहन मालवीय के जीवनवृत्त का वर्णन किया गया है)

महामना मदन मोहन मालवीय का जन्म ऐसे कालखण्ड में हुआ था, जिस समय भारत नव जागरण के साथ-साथ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्षरत था। जिस काल में मालवीय जी का जन्म हुआ वह समय भारत में बौद्धिक और वैचारिक जागरण का था। उस समय बहुत से समाज सुधारक तथा चिन्तक भारत देश को उसकी मूल राष्ट्रीय और आध्यात्मिक चेतना की ओर लौटाने के लिए प्रयासरत थे।

महामना मदन मोहन मालवीय ने भारतीय स्वतं्त्रता की ऐसी नींव रखी जिसके परिणाम स्वरूप 15 अगस्त 1947 ई0 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। महामना मदन मोहन मालवीय भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के नायक और साक्षी थे। इनका जन्म 25 दिसम्बर, 1861 ई0 को प्रयाग में हुआ था। उनके पिता पण्डित ब्रजनाथ चतुर्वेदी और माता श्रीमती मूनादेवी थीं। इनके पिता भगवद्गीता के व्याख्याकार और कथावाचक के रूप में अत्यधिक प्रसिद्ध थे। मदन मोहन को हिन्दू (सनातन) जीवन दर्शन और संस्कार अपने पूर्वजांे की सांस्कृतिक विरासत से प्राप्त हुआ था। मालवीय जी के पूर्वज 15वीं शताब्दी में मालवा प्रदेश से आकर प्रयाग में बस गये थे और स्थानवाची (मल्लई) अथवा 'चैबे' उपनाम से

जाने गये। मल्लई शब्द को पं0 मदन मोहन ने मालवीय बनाया। तब से सारे मल्लई मालवीय कहे जाने लगे। महामना मालवीय ने गवर्नमेंट हाईस्कूल से शिक्षा प्राप्त करते हुए अंग्रेजी के साथ संस्कृत का गहन अध्ययन किया। आपने म्योर सेण्ट्रल कालेज से बी0ए0 की परीक्षा उŸाीर्ण की।

महामना मदन मोहन मालवीय जी वैदिक (हिन्दू) धर्म और संस्कृति के सच्चे अनुयायी थे। वे तत्कालीन भारत में व्याप्त समस्याओं के समाधान का विकल्प हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान को मानते थे। उनका दृष्टिकोण था कि हिन्दू धर्म के दर्शन द्वारा ही विश्वबन्धुत्व के भाव को जाग्रत किया जा सकता है। अपने इस दिवास्वप्न को पूर्ण करने के लिए उन्हांेने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज की सेवा में समर्पित कर दिया तथा विभिन्न संगठनों के माध्यम से अपने विचारों को व्यावहारिक स्वरुप प्रदान किया।

मालवीय जी ने गंगा के अविरल प्रवाह के लिए 1914 में हरिद्वार में तथा 1924 में प्रयाग में सत्याग्रह किया। उनका मानना था कि गंगा हिन्दुओं के धार्मिक आस्था और विश्वास का प्रतीक है। अतः उसकी धारा बिल्कुल प्राकृतिक होनी चाहिए।

मालवीय जी छुआ-छूत, अस्पृश्यता के घोर विरोधी थे। वे इसे कलंक और राष्ट्रीय विकास के मार्ग में बाधा मानते थे। उन्हांेने पौराणिक उद्धरणों के माध्यम से अस्पृश्यता समाप्ति सम्बन्धी अपनी मीमांसा को व्यक्त किया है। स्त्रियों के प्रति अपना दृष्टिकोण व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा था कि मैं चाहता हँू कि हमारे देश की सभी स्त्रियाँ अंग्रेज महिलाओं की भाँति पिस्तौल और बन्दूके रखें और उनको चलाना सीखें ताकि वे किसी भी आक्रमण से अपनी रक्षा कर सकें। उन्होंने जनता से अनुरोध किया कि वे उन सब सामाजिक कुरीतियों को दूर करें जो स्त्री जाति की उन्नति में बाधक हैं। वे बाल विवाह के घोर विरोधी थे। उन्हांेने सामाजिक उन्नति के लिए स्त्री शिक्षा पर विशेष जोर दिया।

पण्डित मदन मोहन मालवीय ने समाज के पुनरुद्धार के लिए जिन विशयों को केन्द्र में रखा उनमें गौ-रक्षा भी प्रमुख विषय था। उनका मानना था कि गौ भारतीय संस्कृति का सनातन केन्द्र बिन्दु है। इसके लिए उन्होंने गौ-रक्षा आन्दोलन भी चलाएं।

महामना मदन मोहन मालवीय एक राजनीतिज्ञ से अधिक शिक्षाशास्त्री थे। उनका मानना था कि हमारी सारी समस्याओं की जड़ अशिक्षा है। वे शिक्षा को पुरातन एवं नवीनतम मूल्यों के बीच एक सेतु के रूप में देखते थे। इन्हीं धारणाओं को ध्यान मंे रखकर मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। मालवीय जी का सपना था कि सभी स्तर पर शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध हो कि कोई भी बच्चा गरीबी के कारण शिक्षा से वंचित न रह पाये।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 5 फरवरी 1916 ई0 में बसन्त पंचमी के दिन हुई। निःसन्देह मालवीय जी की यह सबसे बड़ी कृति है। मालवीय जी कोई राजा-महाराजा नहीं थे। सन्तोष ही उनका परम धन था फिर भी अपने स्वप्न को पूरा करने के लिए झोला उठा लिया। सर्वप्रथम अपने पिता से 50 रूपये का दान पाकर उन्हांेने फकीरी धारण की और जीवनपर्यन्त फकीर ही रहे। उन्होंने लोगों से भिक्षा माँगकर तथा राजे-महाराजों को कल्याण के लिए प्रेरित कर धन इकट्ठा किया। हिन्दू और मुसलमान समान रूप से इस महायज्ञ में भाग ले रहे थे।

इस प्रकार अपने साहस, उत्साह लगन और तपस्या के द्वारा मालवीय जी ने अपनी कल्पना को मूर्त रूप दिया। वे काशी हिन्दू विष्वविद्यालय को ऐसा केन्द्र बनाना चाहते थे, जिससे राष्ट्र की आध्यात्मिक एवं भौतिक शक्ति के विकास में योगदान तो मिले ही साथ ही विश्व में शान्ति एवं बन्धुत्व की गाथा का भी प्रचार-प्रसार होता रहे।

महामना मालवीय बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने भारतीय राजनीति, शिक्षा, साहित्य एवं पत्रकारिता में अपनी अमिट छाप छोड़ी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अलावा उन्होंने अनेक छोटी-छोटी संस्थाओं को खड़ा किया। राष्ट्र निर्माण में इन संस्थाओं की भूमिका मील का पत्थर है। इन संस्थाओं में हिन्दू छात्रावास, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भारती भवन पुस्तकालय का स्थान महत्वपूर्ण है।

महामना मदन मोहन मालवीय ने अध्ययन अध्यापन के साथ-साथ कई समाचार-पत्रों का संपादन किया तथा तत्कालीन ब्रिटिश शासन की नीतियों का प्रबल विरोध किया। मालवीय जी का निधन 12 नवम्बर 1946 ई0 में हुआ। विलक्षण प्रतिभा के धनी राष्ट्र

नायक मालवीय जी के महान कार्यों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए भारत सरकार द्वारा 30 मार्च, 2015 ई0 को इन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया।

शब्दार्थ

अनुयायी=अनुकरण करने वाला। **पुनरुत्थान**=पतन के बाद फिर से उठना या उन्नति करना। **तत्कालीन**=उस समय का । **दिवास्वप्न**=दिन में देखे जाने वाला स्वप्न। **मीमांसा**=अनुमान, तर्क द्वारा किसी बात का निर्णय करना । **कुरीतियाँ**=कुप्रथाएँ । **सर्वांगीण**=सब अंगों से युक्त, सम्पूर्ण। **अपरिहार्य**=जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके, अनिवार्य।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1-मालवीय जी ने बड़े-बड़े राजा महाराजों से चन्दा माँग कर विष्वविद्यालय की स्थापना के लिए धन इकट्ठा किया। उनके भिक्षाटन के अनेक रोचक प्रसंग हैं, आप अपने शिक्षक या घर के बड़ों की सहायता से उन प्रसंगों को जानिए और लिखिए।

2-मालवीय जी ने अनेक समाचार-पत्रों का संपादन किया। पता लगाइए कि वे समाचार पत्र कौन-कौन से थे ?

3-मालवीय जी को भारत रत्न पुरस्कार मिला था। आप इण्टरनेट/अन्य माध्यमों की मदद से

भारत रत्न प्राप्त महान लोगों की सूची बनाइये।

विचार और कल्पना

1- मालवीय जी ने तत्कालीन समाज की समस्याओं पर आवाज उठाई। आपके विचार से तत्कालीन समाज में क्या-क्या समस्याएँ रही होंगी जिन पर उन्होंने आवाज उठायी ?

2- भारतीय संस्कृति में गाय को माता कहा गया है। इस संबंध में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

3- मालवीय जी ने सभी के लिए शिक्षा की बात कही थी। आज सरकार ने शिक्षा के अधिकार के तहत इसे पूरे देश में लागू कर दिया। कल्पना कीजिए कि जब यह व्यवस्था नहीं रही होगी तो शिक्षा प्राप्त करने में कौन-कौन सी कठिनाइयाँ होती होंगी ? लिखिए।

4- मालवीय जी चाहते थे कि गंगा की धारा को कहीं रोका न जाय क्योंकि गंगा केवल नदी नहीं बल्कि संस्कृति की धारा है। आज गंगा प्रदूषण की शिकार हो गयी है। सोचिए जिस दिन गंगा नहीं रहेगी उस दिन क्या होगा ? इस सम्बंध में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

5-आपके विचार में वर्तमान समाज की क्या-क्या समस्याएँ हैं ? उनके क्या समाधान हो सकते हैं ?

जीवनी से

1.महामना मदन मोहन मालवीय का जन्म कब और कहाँ हुआ था? इनके माता पिता का क्या नाम था ?

2-मदन मोहन और उनके वंशज मालवीय क्यों कहे गये ?

3-मालवीय जी के जन्म के समय भारत की स्थिति कैसी थी ?

4-महामना ने तत्कालीन भारत में समस्याओं के समाधान का विकल्प किसे माना है और क्यों?

5-महामना मालवीय का दिवास्वप्न क्या था ?

6-उन्होंने तत्कालीन समाज में फैली किन-किन समस्याओं पर कुठाराघात किया ?

7-स्त्रियों के प्रति मालवीय जी का क्या दृष्टिकोण था ?

8-काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे मालवीय जी की क्या सोच थी ?

भाषा की बात

1- पाठ में 'साथ-साथ' शब्द आया है जो पुनरुक्त शब्द है। इसी प्रकार दिये गये पुनरुक्त शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

अपना-अपना, धीरे-धीरे, छोटे-छोटे, हँसते-हँसते, पानी-पानी

2- निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए-

साधारण वाक्य - सरला ने कहा, मै कल आऊँगी।

निषेधात्मक वाक्य - सरला ने कहा, मैं नही आऊँगी।

प्रश्नवाचक - सरला ने कहा, मैं कल क्यों आऊँगी ?

इसी प्रकार के दो-दो वाक्य स्वयं बनाकर लिखिए।

3- निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए-

जैसे- जो अनुकरण करने योग्य हो - अनुकरणीय

(क) युग का निर्माण करने वाला। ....

(ख) जो सबको समान भाव से देखता हो। ....

(ग) जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते प्रतीत हों। ....

(घ) जिसका कोई खण्ड न हो सके। ....

4- इस पाठ को पढ़कर आपके मन में महामना मदन मोहन मालवीय के व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएं उभर रही होंगी। उन विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए।

शिक्षण संकेत- श्रव्य-दृश्य सामग्री का प्रयोग करते हुए महामना पं0 मदन मोहन मालवीय के जीवन की अन्य घटनाओं से बच्चों को अवगत कराएँ।

वन्दना

सिन्धु-गोदावरी-ब्रह्मपुत्रादयो,

जाह्नवी-नर्मदा-सह्यकन्यादयः ।

यद् भुवं स्वर्भुवं कुर्वते सर्वदा,

भारतीयां धरां विश्ववन्द्यां नुमः ।।1।।

हिन्दुमुस्लिम-ईसाईजनाःसिक्खिनो

भ्रातृभावं भजन्तश्चिरं चासते ।

धर्मजात्यादिभिभर्देभावैर्विना

भारतीयां धरां विश्ववन्द्यां नुमः ।।2।।

शब्दार्थ

जाह्नवी=गंगा नदी। सह्य=सह्य नाम का पर्वत। कन्यादयः=सह्य पर्वत की कन्या अर्थात् उससे निकलने वाली कावेरी आदि नदियाँ । यद् भुवम्=जिस धरती को। स्वर्भुवम्=स्वर्गलोक। कुर्वते=बनाती हैं। नुमः=हम सब नमस्कार करते हैं। भजन्तः=रखते हुए। चिरम्=बहुत काल से। आसते=रहते हैं।

अन्वय-

(1) सिन्धु-गोदावरी-ब्रह्मपुत्र-जाह्नवी (गङ्गा) नर्मदा- सह्यकन्यादयः (नद््यः) यद् भुवं

सर्वदा स्वर्भुवं कुरुते, (ताम्) विश्ववन्द्यां भारतीयां धरां (वयम्) नुमः।

(2) हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई जनाः सिक्खिनश्च धर्मजात्यादिभिः भेदभावैः विना भ्रातृभावं भजन्तः

(यत्र) आसते (ताम्) विश्ववन्द्यां भारतीयां धरां (वयम्) नुमः।

भावार्थ-

(1) सिन्धु, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र, गंगा, नर्मदा तथा सह्य नामक पर्वत से निकलने वाली कावेरी आदि नदियों द्वारा जिस भूमि को निरन्तर स्वर्गभूमि बनाया जाता है ऐसी विश्व वन्दनीया भारत भूमि को (हम सब) नमस्कार करते हैं।

(2) हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, धर्म, जाति, (रंग, रूप, वेशभूषा) आदि से ऊपर उठकर भाई-चारे के साथ जहाँ चिर काल से निवास करते हैं ऐसी विश्ववन्दनीया भारतभूमि को (हम सब) नमस्कार करते हैं।

शिक्षण-संकेत

(क) 'वन्दना' के पद्यों का अभ्यास कराकर बच्चों से समूह में गान कराएँ।

(ख) पद्यों का अर्थ लिखवाएँ।

प्रथमः पाठः

532UZB

नैनीतालभ्रमणम्

(लङ्लकारः (भूतकालः), आकारान्त-स्त्रीलिङ्गशब्दश्च)

एकदा ललिता वाटिकाम् अगच्छत्। तत्र कला गीता च अमिलताम्। तत्र ललिता कलाम् अपृच्छत्। कले! त्वं कुत्र अभ्रमः? किं किं च नगरं तुभ्यम् अरोचत। तदा कला ताम् अवदत्। अहं ग्रीष्मावकाशे अम्बया सह नैनीताल नगरम् अगच्छम्। तदानीं मम अनुजा वन्दना जनकः अपि आस्ताम्। वयं तत्र एकस्मिन् प्रवासभवने (होटल-मध्ये) अवसाम।

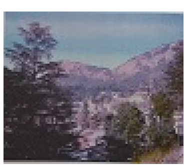

तत्र एकः विशालः सरोवरः अस्ति। यत्र प्रातः अहं वन्दना च सरोवरं परितः अभ्रमाव।

आवां जनकं नौकायात्रायै अवदाव। मध्याह्ने वयं नौकया जलाशये अभ्रमाम।

तत्र अनेकाः नौकाः पर्यटकान् नीत्वा इतस्ततः अगच्छन्। जनाः नौकासु उपविश्य मनोर ´जनम् अकुर्वन्। वयम् अपि नौकागत्या आनन्दम् अन्वभवाम। पर्वतानां मध्ये नौकाभ्रमणम् अत्यानन्दम् अजनयत्। ललिता अवदत्-अहमपि नैनीतालनगरं द्रष्टुम् इच्छामि।

शब्दार्थ

वाटिकाम्=बगीचे। **अमिलताम्**=मिलीं। **कलां**=कला से। **अभ्रमः**=भ्रमण की हो। **अरोचत**=रुचिकर लगे, अच्छे लगे। **ताम्**=उससे। **अवदत्**= बतायी, बोली। **अम्बया सह**=माता के साथ। **तदानीं**=उस समय। **आस्ताम्**=थे। **एकस्मिन्**=एक। **प्रवासभवने**=होटल में। **अवसाम**=रहे, निवास किये। **अभ्रमाव**=घूमे, टहले। **अवदाव**=कहा। **इतस्ततः**=इधर-उधर। **नौकागत्या**=नाव की चाल से, नाव की गति से। **अन्वभवाम**=अनुभव किया।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

अभ्रमः ग्रीष्मावकाशे मध्याह्ने वन्दना नौकायात्रायै अभ्रमाम अत्यानन्दम् द्रष्टुम्

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) ललिता कुत्र अगच्छत्?

(ख) जनाः नौकासु उपविश्य किम् अकुर्वन्?

(ग) ग्रीष्मावकाशे कला कुत्र अगच्छत्?

(घ) नैनीताल-नगरे कला कुत्र अवसत्?

3. कोष्ठक के उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें-

(क) एकदा .... वाटिकाम् अगच्छत्। (ललिता, कला, गीता)।

(ख) तत्र ललिता कलाम् ....। (अपृच्छत्, अपृच्छताम्, अपृच्छन्)।

(ग) तदा कला ताम्............। (अवदत्, अवदताम्, अवदन्)।

(घ) वयं तत्र एकस्मिन् प्रवासभवने (होटलमध्ये) ....। (अवसम्, अवसाव, अवसाम।)

4. हिन्दी में अनुवाद करें-

(क) बालिका वाटिकाम् अगच्छत्।

(ख) तत्र कला गीता च अमिलताम्।

(ग) तत्र ललिता कलां अपृच्छत्।

(घ) तदा कला ताम् अवदत्।

5. निम्नलिखित धातुओं का लट्, लृट्, तथा लङ् लकारों का रूप प्रथम पुरुष

एकवचन में लिखें-

लट् लकार लृट् लकार लङ् लकार

पठ् ....

वद् ....

गम् ....

भ्रम् ....

6. संस्कृत में अनुवाद करें-

(क) मैं विद्यालय गयी।

(ख) तुम कहाँ गयी थी ?

(ग) सरोवर में मैंने नौका-भ्रमण किया।

7. रेखांकित पदों के आधार पर संस्कृत में प्रश्न निर्माण करें-

(क) एकदा लता वाटिकाम् अगच्छत्।

(ख) ग्रीष्मावकाशे निखिलः जयपुर-नगरं गमिष्यति।

(ग) जनाः नौकासु उपविश्य मनोर×जनं कुर्वन्ति।

विशेष-

(क) जिन शब्दों के अन्त में 'आ' स्वर होता है, उन्हें आकारान्त शब्द कहते हैं, जैसे- ललिता, सीता, सुधा, बालिका, गङ्गा, यमुना, नर्मदा, अम्बा, दुर्गा, कला आदि। सभी शब्दों के रूप सातों विभक्तियों में होते हैं।

(ख) 'गया, नहीं गयी, क्यों गये' अथवा 'था, थी, या थे' चिह्न वाले पद जो बीते हुए काल में किये गये कार्यों को बताते हैं, उन्हें भूतकाल की क्रिया कहते हैं। उस भूतकाल की क्रिया का बोध कराने के लिए धातु के लङ्लकार के रूप का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

पठ्= पढ़ना (भूतकाल) लङ्लकार

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
म. पु.	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ. पु.	अपठम्	अपठाव	अपठाम

गम् (गच्छ्), पा (पिब्), नम्, वद्, हस्, खाद्, चल्, वस्, भ्रम्, धाव्, दृश् (पश्य्), वि+हृ

(विहर्), आ+गम् (आगच्छ्) आदि धातुओं के भूतकाल (लङ्लकार) के रूप इसी प्रकार होते हैं।

शिक्षण संकेत-

1. पाठ में आये हुए आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करायें।

2. काल के अनुसार लकारों के प्रयोग को बताकर उनका वाक्यों में अभ्यास करायें।

द्वितीयः पाठः

53BR1Y

काक-शृगाल्योः कथा

(लङ्लकारः)

एकदा एकः काकः बुभुक्षितः आसीत्। भोजनं प्राप्तुं सः इतस्ततः अभ्रमत्। सहसा सः एकां रोटिकां प्राप्तवान्। सः एकस्य वृक्षस्य शाखायाः उपरि उपाविशत् तां रोटिकां खादितुं चअचिन्तयत्। तदैव एका शृगाली काकं रोटिकाम् च अपश्यत्। सा तां रोटिकां प्राप्तुं मनसि अचिन्तयत्। सा तस्यैव वृक्षस्य अधः अतिष्ठत् यस्य उपरि काकः उपविष्टः आसीत्।

शृगाली काकम् अवदत्-भो काक ! त्वम् अतीव सुन्दरः असि। तव वर्णः मोहकः अस्ति। तव पक्षौ मनोहरौ स्तः। तव ध्वनिः अतीव मधुरः अस्ति। तव ध्वनिं श्रुत्वा मम कर्णौ तृप्तौ भवतः। स्वप्रशंसां श्रुत्वा काकः अतिप्रसन्नः अभवत्। यदैव सः 'काँव्-काँव्' इति ध्वनिं कर्तुम् आरभत तदा तस्य मुखात् रोटिका भूमौ अपतत्। एतदर्थम् एव शृगाली तस्य प्रशंसाम् अकरोत्। सा शीघ्रम् एव रोटिकां गृहीत्वा तस्मात् स्थानात् पलायिता अखादत् च।

शब्दार्थ

एकदा=एक बार। **बुभुक्षितः**=भूखा। **इतस्ततः**=इधर-उधर। **सहसा**=अचानक। **शाखायाः**=डाल के। **उपरि**=ऊपर। **उपाविशत्**=बैठ गया। **शृगाली**=सियारिन, लोमड़ी । **प्राप्तुम्**=प्राप्त करने के लिए। **श्रुत्वा**=सुनकर। **पलायिता**=भाग गयी।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

बुभुक्षितः   शाखायाः   अचिन्तयत्   पक्षौ   स्वप्रशंसाम्   उपविष्टः

2. एक पद में उत्तर दंे -

(क) कः बुभुक्षितः आसीत् ?

(ख) सहसा काकः किं प्राप्तवान् ?

(ग) शृगाली किं प्राप्तुं मनसि अचिन्तयत् ?

(घ) कस्य मुखात् रोटिका भूमौ अपतत् ?

3. पाठ के पदों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें -

(क) एकः काकः .... आसीत्।

(ख) सः इतस्ततः .... ।

(ग) स्वप्रशंसां श्रुत्वा काकः .... अभवत्।

(घ) एतदर्थमेव शृगाली तस्य .... अकरोत्।

(ङ) सा रोटिकां गृहीत्वा .... पलायिता।

4. निम्नलिखित पदों का अपने वाक्यों में प्रयोग करें -

भोजनम्, अपतत्, रोटिकाम्, सुन्दरौ।

5. निम्नलिखित पदों को मिलाकर लिखें -

काकम् + अवदत् = ...।

तद् + उपरि = ...।

एतद् + अर्थमेव = ...।

प्रशंसाम् + अकरोत् = ...।

6. संस्कृत में अनुवाद करें -

(क) एक कौआ भूखा था।

(ख) उसने एक रोटी पायी।

(ग) कौआ पेड़ की डाल पर बैठा था।

(घ) शृगाली बोली-तुम बहुत सुन्दर हो।

शिक्षण-संकेत

कौवे एवं लोमड़ी की कथा को अपने शब्दों में लिखने का अवसर दें।

"अतिथि देवो भव।"

तृतीयः पाठः

प्रहेलिकाः

तिश्ठति रविणा साकम्, गच्छति रविणा सह ।

अन्धकारस्य यः शत्रु कः स सर्वप्रकाशकः ।।1।।

पादैः पिबामि खादामि, दूशितं पवनं सदा ।

तिश्ठामि सुस्थिरो भूमौ, न च गच्छामि कुत्रचित् ।।2।।

आलयोऽस्मि हिमस्याहम् , तिश्ठामि धनिनां गृहे ।

न चाहं पर्वतः कोऽपि न गिरेः षिखरं तथा ।।3।।

विविधानि तु रूपाणि दर्षयामि प्रतिक्षणम् ।

वदामि विविधाः वार्ताः नास्ति यद्यपि मे मुखम् ।।4।।

गच्छामि सहसाऽऽयामि सालोकं च करोम्यहम् ।

चालयामि च यन्त्राणि,विना हस्तं विना तनुम् ।।5।।

दूरदर्शनम् फ्रीजयन्त्रम पादपः (वृक्षः) विद्य्ुत् आतपः(धर्मः)

शब्दार्थ

साकम्=साथ। **सर्वप्रकाषकः**=सबको प्रकाषित करने वाला। **शिखरम्**=चोटी। **विविधानि**=अनेक प्रकार के। **वार्ताः**=बातें, समाचार। **सालोकम्**=आलोक सहित, प्रकाषित (को)। **तनुम्**=षरीर के ।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

रविणा सर्वप्रकाशकः सुस्थिरः

हिमस्याहम् करोम्यहम् सहसाऽऽयामि

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) रविणा सह कः गच्छति तिश्ठति च ?

(ख) वृक्षः केन जलं पिबति ?

(ग) कः विविधानि रूपाणि प्रतिक्षणं दर्षयति ?

3. सह, साकम्, समम्, सार्धम् के योग में तृतीया विभक्ति होती है, जैसे -

बालिका मात्रा सह गृहं गच्छति। इसी प्रकार निम्नांकित तृतीया विभक्ति युक्त पदों से दो-दो वाक्य बनाइए-

पित्रा सह .... ।

.... ।

मित्रैः सह .... ।

.... ।

अध्यापकेन सह.. ।

.... ।

सख्या सह .... ।

.... ।

4. नीचे दिये गये पदों को चुनकर वाक्यों को पूरा कीजिए-

खादन्ति दर्शयति कार्याणि शत्रुः

(क) प्रकाशः अन्धकारस्य .... अस्ति।

(ख) वृक्षाः दूषितं पवनम् ....।

(ग) दूरदर्शनम् विविधानि रूपाणि................।

(घ) विद्युत्-यन्त्रैः अस्माकं बहवः ....सम्भवन्ति।

5. इस पाठ में आये हुए लट्लकार के रूपों को छाँटकर लिखें ।

शिक्षण-संकेत

(क) बच्चों से इन पहेलियों का अर्थ अपने मित्रों से पूछने को कहें।

(ख) अन्य पहेलियों का संग्रह कराएँ।

“ज्ञानं भारः क्रियां विना।”

चतुर्थः पाठः

बालकः ध्रुवः

अयं बालकः ध्रुवः अस्ति | अस्य जनकः महाराजः उत्तानपादः आसीत् | तस्य धर्मपत्नी सुनीतिः रूपवती गुणवती पतिव्रता च नारी आसीत् | सर्वसुखसंपन्नः अपि राजा संततिविहीनः तदर्थं चिंतातुरः अभवत् | मतिमती सुनीतिः द्वितीयं विवाहं कर्तुं तम् अकथयत् |

तस्याः विशेषाग्रहेण राजा द्वितीयं विवाहं सुरुच्या सह अकरोत् | सुरुचिः रूपवती परं कुटिलहृदया आसीत् | विवाहात् परं तस्याः एकः पुत्रः अभवत् | राजा तस्य 'उत्तमः' इति नाम अकरोत् | कालान्तरे सुनीतिः अपि एकं पुत्रम् अजन्यत् | यस्य नाम ध्रुवः आसीत् |

एकदा नृपः उत्तमम् अंके कृत्वा अलालयत् | तदानीम् एव पंचवर्षीयः बालकः ध्रुवः तत्रागच्छत् | सः अपि नृपस्य अंके उपवेशनाय अवान्छत, किन्तु नृपः तं नोपावेशयत् | तदा तत्रोप्विष्टा विमाता सुरुचिः ध्रुवम् अवदत् - "त्वम् तपोबलेन यदा मम कुक्षौ जन्म ग्रहीष्यसि तदा राजांके उपवेशनयोग्यः भविष्यसि" इति | तया अपमानितः ध्रुवः तत् सर्वं स्वमातरम् अकथयत् अपृच्छत् च - "राजसिंहासनात् अपि उच्चस्थानं किम् ? अहं तदेव प्राप्तुं प्रयतिष्ये |" चकिता माता अब्रवीत् - "भगवान् एव तत्स्थानं दातुं समर्थः, त्वं तमेव भज |" मातुः आज्ञया ध्रुवः वनमगच्छत् | तत्र मार्गे नारदः तम् अमिलत् | ततः नारदस्योपदेशेन सः स्वलक्ष्यप्राप्तौ सफलः अभवत् | अद्यापि आकाशे ध्रुवः 'ध्रुवतारा' इति नाम्ना उच्चैः स्थितः अस्ति| धन्योऽयं देशः, यत्र ईदृशः बालकः अभवत् |

शब्दार्थ

जनकः = पिता | **संततिविहीनः** = संतानहीन | **मतिमती** = बुद्धिमती | **कुटिलहृदया** = कपटपूर्ण हृदय वाली | **परं** = बाद में | **कालान्तरे** = कुछ समय बाद | **अंके कृत्वा** = गोद में रखकर | **अलालयत्** = खिला रहे थे | **तदानीम्** = उसी समय | **उपावेशयत्** = बैठाया | **विमाता** = सौतेली माता | **कुक्षौ** = कोख में | **प्रयतिष्ये** = प्रयास करूंगा | **ईदृशः** = ऐसा |

अभ्यास

1. उच्चारण करें -

पतिव्रता कुक्षौ लक्ष्यप्राप्तौ नोपावेशयत् नारदस्योपदेशेन अब्रवीत् धन्योऽयं ईदृशः

2. एक पद मंे उत्तर दें-

(क) ध्रुवस्य जनकः कः आसीत् ?

(ख) मातुः आज्ञया ध्रुवः किम् अकरोत् ?

(ग) कस्य उपदेशेन ध्रुवः स्वलक्ष्यं प्राप्तवान् ?

(घ) धुवं्र मार्गे कः अमिलत् ?

3. किसने कहा लिखिए-

(क) राजसिंहासनात् अपि उच्चस्थानं किम् ?

(ख) भगवान् एव तत्स्थानं दातुं समर्थः।

(ग) यदा मम कुक्षौ जन्म ग्रहीष्यसि तदा उपवेशनयोग्यः भविष्यसि।

4. अधोलिखित पदों में उपसर्ग छाँटिए-

उपवेशनाय   अपमानितः   उपदेशेन   प्राप्तुम्

5. विशेषण-विशेष्य का सही मिलान करें-

‘क’	‘ख’
बालकः	उत्तानपादः
महाराजः	सुरुचिः
मतिमती	ध्रुवः
कुटिलहृदया	सुनीतिः

6. विलोम-पदों का मिलान करें-

‘क’	‘ख’
उच्चैः	पातालम्
आकाशः	नीच्चैः
सरला	अपमानितः
सम्मानितः	कुटिला

7. अधोलिखित वाक्यों की सहायता से सही घटना क्रम बनाएँ-

(क) एकः उत्तानपाद-नामकः राजा आसीत्।

(ख) मातुः आज्ञया ध्रुवः वनम् अगच्छत्।

(ग) एकदा ध्रुवः स्व-विमात्रा अपमानितो जातः।

(घ) नारदस्य उपदेशेन सः स्वलक्ष्यप्राप्तौ सफलः अभवत्।

(ङ) तया अपमानितः ध्रुवः तत्सर्वं स्वमातरम् अकथयत्।

(च) तस्य सुरुचिः सुनीतिः इति द्वे स्त्रियौ स्तः।

(छ) सुनीतेः पुत्रः ध्रुवः आसीत्।

पञ्चमः पाठः

544E6W

प्रार्थनापत्रम्

सेवायाम्

प्रधानाध्यापकः

पूर्व-माध्यमिक-विद्यालयः

आगरा

श्रीमन्!

सविनयं निवेदये यत् मम ज्येष्ठ-भ्रातुः श्रीजगदीशस्य विवाहः 27.04.2008 दिनांङ्के भविष्यति। वरयात्रा च मेरठनगरं गमिष्यति। ममापि तत्र गमनमावष्यकम्। अतः अहम् पञ्च दिवसानाम् अवकाशं याचे।

अतः प्रार्थना अस्ति यत् 25.04.2008 दिनाङ्कतः 29.04.2008 दिनाङ्कं यावत् अवकाश-प्रदानस्य कृपां करोतु।

प्रार्थी-

कामेशः

कक्षा- 7

दिनाङ्कः 24.4.2008

शब्दार्थ

ज्येष्ठ-भ्रातुः = बड़े भाई का। **भविष्यति** = होगा। **गमिष्यति** = जायेगी। **गमनम्** = जाना। **दिनाङ्कतः** = दिनांङ्क से। **अवकाश-प्रदानस्य** = छुट्टी देने की।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

प्रार्थना विवाहः श्रीजगदीशस्य दिनाङ्कतः गमनमावश्यकम् दिवसानाम्

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) इदं पत्रं कः अलिखत् ?

(ख) कस्य विवाहस्य आयोजनम् अस्ति ?

(ग) वरयात्रा कुत्र गच्छति ?

(घ) कामेशः किम् इच्छति ?

3. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करें-

पद सन्धि-विच्छेद

विद्यालयः = ... + ...

ममापि = ... + ...

कामेशः = ... + ...

4. निम्नलिखित पदों में विभक्ति एवं वचन बतायें - पद विभक्ति वचन

सेवायाम् ....

भ्रातुः ....

जगदीशस्य ....

5. निम्नलिखित पदों का प्रयोग करते हुए संस्कृत में दो-दो वाक्य बनाइए-

पद वाक्य

सविनयम् ....

....

अवकाशम् ....

....

कुशलम् ....

....

निवेदनम् ....

....

6. 'अस्माकं कक्षायां कः अध्यापकः किं पाठयति'- इस विषय को लेकर एक पत्र पिता जी को संस्कृत में लिखें।

शिक्षण-संकेत

बच्चों को संस्कृत में पत्र लिखने का अभ्यास करायें।

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।

षष्ठः पाठः

54DA8J

गीतामृतम्

यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत् तदेवेतरो जनः ।

स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।।1।।

च×चलं हि मनः कृष्ण!, प्रमाथि बलवद्दृढम् ।

तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ।।2।।

काम एष क्रोध एश रजोगुणसमुद्भवः ।

महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ।।3।।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।

कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत् ।।4।।

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।5।।

शब्दार्थ

इतरः=दूसरा। **अनुवर्तते**=अनुकरण करते हैं। **प्रमाथि**=मन्थन करने वाला। **निग्रहम्**=नियन्त्रण। **सुदुष्करम्**=कठिन। **रजोगुणसमुद्भवः**=रजोगुण से उत्पन्न। **महाशनः**=बहुत अधिक भोजन करने वाला। **महापाप्मा**=महान् पाप वाला (पाप करने वाला)। **विद्ध्येनमिह**= (विद्धि + एनम् + इह) यहाँ, इसे जानो। **मा शुचः**=शोक मत करो।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

श्रेष्ठस्तत् तदेवेतरः लोभस्तस्मादेतत्

प्रमाथि बलवद्दृढम् नाशनमात्मनः

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) लोकः किम् अनुवर्तते ?

(ख) कस्य निग्रहः सुदुष्करः ?

(ग) कामः क्रोधस्तथा लोभः कस्य द्वारम् ?

(घ) अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि" इति कः अकथयत् ?

3. मंजूषा से उचित पदों को चुनकर वाक्य पूरा करें-

नरकस्य चंचलम् शरणम् इतरः

(क) श्रेष्ठः जनः यथा आचरति तथैव .... जनः आचरति।

(ख) हे कृष्ण ! मनः .... भवति।

(ग) कामः क्रोधः लोभः च त्रिविधम् .... द्वारम् अस्ति।

(घ) कृष्णः अवदत्- हे अर्जुन ! मामेकम् .... व्रज।

शिक्षण-संकेत

1. श्रीमद्भगवद्गीता के इन श्लोकों का सामूहिक सस्वर पाठ कराएँ।

2. रणभूमि में अर्जुन को कृष्ण द्वारा दिये गये उपदेश सम्बन्धी प्रसंग की चर्चा कराएँ।

अतिपरिचयाद् अवज्ञा।

सप्तमः पाठः

ईश्वरचन्द्रो विद्यासागरः

एकोनविंशख्रिष्ट-शताब्दयां बङ्गप्रान्ते ये विद्वान्सः समाजसंस्कारकाःअभवन् तेषु ईश्वरचन्द्रः विद्यासागरः एकतमः आसित् । सः महता श्रमेण विद्याध्ययनम् अकरोत्। तस्य अगाधं वैदुष्यं दृष्ट्वा जनाः यथा नाम तथा गुणः इति सूक्तेः सार्थकताम् अनुभवन्ति स्म । सः अतीव सरलः उदारहृदयः च आसीत्। सः निर्बलानां दीनजनानां च सदैव साहाय्यं करोति स्म।

विद्यासागरस्य यशः श्रुत्वा एकदा कश्चित् धनिकः युवकः तस्य दर्शनाय प्रस्थितवान। ततः पूर्वंसः कदापि विद्यासागरं नापश्यत। रेलयानाद् अवतीर्य सः स्व-पेटिका-वहनाय भारिक ! भारिक !! इति उच्चैः शब्दम् अकरोत्, किन्तु कोऽपि भारिकः न आगतः। एतद् दृष्ट्वा तत्र स्थितः विद्यासागरः तम् उपगतः। सः धनिकः विद्यासागरं भरिकम् इति मन्यमानः तम् अवदत् -'इमां पेटिकां नय। मां विद्यासागरस्य गृहं पापय। ' विद्यासागरः तस्य पेटिका करे कृत्वा तेन सह स्वगृहं प्राप्तवान् । तत्र 'अयम् एव विद्यासागरः' इति विज्ञाय सः युवकः भृशं लज्जितः विस्मितः च अभवत्। 'छमस्व माम्' - इति उक्त्वाः सः तस्य पादयोः अपतत् । विद्यासागरः तम् अवदत् -'स्वीयं कार्य स्वयम् एव कुरु। तत्र लज्जां मा कुरु।'

एषः महाशयः भारतीयसंस्कृत्या सह पाश्चात्यसंस्कृतेः अपि समर्थकः आसीत्। 'संस्कृत कस्यचिद् वर्गविशेषस्य भाषा नास्ति। सर्वेसंस्कृतं पठन्तु '- इति तस्य सुस्पष्टः विचारः आसीत्। नारीशिक्षायै तेन कृताः प्रयासाः अतिशयम् अभिनन्दनीयाः सन्ति। विधवा-विवाहस्य प्रवर्तनाय तेन 1855 तमे ख्रिष्टाब्दे जनान्दोलनं कृतम । बाल-विवाहस्य

बहुविवाह- प्रथायाः च प्रबलविरोधाना तेन अन्यानि अपि बहूनि प्रश्नसनीयानि कार्याणि कृतानि।

शब्दार्थ

महताश्रमेण = बहुत मेहनत से | विद्याध्ययनम् = पढ़ाई | अकरोत् = किया | सार्थकताम् = सत्यता, चरितार्थता | निर्बलानां = कमजोरों का |दीनजनानां = गरीब लोगों का | भारिकः =कुली, बोझ उठाने वाला। उच्चैः=जोर से। शब्दम् अकरोत्=आवाज लगायी। दृष्ट्वा=देखकर। उपगतः =पास पहुँचा। मन्यमानः=मानता हुआ, समझता हुआ। प्रापय=पहुँचाओ। करे कृत्वा=हाथ में लेकर। विज्ञाय=जानकर। भृशम्=बहुत अधिक। विस्मितः=चकित हुआ। क्षमस्व=क्षमा कीजिए। माम्=मुझको। उक्त्वा=कहकर। पादयोः=पैरों पर (में)। अपतत्=गिर पड़ा। कुरु=करो। अभिनन्दनीयाः= प्रषंसनीय। प्रवर्तनाय=प्रारम्भ करने के लिए। जनान्दोलनम्=सामूहिक अभियान।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

एकोनविंशख्रिश्टे षताब्द्याम् विद्याध्ययनम् जनान्दोलनम्

पाश्चात्यसंस्कृतेः नारीशिक्षायै अभिनन्दनीयाः प्रवर्तनाय

प्रशंसनीयानि

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) विद्यासागरः कीदृशः आसीत् ?

(ख) कः भारिक ! भारिक ! इति उच्चैः षब्दम् अकरोत् ?

(ग) विधवाविवाह प्रवर्तनाय जनान्दोलनं केन कृतम् ?

(घ) धनिक मूषकः कस्य दर्शनाय प्रस्थितवान्।

3. इस पाठ का सारांश हिन्दी में लिखिए।

4. निम्नलिखित पदों में विभक्ति एवं वचन बताएं- पद विभक्ति वचन

श्रमेण = ...

निर्बलानाम् = ...

युवा = ...

नारीषिक्षायै = ...

प्रवर्तनाय = ...

वर्गविशेषस्य = ...

5. पाठ से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें -

(क) सः ....विद्याध्ययनम् अकरोत्।

(ख) सः ....कदापि नापष्यत्।

(ग) मां .... गृहं प्रापय।

(घ) सर्वे.............. ....पठन्तु।

(ड़.) स्वीयं कार्य ....एव कुरु।

6. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत मंे अनुवाद करें -

(क) वे उच्चकोटि के विद्वान थे।

(ख) उनका व्यवहार सरल था।

(ग) अपना काम स्वयं करना चाहिए।

(घ) विद्यासागर उनका बोझ लेकर घर गये।

(ङ.) विद्यासागर बंग प्रान्त के समाज सुधारक थे।

(च) संस्कृत किसी वर्ग विशेष की भाषा नहीं है।

शिक्षण-संकेत

रेलवे स्टेशन पर कुली की जगह ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा स्वयं यात्री का सामान उठाकर चलने वाले प्रसंग पर चर्चा कराएँ।

साहसे श्रीः वसति।

परिशिष्टम्

स्वर-सन्धि

(दीर्घ-सन्धि)

मत + अनुसारम् = मतानुसारम् अ + अ = आ

रत्न + आकरः = रत्नाकरः अ + आ = आ

विद्या + अर्थीः = विद्यार्थीः आ + अ = आ

विद्या + आलयः = विद्यालयः आ + आ = आ

1. ऊपर लिखे पहले शब्द में 'अ' , 'अ' मिलकर 'आ' हो गया है। दूसरे शब्द में 'अ' , 'आ' मिलकर 'आ' हुआ है तथा तीसरे में 'आ' , 'अ' मिलकर 'आ' हुआ है और चैथे में 'आ' , 'आ' मिलकर 'आ' हुआ है। 'अ' और 'आ' एक ही स्वर के ह्रस्व और दीर्घ रूप हैं। इनमें से किसी के भी पास-पास आने पर दोनों के स्थान पर इनका दीर्घ रूप अर्थात् 'आ' हो जाता है। इस प्रकार की सन्धि को 'दीर्घ स्वर-सन्धि' कहते हैं। संस्कृत में इसको 'अकः सवर्णे दीर्घः'' 'सूत्र' से निरूपित करते हैं।

2. जिस प्रकार 'अ' और 'आ' एक ही स्वर के ह्रस्व और दीर्घ रूप हैं, उसी प्रकार इ, ई, तथा उ और ऊ भी एक ही स्वर के ह्रस्व और दीर्घ रूप हैं। यौगिक शब्दों में इनके भी ह्रस्व या दीर्घ रूपों के पास-पास आने पर दोनों के स्थान पर उनका ही दीर्घ रूप हो जाता है, जैसे-

गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः इ + इ = ई

गिरि + ईशः = गिरीशः इ + ई = ई

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः ई + इ = ई

नदी + ईशः = नदीशः ई + ई = ई

3. जब ह्रस्व या दीर्घ उ, ऊ के बाद ह्रस्व या दीर्घ उ, ऊ आये तो दोनों के स्थान पर दीर्घ 'ऊ' हो जाता है, जैसे-

विधु + उदयः = विधूदयः उ + उ = ऊ

लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः उ + ऊ = ऊ

वधू + उत्सवः = वधूत्सवः ऊ + उ = ऊ

भू + ऊर्ध्वः = भूर्ध्वः ऊ + ऊ = ऊ

गुण-सन्धि

देव + इन्द्रः = देवेन्द्रः अ + इ = ए

सुर + ईषः = सुरेषः अ + ई = ए

गङ्गा + ईशः = गङ्गेशः आ + ई = ए

वसन्त + उत्सवः = वसन्तोत्सवः अ + उ = ओ

गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम् आ + उ = ओ

महा + ऋशिः = महर्शिः आ + ऋ = अर्

वृद्धि-सन्धिः

सदा + एव = सदैव आ + ए = ऐ

जन + ऐक्यम् = जनैक्यम् अ + ऐ = ऐ

जल + ओकसः = जलौकसः अ + ओ = औ

गङ्गा + ओघः = गङ्गौघः आ + ओ = औ

महा + औषधम् = महौषधम् आ + औ = औ

उक्त उदाहरणों से यह ज्ञात होता है कि 'अ' या 'आ' के बाद जब 'ए' या 'ऐ' आये तब दोनों के स्थान पर 'ऐ' हो जाता हंै जब 'ओ' या 'औ' आये तो दोनों के स्थान पर ''औ'' हो जाता है। इस प्रकार की स्वर सन्धि को ''वृद्धि सन्धि'' कहते हैं। इसका सूत्र 'वृद्धिरेचि'है।

यण्-सन्धि

अति + अन्तम् = अत्यन्तम् इ + अ = य्

मधु + अरिः = मध्वरिः उ + अ = व् पितृ + आकृतिः = पित्राकृतिः ऋ + आ = र्

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, ई, उ, ऊ, ऋ, या लृ के बाद कोई असमान स्वर आता है तो इनके स्थान पर क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है। इसको 'यण्' सन्धि कहते हैं। इसका सूत्र है - ''इकोयणचि'' अर्थात् इक् (इ,उ,ऋ,लृ) को यण् (य,व,र,ल) हो जाता है, असमान अच् (अ,इ,उ,ऋ,लृ,ए,ओ,ऐ,औ) के परे रहते।

पूर्वरूप सन्धि

हरे + अव = हरेऽव ए + अ = ए (ऽ)

वने + अत्र = वनेऽत्र ए + अ = ए (ऽ)

बालो + अवदत् = बालोऽवदत् ओ + अ = ओ (ऽ)

लभे + अहम् = लभेऽहम् ए + अ = ए (ऽ)

विष्णो + अव = विष्णोऽव ओ + अ = ओ (ऽ)

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि यदि ए अथवा ओ के बाद अ आये तो दोनों के स्थान पर क्रमशः ए अथवा ओ हो जाता है और वहाँ पूर्वरूप-सूचक अवग्रह (ऽ) का चिह्न

लग जाता है,। इस प्रकार की स्वर सन्धि को पूर्वरूप सन्धि कहते हैं। इसका सूत्र 'एड.ः पदान्तादति' है।

अयादि सन्धि

1 ने + अयनम् = न् + अय् + अनम् = नयनम्

जे + अः = ज् + अय् + अः = जयः

2 पो + अनः = प् + अव् + अनः = पवनः

भो + अनम् = भ् + अव् + अनम् = भवनम्

भो + अति = भ् + अव् + अति = भवति

3 गै + अकः = ग् + आय् + अकः = गायकः

नै + अकः = न् + आय् + अकः = नायकः

4 पौ + अकः = प् + आव् + अकः = पावकः

नौ + इकः = न् + आव् + इकः = नाविकः

भौ + उकः = भ् + आव् + उकः = भावुकः

उपर्युक्त उदाहरणों को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि यदि ए, ओ, ऐ, औ के बाद कोई स्वर आये तो क्रमशः ए का अय् (उदा0 1), ओ को अव् (उदा0 2), ऐ को आय् (उदा0 3) तथा औ का आव् (उदा0 4) हो जाता है। इस प्रकार की सन्धि को अयादि सन्धि कहते हैं। इसका सूत्र 'एचोऽयवायावः' है।

शब्द-रूप

इकारान्त पंुल्लिङ्ग शब्द

हरि

हरिः हरी हरयः

हरिम् हरी हरीन्

हरिणा हरिभ्याम् हरिभिः

हरये हरिभ्याम् हरिभ्यः

हरेः हरिभ्याम् हरिभ्यः

हरेः हर्योः हरीणाम्

हरौ हर्योः हरिषु

हे हरे! हे हरौ! हे हरयः!

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

नदी (सरिता)

नदी नद्यौ नद्यः

नदीम् नद्यौ नदीः

नद्या नदीभ्याम् नदीभिः

नद्यै नदीभ्याम् नदीभ्यः

नद्याः नदीभ्याम् नदीभ्यः

नद्याः नद्योः नदीनाम्

नद्याम् नद्योः नदीषु

हे नदि! हे नद्यौ! हे नद्यः!

इसी प्रकार पार्वती, गौरी, देवी, कौमुदी आदि का भी रूप चलता है।

उकारान्त पंुल्लिङ्ग शब्द

गुरु

गुरुः गुरू गुरवः

गुरुम् गुरू गुरून्

गुरुणा गुरुभ्याम् गुरुभिः

गुरवे गुरुभ्याम् गुरुभ्यः

गुरोः गुरुभ्याम् गुरुभ्यः

गुरोः गुर्वोः गुरूणाम्

गुरौ गुर्वोः गुरुशु

हे गुरो! हे गुरू! हे गुरवः!

धातु-रूप

पृच्छ् (पूछना)

लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्र. पु. पृच्छति पृच्छतः पृच्छन्ति

म. पु. पृच्छसि पृच्छथः पृच्छथ

उ.पु. पृच्छामि पृच्छावः पृच्छामः